30.00

Oct 2012

मरयम

क्या हिजाब बंदिश है?

वसिय्यत

शादी की तैयारी

आपकी खुश-अख़लाक़ी और आपके बच्चे

गॉड पार्टिकिल

गालियां

मेह्र और नफ़्क़ा

ख़ुदकुशी

Eid-ul-Azha Mubarak

Turn Page for Gift Coupon 27

मरयम

का एक साल पूरा होने के मौक़े पर हम अपने
सब्सक्राइबर्स के लिए लेकर आए हैं

ख़ुशियों की सौग़ात

और शुरू कर रहे हैं

एक स्कीम जिसमें हर महीने 5 ख़ुशनसीबों को मिलेंगे ख़ूबसूरत ज्वैलरी सैट, घर के इस्तेमाल के सामान और भी बहुत कुछ...

बस पढ़ती रहिए मरयम मैगज़ीन और इंतेज़ार कीजिए अपनी बारी का।

**इस महीने जिन 5 ख़ुशनसीबों को
मरयम की तरफ़ से ख़ूबसूरत तोहफ़े दिये जा रहे हैं
उनके नाम यह हैं:**

Subscription ID: A-00555
Mr. Qayam Mehdi, Bika Pur

Subscription ID: A-00698
Mr. S. Azadar Husain, AMSIN

Subscription ID: A-00737
Ms. Nelofar, Bhopal

Subscription ID: A-00615
Mrs. Ahmadia Khatoon, JAYAS

Subscription ID: A-00739
Mr. Tasadduq Abbas, Bhopal

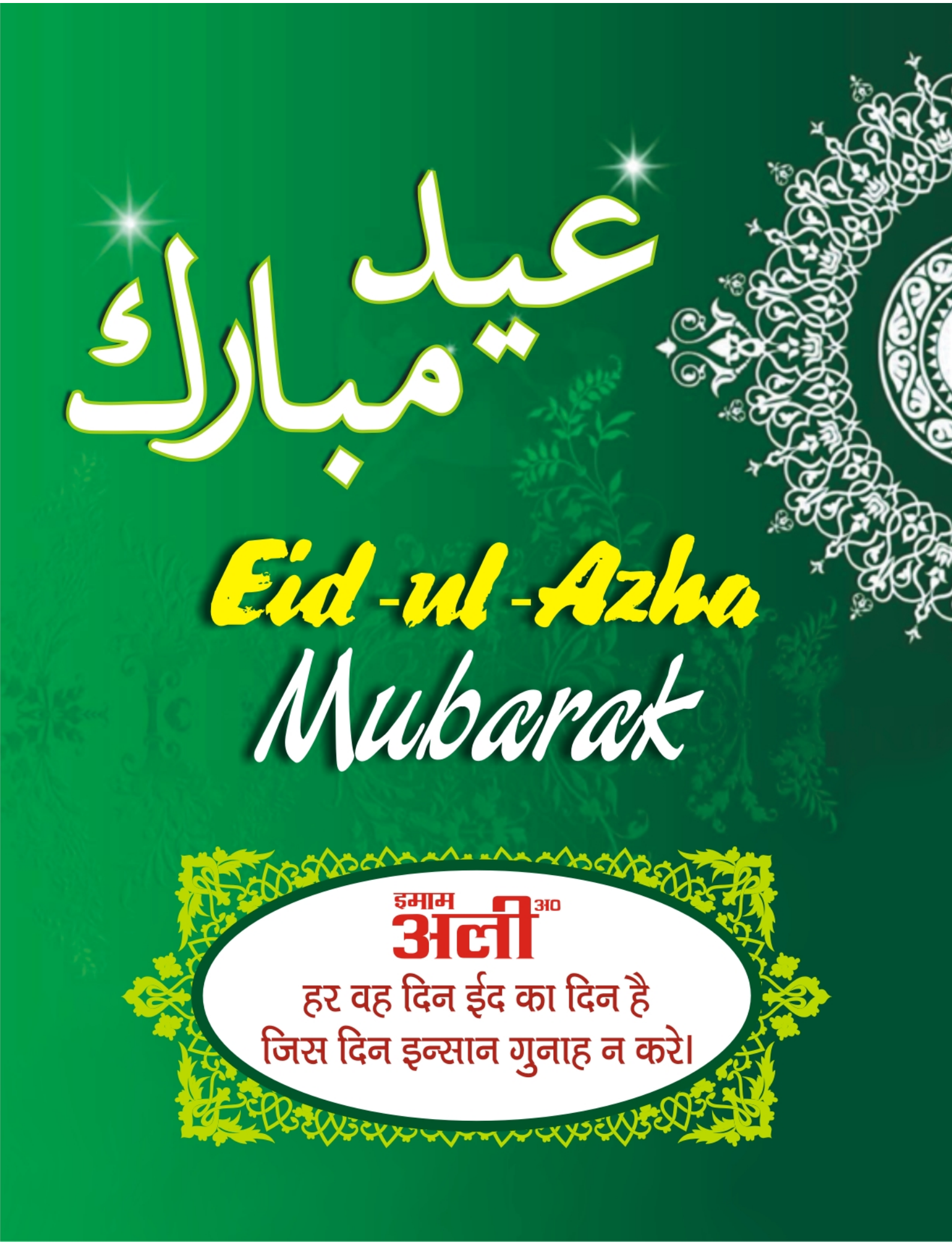
عيد مبارك
Eid-ul-Azha
Mubarak
इमाम अली अ0
हर वह दिन ईद का दिन है
जिस दिन इन्सान गुनाह न करे।

RNI No: UPHIN/2012/43577

Monthly Magazine

मरयम

Vol:1 | Issue: 8 | October 2012

Editor
Mohammad Hasan Naqvi

Editorial Board
Nazar Abbas Rizvi
M. Fayyaz Baqir
Akhtar Abbas Jaun
Qamar Mehdi
Ali Zafar Zaidi

Managing Editor
Abbas Asghar Shabrez

Executive Editor
Fasahat Husain

Assist. Exec. Editor
M. Aqeel Zaidi

Contributors
Imtiyaz Abbas Rizwan
Azmi Rizvi
Fatima Qummi
Qayam Abbas
Tauseef Qambar

Graphic Designer
Siraj Abidi
9839099435

Typist
S. Sufyan Ahmad

इस महीने आप पढ़ेंगी...

ज़ालिम के हाथ काट दो!	5
आपकी ख़ुशअख़लाकी और आपके बच्चे	6
शादी की तैयारी	9
मेह्र और नफ़्क़ा	10
बे-तक़्वा औरतों पर होने वाला अज़ाब	13
वसिय्यत	14
गॉड पार्टिकिल्स	16
तक़य्या	18
सूरए हम्द (तफ़्सीर)	22
ख़ुदकुशी	25
फ़ितरत का रास्ता	27
क्या हिजाब बंदिश है?	30
सच	32
शौहर की शिकायत	35
गालियां	36
साफ़्ट-वार	38

खुदा के नाम से

हदीस में है कि नमाज़, ज़कात, रोज़ा, हज और विलायत दीन की बुनियादें हैं। इस हदीस से अंदाज़ा हो सकता है कि हज कितनी अज़ीम और गहरी इबादत का नाम है। वरना दीन में दूसरी इतनी ज़्यादा चीज़ें हैं कि उन्हीं में से किसी को हज की जगह पर रखा जा सकता था लेकिन खुदा ने सब कुछ छोड़कर हज को चुना। वजह साफ़ है कि हज तौहीद का सबसे बड़ा सोर्स है, हज इंक़ेलाब है, हज तबदीली है, हज इंसान को इंसान बनाने का नाम है और हज एक अज़ीम इबादत है...हज वह खुदाई प्लेटफ़ार्म है जहां से सारी दुनिया को दीन का पैग़ाम सुनाया जा सकता है, जहां से मुसलमानों की छोटी-बड़ी सारी मुश्किलों का हल निकाला जा सकता है, जहां से सब को एक जुट किया जा सकता है और दुश्मन का मूंह तोड़ जवाब दिया जा सकता है और सबसे बढ़कर जहां से दुनिया वालों को अम्न का पैग़ाम दिया जा सकता है लेकिन...

आज जो सूरतेहाल है उस में हज सिर्फ़ एक इंडस्ट्री, तिजारत और बिज़नेस बन कर रह गया है। एक-एक पैसा जमा करके जाने वाले हाजियों को बस लूटा जाता है और हज के नाम पर सिर्फ़ कुछ इबादतों की छूट दी जाती है।

वैसे इसमें हम भी शामिल हैं क्योंकि हम ने भी हज जैसी अज़ीम इबादत को दूसरी तमाम रस्मों की तरह ही बस एक रस्म बना दिया है। होना तो यह चाहिए था कि जब हम हज करके वापस आते तो हम एक बदले हुए खुदाई इंसान होते लेकिन आमतौर पर होता यह है कि जब हम हज करके वापस होते हैं तो हमारे नाम के आगे 'हाजी' तो लग जाता है वरना हम जैसे जाते हैं वैसे ही वापस आ जाते हैं। अब ज़ाहिर है कि हज का यह तो क़तई कोई मक़सद नहीं था। हज का असली मक़सद वही है जो इमाम खुमैनी ने हमें बताया था और जिसको हम ने सुना ही नहीं कि हज एक ऐसी इबादत है जो खुदा की तरफ़ सफ़र है, जहां पहुंच कर इंसान तौहीद के आला मुक़ाम की सैर करके आता है और फिर एक सच्चा मुसलमान बन जाता है।

'मरयम' में छपे सभी लेखों पर संपादक की रज़ामंदी हो, यह ज़रूरी नही है।
'मरयम' में छपे किसी भी लेख पर आपत्ति होने पर उसके खिलाफ़ कारवाई सिर्फ़ लखनऊ कोर्ट में होगी और 'मरयम' में छपे लेख और तस्वीरें 'मरयम' की प्रॉपर्टी हैं।
इसका कोई भी लेख, लेख का अंश या तस्वीरें छापने से पहले 'मरयम' से लिखित इजाज़त लेना ज़रूरी है। 'मरयम' में छपे किसी भी कंटेंट के बारे में पूछताछ या किसी भी तरह की कारवाई प्रकाशन तिथी से 3 महीने के अंदर की जा सकती है। उसके बाद किसी भी तरह की पूछताछ और कारवाई पर हम जवाब देने के लिए मजबूर नहीं हैं।
संपादक 'मरयम' के लिए आने वाले कंटेंट्स मे ज़रुरत के हिसाब से तबदीली कर सकता है।

Printer & publisher S. Mohammad Hasan Naqvi printed at Imagine Grafix, 4-Valmiki Marg,Lalbagh, Lucknow and published from 234/22 Thawai Tola, Victoria Street, Chowk, Lucknow 226003 UP-India

Contact No.: +91-522-4009558, 9956620017, 9695269006
email: maryammonthly@gmail.com

ज़ालिम के हाथ काट दो!

एक बार फिर मुसलमानों के जज़्बात को ठेस पहुँची है। फिर दुनिया की सबसे बड़ी हस्ती, रसूले खुदा ﷺ की शान में गुस्ताख़ी हुई है। एक नीच इन्सान ने कुछ दूसरे नीच लोगों के साथ मिलकर एक फ़िल्म बनाई है जिसमें रसूल के कैरेक्टर को निशाना बनाया गया है। पूरी दुनिया इसके ख़िलाफ़ खड़ी है और सिर्फ़ मुसलमान ही नहीं बल्कि दूसरे मज़हब के लोग भी इस फ़िल्म के ख़िलाफ़ हैं। हमारी इंडियन गर्वनमेंट ने भी इस फ़िल्म के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाई है। दुनिया में कुछ जगहों पर मुसलमानों के गुस्से का फ़ायदा उठाकर कुछ शरारती लोगों ने तोड़-फोड़ और क़त्ल व ग़ारत भी की है।

मगर सवाल यह है कि इस्लाम की मुख़ालिफ़त में होने वाली यह हरकतें कब तक चलेंगी और उस पर होने वाले प्रोटेस्ट का तरीक़ा क्या होगा। यक़ीनन जब इस्लाम की तौहीन होगी तो मुसलमानों को गुस्सा भी आएगा और आना भी चाहिए मगर ऐसे तरीक़े जिनसे इस्लाम ने रोका है और ख़ुद इस्लाम के उसूलों के ख़िलाफ़ हैं उनसे बचना ज़रूरी है। इस्लाम सिर्फ़ सेल्फ़-डिफ़ेंस में किसी की जान लेने या नुक़सान पहुँचाने की इजाज़त देता है। जो भी इस्लाम के नाम पर तोड़-फ़ोड़, गुण्डागर्दी और क़त्लो ग़ारत करते हैं उनका इस्लाम से कोई ताल्लुक़ नहीं है। हमें चाहिए कि जब-जब इस्लाम की तौहीन हो तो हम इस्लाम के बारे में इतना कुछ कर दें कि तौहीन करने वाला भी हैरतज़दा रह जाए। तौहीन का जवाब तौहीन नहीं होती क्योंकि दुनिया, इस्लाम और मुसलमानों को उस आइने में देख रही है जिसमें उसको दिखाया जा रहा है। बिन लादेन, अल-क़ाएदा, तालिबान और भी न जाने कौन-कौन से लोग और आर्गेनाइज़ेशंस हैं जो इस्लाम के नाम को बदनाम करने के लिए इस्लाम के दुश्मनों की तरफ़ से खड़े किए गए हैं। आज दुनिया उन्हीं को इस्लाम का हीरो और लीडर समझ कर मुसलमानों से नफ़रत कर रही है जिसका रिज़ल्ट सामने है। एक ईरानी रिपोर्टर ने जब टेरी जॉन्स (उस पादरी से जिसने क़ुरआन को जलाने का एलान किया था और अब इस फ़िल्म का प्रोमोशन भी कर रहा है) से पूछा कि क्या तुम ने क़ुरआन पढ़ा है तो उसने कहा कि नहीं। रिपोर्टर ने कहा कि फिर क्यों तुम क़ुरआन जलाना चाहते हो तो उसने कहा कि मुसलमानों की हरकतों की वजह से मुझे इस्लाम से दुश्मनी है। रिपोर्टर ने पूछा कि क्या तुम बिन लादेन जैसे लोगों की हरकतों को देखकर इस्लाम से दुश्मनी रखते हो। उसने कहा कि हाँ!

दुनिया भी जानती है कि यह लम्बी-लम्बी दाढ़ी रखे हुए मुसलमानों की शक्ल में शैतान हैं जो इस्लाम को बदनाम कर रहे हैं और हम सबको इस बात से बचना है कि हमारी हरकतें इन से मेल न खाने लगें। हमें तो रसूल ﷺ की पैरवी करना है और रसूल का मज़हब अमन, शांति, भाईचारा और अहिंसा था। जब एक रास्ते से गुज़रते हुए एक बुढ़िया आप ﷺ पर रोज़ कूड़ा फेंकती थी तो आप चुपचाप सर झुकाकर आगे बढ़ जाते थे। एक दिन उसने कूड़ा नहीं फेंका तो हज़रत मोहम्मद ﷺ ने लोगों से पूछा कि बुढ़िया कहाँ गई? लोगों ने बताया कि उसकी तबीयत ख़राब है। रसूल ﷺ उसके घर गए। बुढ़िया घबराई मगर रसूल ﷺ ने उसे दिलासा दिया और कहा कि मैं तो तुम्हारी ख़ैरियत पूछने आया हूँ। सुना था कि तुम बीमार हो गई हो? रसूल ﷺ के इस अख़लाक़ का असर यह हुआ कि वह फ़ौरन मुसलमान हो गई।

हम भी इस फ़िल्म के ख़िलाफ़ हैं और इसके ख़िलाफ़ प्रोटेस्ट करना चाहते हैं और हर मुसलमान पर ज़रूरी है कि इस फ़िल्म और इस तरह की हर तौहीन के ख़िलाफ़ उठ खड़ा हो मगर इस तरह कि किसी को नुक़सान न पहुँचे और मुसलमानों को सिर्फ़ चीख़ने चिल्लाने और तोड़ फोड़ करने वालों के रूप में न पहचाना जाए। आज इस्लामी दुनिया को चाहिए कि हर फ़ील्ड में रसूल की शान और अज़मत को सामने लाने के लिए जो कुछ कर सकती हो, करे। मीडिया के ज़रिए फ़िल्म, सीरियल, डकुमेंट्री वग़ैरा बनाई जाएं, हर ज़बान में रसूल ﷺ पर किताबें लिखी जाएं। आर्ट, शायरी और मुख़्तलिफ़ फ़नों के माहिर लोग रसूल की ज़िंदगी को अपने फ़नों में उजागर किया जाए। रसूले खुदा हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा ﷺ की ज़ात को हर तरह से दुनिया के सामने पेश करें कि फिर कभी कोई रसूल ﷺ की तौहीन की हिम्मत न करे। यह एक बड़ी ख़िदमत भी होगी और सबसे बड़ा प्रोटेस्ट भी।

मरयम मैग्ज़ीन इस प्रोटेस्ट और एहतेजाज में शामिल है और हमारी टीम ने यह फ़ैसला किया है कि हम मरयम का जनवरी का इशू जिसमें रसूले खुदा ﷺ की विलादत भी है, रसूले इस्लाम स्पेशल के तौर पर पेश करेंगे ताकि रसूल की ज़ात, उनकी बुज़ुर्गी, अख़लाक़ और उनके अमन और शन्ति के पैग़ाम को दुनिया तक पहुँचाया जा सके।

आपकी ख़ुश-अख़्लाक़ी और आपके बच्चे

■ शाज़िया तबस्सुम

ऐसे माहौल में जहाँ हमेशा लड़ाई-झगड़े और उठा-पटक होती रहे वहाँ किसी को भी सुकून-चैन नसीब नहीं हो सकता। ऐसी फ़ैमिली की हालत और ख़राब अंजाम ज़ाहिर है। बीवी घर के माहौल और अपने शौहर की तेवरियां चढ़ी सूरत से परेशान हो जाएगी। वह औरत जो हमेशा अपने शौहर के बुरे अख़लाक़ का शिकार बनती रहे किस तरह ख़ुश रह सकती है और उससे अच्छी घरदारी और शौहरदारी की उम्मीद कैसे की जा सकती है?

सबसे बदतर और ख़तरनाक हालत तो उन मासूम बच्चों की होती है जो ऐसे घिनौने माहौल में परवरिश पाते हैं। माँ-बाप के आए दिन के लड़ाई झगड़ों से उनके मासूम दिल-दिमाग़ और रूह पर बहुत ख़राब असर पड़ता है। वह भी बड़े होकर चिड़चिड़े, ग़ुस्सावर, बदतमीज़ और कीनावर निकलते हैं। उनके चेहरों पर उदासी छाई रहती है। चूंकि उन्हें घर के माहौल और ज़िन्दगी में कोई ख़ुशी हासिल नहीं होती, इसलिए बस आवारागर्दी करते फिरते हैं। कुछ बच्चे और नौजवान समाज के बुरे लोगों के हत्थे चढ़ जाते हैं जो इसी तरह के बच्चों और नौजवानों को गुमराह करने की ताक में रहते हैं। यह बच्चे उनके जाल में फंस कर हमेशा के लिए अपनी ज़िंदगी ख़राब कर लेते है। इस बात का भी चाँस है कि वह ज़ेहनी परेशानियों में घिर जाएं और क़त्ल व ग़ारतगरी, चोरी या ख़ुदकशी जैसे ख़तरनाक काम भी कर डालें। इस बात का सबूत जराएम पेशा लोग ख़ासकर मुजरिम बच्चों की फ़ाइलों पर नज़र डालने से मिल सकता है। इस तरह के बच्चों के बारे में हर रोज़ अख़बार व मैगज़ीन्स के पन्नों में छपी ख़बरें इस बात की बेहतरीन गवाह हैं कि इन सारे मामलों के ज़िम्मेदार घर के बड़े लोग होते हैं जो अपने आप पर कंट्रोल नहीं कर पाते और घर में बद अख़्लाक़ी और बद मिज़ाजी करते हैं। ऐसे लोगों को इस दुनिया में भी कोई सुकून व आराम नहीं मिल पाता और उस दुनिया में भी ज़रूर इसकी सज़ा भुगतेंगे।

दुनिया का सिस्टम हमारे हाथ में नहीं है और रुकावटें, मुसीबतें, परेशानियां इस दुनिया का अटूट हिस्सा हैं जिन्हें इससे अलग नहीं किया जा सकता। हर इंसान को ज़िन्दगी में इन सब चीज़ों का सामना करना पड़ता है और इनका मुक़ाबला करने के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए। इंसान की परख ऐसे ही मौक़ों पर होती है। बिना चीख़े चिल्लाए बहादुरी के साथ इनका मुक़ाबला करना चाहिए और इनको हल करने के लिए ग़ौर करना चाहिए। इंसान इस बात की सलाहियत रखता है कि सैंकड़ों छोटी बड़ी मुश्किलों को हंसते-खेलते क़ुबूल करे और उसके माथे पर बल तक न आए।

परेशानियों की अस्ली वजह हमारे साथ होने वाले हादसे नहीं होते बल्कि यह ख़ुद हमारी कमज़ोरी है जो हम हर छोटी बड़ी बात का असर लेकर परेशानियों और घबराहट का शिकार हो जाते हैं। अगर इन हालात के मुक़ाबले में हम अपने ज़ेहन को क़ाबू में रखें और ख़ुद पर कंट्रोल रखें तो मुश्किल और परेशानी कोई मायने ही नही रखती।

हमारी ज़िन्दगी में जो बुरे हालात व वाक़ेए पेश आते हैं वह दो तरह के होते हैं: एक तो वह जो इस दुनिया का अटूट हिस्सा हैं और जिनसे बचने के लिए हमारी कोई भी कोशिश काम नहीं आती।

दूसरे वह हैं जिन्हें हम अपनी कोशिश से टाल सकते हैं। अगर हालात पहली क़िस्म से हों तो ज़ाहिर है कि झल्लाहट, गुस्सा और बदमिज़ाजी करना बेकार होगा। बल्कि यह काम सौ फ़ीसदी नासमझी है क्योंकि इसमें कोई चीज़ हमारे कंट्रोल में नहीं है। हम चाहें या न चाहें इस दुनिया में इन चीज़ों का सामने आना ज़रूरी है। बल्कि हमें इनके लिए तैयार रहना चाहिए। हाँ अगर यह दूसरी क़िस्म से हैं तो कोशिश और समझदारी से उनको हल करना चाहिए। अगर हम अपनी मुश्किलों का मुक़ाबला करने के लिए अपने आपको तैयार रखें, अपने ज़ेहन को कंट्रोल में रखें और सूझबूझ से काम लें तो बहुत सी मुश्किलें बड़ी आसानी से हल हो सकती हैं। ऐसी सूरत में गुस्सा और बद अख़्लाक़ी से न सिर्फ़ यह कि मुश्किलें हल नहीं हो सकेंगी बल्कि हो सकता है कि और बढ़ जाएं। इसलिए एक समझदार इंसान को चाहिए कि अपने होशो हवास और ज़ेहन को हमेशा क़ाबू में रखे और हालात की ऊंच-नीच से असर लेकर आपे से बाहर न हो जाए।

इंसान एक ताक़तवर मख़लूक़ है जो अपनी कोशिशों और अक़्लमंदी से बड़ी से बड़ी मुश्किल पर क़ाबू पा सकता है। क्या यह अफ़सोस की बात नहीं है कि छोटी-छोटी बातों और ज़िंदगी की ऊँच-नीच के मुक़ाबले में इंसान हिम्मत छोड़ बैठे और चीख़ना-चिल्लाना शुरू कर दे और अपने से कमज़ोरों पर अपना गुस्सा उतारे, उन पर चीख़े चिल्लाए?

सबसे बढ़ कर यह कि अगर बुरे हालात का आपको सामना करना पड़ रहा है तो इसमें आपकी बीवी बच्चों का क्या क़ुसूर है?आपकी बीवी सुबह से अब तक घर के कामों में बिज़ी रही है, खाना पकाने, कपड़े धोने, घर की सफ़ाई और बच्चों से निपटने जैसे कठिन कामों को किया है और थकी हारी आपके इंतिज़ार में है कि आप घर आएंगे और अपनी ख़ुश अख़्लाक़ी और मेहरबानी से उसके दिल को ख़ुश करके उसकी सारी थकावट दूर करेंगे।

आपके बच्चे भी सुबह से अब तक स्कूल में पढ़ाई में बिज़ी रहे हैं, उनका दिलो दिमाग़ भी थका हुआ है या दुकान या कारख़ाने में काम में बिज़ी रहे हैं और अब थके हारे घर लौटे हैं और अपने बाप से इस बात की उम्मीद रखते हैं कि आप अपनी मीठी-मीठी मुहब्बत व प्यार भरी बातों के ज़रिए उनकी थकन दूर कर देंगे। बाप की मुहब्बत उनमें एक नई रूह फूंक देगी और उन्हें फिर से फ़्रेश करके काम करने की नई उमंग दे देगी।

जी हाँ, आपके बच्चे दिल में सैंकड़ों उम्मीदें और आरज़ुएं लिए आपके इंतिज़ार में हैं। आप ख़ुद ग़ौर करें कि क्या यह ठीक है कि वह बेचारे आपकी तैवरियां चढ़ी हुई, गुस्से से लाल पीली सूरत का सामना करें?

नहीं! यह सब आपसे उम्मीद रखते हैं कि आप उनके लिए रहमत का फ़रिश्ता साबित होंगे। अपनी ख़ुश अख़्लाक़ी और खिलखिलाते हुए चेहरे के साथ घर के माहौल में चार-चाँद लगा देंगे और अपनी अच्छी और प्यारी बातों से उनके थके मांदे ज़ेहन को सुकून पहुंचाएंगे, न यह कि अपनी बद मिज़ाजी और बुरे बरताव से घर के माहौल को अंधेर कर देंगे और गुस्सा करके और डांट-डपट करके उनकी थकावट को और बढ़ा देंगे।

क्या आप दोनों, माँ-बाप जानते हैं कि नामुनासिब जुमलों और झिड़कियों से उनकी मासूम रूह व जिस्म पर कितना ख़राब असर पड़ता है? जिन के नतीजे आपको बाद में भुगतने पड़ेंगे। अगर आप को उन पर रहम नहीं आता तो कम से कम ख़ुद अपने आप पर रहम खाएं। अगर आप दोनों ख़ुद पर कंट्रोल नहीं करेंगे और छोटी-छोटी बातों पर गुस्सा करेंगे तो क्या आपका जिस्म और दिमाग़ सही रहेगा?

ऐसी हालत में आप किस तरह अपने रोज़ के कामों को लगन और अच्छाई के साथ कर सकते हैं और ज़िंदगी की मुश्किलों, परेशानियों और मुसीबतों पर क़ाबू पा सकते हैं? क्यों अपने घर को अपने बच्चों के सुकून व आराम की जगह को एक खौफ़नाक क़ैदखाना बनाने पर तुले हुए हैं। याद रखिए कि इस माहौल के ख़राब नतीजों के ज़िम्मेदार आप ख़ुद होंगे।

क्या यह ठीक नहीं होगा कि आप दोनों हमेशा ख़ुश और मुस्कुराते रहिए। अगर कोई मुश्किल आ पड़े तो गुस्से और चीख़े चिल्लाए बग़ैर अपनी सूझ-बूझ से काम लेकर सुकून के साथ उसको हल करने की सोचें?

क्या यह ठीक नहीं होगा कि जब आप थके हुए हों और फ़्रेश होने के लिए अपने घर में क़दम रखें तो अपने दिल में ख़ुद इस बात के बारे में सोचें कि गुस्सा और मूड ऑफ़ से कोई मुश्किल ख़त्म नहीं होगी बल्कि हालत और ज़्यादा ख़राब हो जाएगी बल्कि हो सकता है कि कई नई-नई मुश्किलें और पैदा हो जाएं। इसलिए बेहतर है कि थोड़ा आराम कर लें जिससे कि फिर से एनर्जी मिल जाए और उसके बाद फ़्रेश होकर इत्मिनान के साथ इस मुश्किल से निपटने की फ़िक्र करें।

थोड़ी देर के लिए ज़िंदगी की परेशानियों और बुरे हादसों को भूल जाइए और खुले दिल के साथ मुस्कुराते हुए घर में जाइए। मुहब्बत भरी बातों से सबके दिलों को ख़ुश कीजिए। इत्मिनान के साथ मज़े से बातें कीजिए, हंसिए हंसाइए, अच्छे माहौल में खाना खाइए और पुर सुकून ज़ेहन के साथ सो जाइए, आराम कीजिए, इस से आप अपने बीवी बच्चों के दिलों को और घर के माहौल को ख़ुश और पुर सुकून बना सकते हैं और उन्हें

अपने-अपने कामों में एक्टिव रहने के लिए तैयार कर सकते हैं और खुद भी पुर सुकून ज़ेहन के साथ अपनी ज़िम्मेदारियों को पूरा कर सकते हैं।

यही वजह है कि इस्लाम में अच्छे अख़्लाक़ को दीनदारी का हिस्सा और ईमान की निशानी कहा गया है।

रसूले खुदा[स॰] फ़रमाते हैं, "ईमान के ऐतबार से मुकम्मल इंसान वह है जो बहुत खुश अख़्लाक़ हो। तुम में से बेहतरीन इंसान वह है जो अपने घर वालों के साथ नेकी करे।"

रसूल[स॰] यह भी फ़रमाते हैं "अच्छे अख़्लाक़ से बेहतर कोई अमल नहीं है।"

इमाम जाफ़र सादिक़[अ॰] फ़रमाते हैं, "नेकियाँ और खुश मिज़ाजी घरों को आबाद और उम्र को लम्बा करती है।"

इमाम जाफ़र सादिक़[अ॰] यह भी फ़रमाते हैं, "बद अख़्लाक़ इंसान खुद को अज़ाब में घेर लेता है।"

हकीम लुक़मान का कहना है, "अक़्लमंद आदमी को चाहिए कि अपने घर वालों के बीच एक बच्चे की तरह रहे और अपनी मर्दानगी घर के बाहर दिखाए।"

रसूले खुदा[स॰] फ़रमाते हैं, "खुश अख़्लाक़ी से बढ़कर कोई ज़िंदगी नहीं।"

रसूल[स॰] का यह भी क़ौल है, "अच्छा अख़्लाक़, आधा दीन है।"

रसूले खुदा[स॰] के एक बड़े सहाबी साद बिन मआज़ का जब इन्तिक़ाल हुआ तो रसूले[स॰] ने ग़मगीन लोगों की तरह नंगे पैर उनके जनाज़े में शिरकत की। अपने हाथों से उनके जनाज़े को क़ब्र में उतारा और क़ब्र की मिट्टी बराबर की। साद की माँ जो रसूले खुदा[स॰] के इन सारे कामों को देख रही थीं, अपने बेटे साद से कहने लगीं, "ऐ साद! जन्नत मुबारक हो।"

रसूल[स॰] ने फ़रमाया कि ऐसा मत कहो क्योंकि साद को क़ब्र में सख़्त फ़िशार का सामना करना पड़ा है। लोगों ने वजह पूछी तो फ़रमाया कि उसकी वजह यह है कि वह अपने घर वालों के साथ बद अख़्लाक़ी से पेश आते थे। ●

> *इन्सान की सारी परेशानियां 2 वजहों से हैं*
>
> *1.वह तक़दीर से ज़्यादा और*
> *2.वक़्त से पहले चाहता है।*
>
> Aley Hashim Rizvi

एक सवाल

सवाल – मेरा एक सात साला लड़का है। उसने कहीं से कुछ गालियां और गंदे अलफ़ाज़ सीख लिए हैं। मैं और मेरे शौहर ने हर कोशिश करके देख ली। प्यार से, डांट से यहां तक कि मारा भी लेकिन उसकी यह आदत बढ़ती ही जा रही है।

खुदा के लिए! इसका कोई हल बताइए क्योंकि मोहल्ले और ख़ानदान में बहुत शर्मिंदगी उठाना पड़ती है।

जवाब – बच्चा आम तौर पर 5 से 12 साल की उम्र में कुछ ऐसे नाज़ेबा कलिमात अदा कर सकता है जो आपके लिए परेशानी की वजह बनते हैं। अब तक मासूम ज़बान बोलने वाला बच्चा इस तरह के अलफ़ाज़ अदा करे, यक़ीनन परेशान करने वाली बात है और उस पर गुस्सा आना एक आम सी बात है लेकिन हमारा मशवेरा है कि अगर आप अपने बच्चे का सुधार चाहती हैं तो जैसे ही यह अलफ़ाज़ सुनें उस पर किसी तरह का रिएक्शन ज़ाहिर न करें और बहुत प्यार से यह मालूम करने की कोशिश करें कि उसने यह अलफ़ाज़ कहा से और किससे सीखे हैं। जब यह मालूम कर लें तो बच्चे से उसकी अपनी मासूम ज़बान में उसकी समझ के मुताबिक़ यह बताएं कि इस तरह के अलफ़ाज़ बुरे लोगों की ज़बान पर आते हैं और अच्छे लोग कभी भी इन अलफ़ाज़ को अदा नहीं करते। इससे बच्चे को तीन फ़ायदे हासिल होंगे :–

1– उन अलफ़ाज़ की बुराई का पता होगा।

2– अपने अच्छे और शरीफ़ होने का एहसास होगा।

3– आप पर भरोसा बढ़ेगा और अगर आएंदा वह कभी भी यह महसूस करेगा कि यह अलफ़ाज़ ग़लत हैं तो आपसे आकर बयां करेगा।

लेकिन अगर इसके बरख़िलाफ़ आपने गुस्से में आकर डांटा या मारा तो बजाए फ़ायदे के नुक़सान ही होगा। कुछ बड़े नुक़सान यह हैं :–

1– आपने उसके ज़ेहन में इन अलफ़ाज़ की बुराई को नहीं बिठाया।

2– डांट या मार के ज़रिए खुद ही उसकी शख़्सियत को तोड़ दिया और अच्छे या शरीफ़ होने का एहसास दिलाने के बजाए अभी से उसे यक़ीन दिलाया कि वह बुरा है।

3– उस पर से आपका भरोसा उठ जाएगा। अब वह अपने आपको आपके सामने इस क़िस्म की बातें करने से रोकेगा जिसका रिज़ल्ट यह निकलेगा कि आपके सामने तो वह यह अलफ़ाज़ अदा नहीं करेगा लेकिन बाहर दूसरों के सामने बेधड़क बोलेगा।

अब आइए! उन मालूमात की तरफ़ जो आपने बच्चे से हासिल की हैं कि उसने यह अलफ़ाज़ कहां से सीखे हैं स्कूल या मोहल्ले के बच्चों से। अगर स्कूल में किसी क्लास फ़ेलो से सीखें हो तो क्लास टीचर को बताकर अपने बच्चे की क्लास या सीट चेंज करवा लें और अपने बच्चे को भी यह समझा दें कि ऐसे बच्चों के साथ दोस्ती खुद उनके लिए नुक़सानदेह है।

अगर मोहल्ले में किसी बच्चे से यह अलफ़ाज़ सीखे हों तो उसकी तफ़रीह और ख़ेल कूद का कोई और मुनासिब वक़्त तलाश कीजिए। अगर हो सके तो आप खुद उसके साथ खेलिए और उसको वक़्त दीजिए। आपका बच्चा क्योंकि लड़का है इसलिए बाप अगर उसे वक़्त दें तो यह उसकी परवरिश में बहुत असरदार साबित हो सकता है।

बुरे अलफ़ाज़ सीखने के और भी ज़रिए हो सकते हैं जैसे मीडिया ख़ास तौर पर ग़ैर मुल्की चैनल। अगर ऐसा हो तो उनसे छुटकारा हासिल करने के बारे में सोचें और उनकी जगह अच्छे कार्टून्ज़, मालूमाती फ़िल्में और ड्रामे वग़ैरा दिखाएं। ●

शादी की तैयारी

■ फ़ातिमा कुम्मी

शादी को जितना आसान इस्लाम ने बनाया है उतना ही हमारे समाज ने इसे सख़्त बना दिया है। काश कि हमारा समाज इसे आसान बनाने की कोशिश करता और इसमें मुश्किलें खड़ी करने से बचता। अपनी ताक़त और एबिलिटी के मुताबिक़ इसकी रस्मों को अदा करता ताकि लड़के-लड़कियां अपनी नेचुरल डिज़ायर्स खुशी-खुशी पूरी कर पाते। उन्हें अपनी तमन्नाओं का गला घोटना नहीं पड़ता। उनकी नेचुरल डिज़ायर्स जो कि ख़ुदा की एक बहुत बड़ी नेमत है, आज कुफ़्राने नेमत बनकर हमारे सामने न आती। पाकदामन और पाकीज़ा लोग गुनाहों से आलूदा न होते। इसलिए हमें चाहिए कि लड़के और लड़कियों की शादियों में आसानियां पैदा करें न कि सख़्तियां जिससे वह गुनाहों के दल-दल में धंसने से बच जाएं।

सबसे पहले मां-बाप और उन रिश्तेदारों के लिए जो शादी कराने में आगे-आगे रहते हैं, ज़रुरी है और उनका अख़लाक़ी फ़रीज़ा है कि अपने जवान बच्चों की शादी को आसान बनाएं, ग़लत रस्मों को तोड़ने की कोशिश करें, एक-दूसरे के सामने सख़्त शर्तें रखने से बचें और निकाह और दूसरे प्रोग्रामों में सख़्ती से काम न लें।

कभी-कभी मां-बाप अपने बच्चों का रिश्ता करने में इतनी ज़्यादा छानबीन करते हैं कि उनके बच्चों की शादी की सही उम्र ही निकल जाती है। उनके लिहाज़ से कभी अच्छा मैच नहीं मिलता, कभी रंग मैच नहीं करता, कभी ख़ानदान मैच नहीं करता, कभी स्टेंडर्ड मैच नहीं करता वग़ैरा...इस तरह हर रिश्ते में हज़ारों बुराईयां और कमियां निकालते रहते हैं और बड़ी आसानी से रिश्ते ठुकराते रहते हैं। उन्हें ऐसे रिश्ते की तलाश होती है जो उनकी उम्मीदों पर पूरी तरह खरा उतरे, चाहे इसके लिए उन्हें आधी से ज़्यादा उम्र तक इंतेज़ार करना पड़े। यह इंतेज़ार कभी-कभी इतना लम्बा हो जाता है कि उनकी बेटियां कुंआरी ही घर में बैठी रह जाती हैं। यह क्या है? क्या यह मां-बाप का प्यार है अपनी बेटियों के लिए? अगर यह लाड-प्यार है तो यह सब बेमायनी है क्योंकि इस सोच को न तो इस्लाम मानता है और न एक अच्छा समाज। दोनों लिहाज़ से इसमें बुराई ही छुपी हुई है। समाज को बुराईयों से बचाए रखने का बेहतरीन रास्ता यही है कि अपने बच्चे और बच्चियों की सही वक़्त पर शादी कर दी जाए। नहीं तो बुराईयां और फ़ितने फैलने का पूरा-पूरा ख़तरा है।

तीन तरह के लोग शादी में रुकावट पैदा करते हैं: 1- एक के बाद एक रिश्ता ठुकराने वाले, 2- ऐसे जवान लड़के और लड़कियां जो इस्लाम से दूर हैं, 3- ऐसे लोग जो जवानों की शादी के ख़र्चों को उठा तो सकते हैं लेकिन राहे ख़ुदा में ख़र्च करने में कंजूसी करते हैं।

बेशक जो लोग अपने लड़के-लड़कियों की ज़िंदगी के मामलों ख़ास कर शादी में आसानियां पैदा करते हैं ख़ुदा उनके लिए दुनिया और आख़िरत में ख़ासकर क़यामत के दिन हिसाब-किताब को आसान कर देगा। लेकिन जो मर्द और औरत सख़्ती बरतते हैं और हर चीज़ में कोई न कोई कमी निकालते रहते हैं या जिनकी वजह से लड़के-लड़कियां सेक्चुअल डिज़ायर्स की चक्की में पिसते हैं और साइकॉलॉजिकल मरीज़ भी हो जाते हैं, क़यामत में ऐसे मर्दों और औरतों का हिसाब बहुत सख़्त होगा।

रसूले इस्लाम फ़रमाते हैं, "जिसका बच्चा बालिग़ हो गया हो और बाप में उसकी शादी करने की ताक़त भी हो लेकिन वह उसकी शादी न करे और बेटा कोई गुनाह कर बैठे तो उसका गुनाह बाप के ज़िम्मे है।"

आज जबकि सारी दुनिया पर युरोपियन मीडिया जैसे शैतान की हुकूमत छाई हुई है, जो दूर रहकर भी हमारे घरों पर टीवी के ज़रिए हुकूमत कर रहा है, गंदी फ़िल्मों और बेहयाई भरे प्रोग्रामों के ज़रिए उसने पूरी दुनिया में तबाही मचा रखी है. ..ऐसे हालात में हमारी ज़िम्मेदारियां और ज़्यादा बढ़ गई हैं। हमें अपने फ़र्ज़ को पूरा करने में पीछे नहीं हटना चाहिए।

इसलिए शादी को आसान से आसान बनाएं ताकि कोई भी आसानी से शादी करके बुराईयों में पड़ने से बच सके। शादी को आसान बनाने का एक रास्ता यह है कि हम एक-दूसरे से फ़ालतू एक्सपेक्टेशंस न करें, सख़्त शर्तें न रखें जैसे लड़के वाले लड़की वालों से कहें कि हम इतने लोगों को ही लेकर आएंगे या हमें होटल ही में ठहराइए.. .यह और इस के अलावा बहुत सी चीज़ें जिनके ज़रिए ख़र्चों को कम करके शादी को आसान बनाया जा सकता है।

आज कल जहेज़ का मामला बहुत टेढ़ा हो गया है। इसलिए इन सब बातों का भी ख़्याल रखें ताकि शादी के बीच कोई रुकावट न आए। एक कामयाब ज़िंदगी की बुनियाद कामयाब हो जाए। शादी की सारी शुरुआतें जैसे मंगनी, मेहर, जश्न और रस्मो-रिवाज वग़ैरा के सिलसिले में भी सख़्ती से काम न लें और ऐसे प्रोग्रामों से परहेज़ करें जो दोनों फ़ैमलीज़ की ताक़त से बाहर हों।

शादी के लिए तैयारी

हदीसों में आया है कि जो शख़्स शादी करने का इरादा करे उसे चाहिए कि दो रकत नमाज़ पढ़े। क़ुरआन की तिलावत करे और फिर ख़ुदा से दुआ मांगे। यह दुआ हमारी किताबों में मौजूद हैं। ●

मेह्र और नफ़्क़ा

मेह्रः शादी के मौक़े पर मर्द "मेह्र" को क़ुबूल करे। और अपनी मिल्कियत, माल या जाएदाद में से कुछ रक़म लड़की के बाप या माँ को दे।

नफ़्क़ाः जब तक मियाँ-बीवी के ताल्लुक़ात बाक़ी रहें, शौहर, बीवी-बच्चों के सारे ख़र्चों को पूरा करे।

■ आयतुल्लाह शहीद मुतह्हरी

घरेलू रिश्तों के बारे में इन्सानों की यह पुरानी रस्म न जाने कब से चली आ रही है।

इस रस्म की बुनियाद क्या है?यह रस्म क्यों और कैसे शुरु हुई? यह मेह्र की रक़म क्या है? औरत को नफ़्क़ा देने का क्या मतलब है?

अगर मर्द-औरत, एक दूसरे के हक़ अदा कर रहे हों और उनमें इंसाफ़ के साथ एक अच्छा रिश्ता भी बरक़रार हो तो क्या तब भी मेह्र व नानो नफ़्क़ा देना ज़रूरी है? कहीं ऐसा तो नहीं कि मेह्र व नानो नफ़्क़ा उस ज़माने की यादगार हो जब बीवी शौहर की मिल्कियत हुआ करती थी?

बीसवीं सदी की आज़ादी, जस्टिस और ह्युमन राइट्स का मानना यह है कि मेह्र व नानो नफ़्क़ा का सिस्टम ख़त्म किया जाए। शादियाँ मेह्र के बिना हों, नफ़्क़े का मसला ख़त्म किया जाए, औरत ख़ुद अपनी माली ज़िम्मेदारियाँ बर्दाश्त करे और औलाद के मामलात में भी दोनों बराबर के शरीक हों।

हम मेह्र से बात शुरु करते हैं। देखते हैं कि मेह्र कैसे पैदा हुआ, इसका फ़लसफ़ा क्या है और स्कॉलर्स ने मेह्र की वजह क्या बयान की है?

मेह्र की हिस्ट्री

कहा जाता है: प्री-हिस्ट्री एज में इन्सान जंगली ज़िंदगी गुज़ारता था, क़बीलों में रहता था, और अपने ख़ूनी रिश्तों से शादी करना जाएज़ नहीं जानता था। शादी करने के लिए जवान दूसरे क़बीले से लड़की माँगने जाते थे। उन दिनों मर्द औलाद की पैदाइश में अपने रोल के बारे में नहीं जानता था। उसे पता नहीं था कि सेक्स, औलाद की पैदाइश का सबसे बड़ा ज़रिया है। इसलिए वह लोग औलाद को बीवी की औलाद समझते थे, अपनी औलाद नहीं। ख़ानदान, बाप के बजाए माँ के नाम से चलता था। उनके मुताबिक़ औलाद की पैदाइश में बाप का कोई हाथ नहीं होता था। शादी के बाद शौहर एक आम इन्सान की तरह बीवी के साथ उसी के क़बीले में रहता था और बीवी उसकी जिस्मानी ताक़त और साथ से फ़ाएदा उठाती थी। उस ज़माने को "माँ की हुकूमत" का दौर कहते हैं।

जल्दी ही मर्द को औलाद की पैदाइश में उसका हिस्सा मालूम हो गया। अब वह औलाद का असली मालिक बन गया और उसी वक़्त से उसने औरत को अपनी कनीज़ बना लिया और ख़ुद घर का मालिक बन गया। यहाँ से "बाप की हुकूमत" का दौर शुरु हो गया।

इस पीरियड में भी ख़ूनी रिश्तों से शादी जाएज़ नहीं थी। मर्द को दूसरे क़बीले में बीवी ढूँढना और फिर उसे अपने क़बीले में लाना पड़ता था। क़बीलों में आमतौर पर जंग रहती थी इसलिए लड़की को ले भागना पड़ता था यानी जो नौजवान लड़की, जिस लड़के को पसंद आती वह उसे उसके क़बीले से निकाल लाता था।

आहिस्ता-आहिस्ता जंग के बजाए सुलह का राज हुआ, क़बीले मिल-जुल कर जीने के ढंग सीख गए। अब लड़की को भगा ले जाने की ज़रूरत नहीं रही थी। लड़का अपनी पसंदीदा लड़की को हासिल करने के लिए दूसरे क़बीले में जाकर लड़की के बाप की ख़िदमत और मज़दूरी करता था। बाप उसकी मेहनत-मज़दूरी के बजाए उसे अपना दामाद बना लेता था। और लड़का उसे अपने क़बीले में ले जाता था।

दौलत बढ़ी तो मर्दों ने सोचा कि मंगेतर के बाप की ख़िदमत करने से अच्छा यह है कि मुनासिब हदिया उसे देकर मंगेतर ले ली जाए। यहीं से "मेह्र" की शुरुआत हुई।

इस तरह पहले दौर में शौहर, बीवी का ग़ुलाम और ख़िदमतगार था और औरत मर्द पर हुकूमत करती थी। इसके बाद हुकूमत मर्द के हाथ में आई। मर्द, दूसरे क़बीले से औरत उठा लाते थे। तीसरा दौर वह आया जब लड़का मंगेतर के घर जाता था और बाप से मिलकर बात करता और मंजूरी की सूरत में यह लड़का ख़िदमतगारी करता था और मेहनत-मज़दूरी करके होने वाले ससुर को राज़ी करता था। चौथा दौर वह था जहाँ मर्द एक तय रक़म लड़की के बाप को देता था और यहाँ से 'मेह्र' का सिलसिला शुरु हुआ।

कहते हैं: मर्द ने जब "माँ की हुकूमत" का दौर ख़त्म करके "बाप की हुकूमत" का ज़माना शुरु किया तो उसने औरत को मज़दूर बना लिया और उसे पैसा कमाने का एक ज़रिया समझ लिया। उस से कभी-कभी अपनी सेक्चुअल डिज़ाएर्स भी पूरी की जाती थी। औरत से समाजी और माली आज़ादी छीन ली गई और उसकी मेहनत मज़दूरी का फल, बाप या शौहर को दिया जाने लगा।

औरत अपनी पसंद से शौहर नहीं चुन सकती थी।

और माली तौर पर आज़ाद नहीं थी।

दरअसल मेहर जैसी चीज़ और नानो नफ़्क़े के नाम से जो ख़र्चे होते थे उसके बदले में बीवी से यकजाई के ज़माने तक जो मेहनत-मज़दूरी लेता था वह उसका बदला होता था।

मेहरः इस्लामी सिस्टम में

इन्सानी समाज की तरक़्क़ी का पाँचवां दौर वह है जिसे स्कॉलर्स ने भुला दिया यानी वह दौर जब शादी के वक़्त मर्द अपनी तरफ़ से सीधे औरत को कुछ "पेशकश" करने लगा। लड़की के माँ-बाप इस "पेशकश" पर कोई हक़ नहीं रखते और औरत इस पेशकश को क़ुबूल करते ही अपनी समाजी व माली आज़ादी की मालिक हो जाती है।

1- वह अपना शौहर ख़ुद अपनी पसंद और इरादे से चुनती है, माँ और बाप की मर्ज़ी से नहीं।

2- जब तक बाप के घर में रहे और जब से शौहर के घर जाए, किसी को हक़ नहीं कि उस से ख़िदमतगारी ले और उसका एक्सप्लाइटेशन करे। मेहनत-मशक़्क़त से जो कमाए वह उसी की मिलकियत है। दूसरे का उस से कोई सरोकार नहीं। वह अपने राइट्स में किसी मर्द की मोहताज नहीं है।

मर्द, औरत से फ़ाएदा उठाने के मामले में सिर्फ़ यह हक़ रखता है कि जब तक रिश्ता है तब तक उसके साथ से फ़ाएदा उठाए। उस पर ज़िम्मेदारी है कि जब तक यह रिश्ता बाक़ी है उसकी जिस्मानी ज़रूरत पूरी करता रहे और उसकी ज़िंदगी की देखभाल करे।

इस सिस्टम को क़ुरआन ने भी क़ुबूल किया है। उसने शादी की बुनियाद यही मानी है। क़ुरआन करीम में बहुत सी आयतें बताती हैं कि मेहर, औरत का माल है और किसी दूसरे का उस पर कोई हक़ नहीं है।

मर्द को शादी की पूरी मुद्दत तक बीवी के ख़र्चों की ज़िम्मेदारी पूरी करना होगी। इस ज़माने में मेहनत-मज़दूरी या काम-काज करके वह जो कुछ कमाए वह उसकी ज़ाती मिलकियत है, बाप या शौहर का उस पर कोई हक़ नहीं।

यहाँ पहुँच कर "मेहर व नफ़्क़ा" मोअ़म्मा बन जाता है। जब मेहर, बाप की मिल्कियत होता था, उस वक़्त लड़की अपने शौहर के घर में लौंडी के तौर पर आती और शौहर उस से हर क़िस्म का फ़ाएदा उठाता था। उस वक़्त मेहर का फ़लसफ़ा था, बाप से लड़की ख़रीदना और ज़रूरी ख़र्चे, नानो नफ़्क़े का फ़लसफ़ा था, वह ख़र्चे जो हर मालिक अपनी प्रापर्टी पर किया करता है। यह सूरत कि बाप को कुछ न दिया जाए, शौहर को इस्तेसमार का हक़ न हो, बीवी से फ़ाइनेंशल फ़ाएदा लेने का हक़ न हो। बीवी, फ़ाइनेंशल पहलू से पूरी तरह आज़ाद है। उसे राइट्स के लिहाज़ से भी किसी की सरपरस्ती व इजाज़त की ज़रूरत नहीं है। फिर मेहर देना और नानो नफ़्क़ा अदा करना क्या है?

हिस्ट्री पर एक नज़र

पाँचवे दौर में "मेहर व नानो नफ़्क़ा" की फ़लासफ़ी की छानबीन के वक़्त हमें पिछले चार दौरों पर थोड़ा ख़ास ध्यान देना होगा। दरअसल इस बारे में जो कुछ कहा गया है वह सिर्फ़ अंदाज़े हैं और कुछ नहीं। न वह हिस्ट्रिक फ़ैक्ट हैं और न तजुर्बे के बाद के रिज़ल्ट्स।

"माँ की हुकूमत का दौर" एक टर्मिनालॉजी है, इस बारे में जो कुछ कहा गया है वह आँखें बंद करके तो मानने वाली बातें हैं नहीं। इसी तरह बाप का लड़कियाँ बेचना या शौहरों को अपनी औरत से नाजाएज़ फ़ाएदे उठाना जल्दी मानी जाने वाली चीज़ तो है नहीं।

इन अंदाज़ों के अंदर दो चीज़ों पर नज़र जमती है। पहली चीज़ तो यह है कि इनमें यह साबित करने की कोशिश की गई है कि शुरुआती दौर का इन्सान हद से ज़्यादा सख़्त दिल और कठोर था। दूसरी बात यह है कि नेचर अपनी डिमांड्स पूरी करने के लिए जो हैरतअंगेज़ चालें चलती है उसको अन्देखा कर दिया गया है।

यूरोप वालों ने मिडिल ऐजेस में मज़हब और मज़हब का नाम लेने वालों के हाथों बड़े ज़ुल्म झेले, बहुत दुख उठाए, ज़िंदा आग में जले। इसी वजह से यह लोग ख़ुदा और मज़हब, बल्कि उसकी बू रखने वाली चीज़ से भी डरते हैं। इसीलिए हर तरफ़ फैली हुई ख़ुदा की निशानियों, सुबूतों और तजुर्बों के बाद भी ख़ुदा यानी इस नेचर के क्रिएटर को मानने की हिम्मत नहीं रखते।

हम इन लोगों से यह नहीं चाहते कि पूरी तारीख़ में फैले हुए ख़ुदा के रसूलों को मान लें। हम यह मनवाना नहीं चाहते। मगर इतना तो ज़रूर चाहते हैं कि यह लोग कम से कम नेचर के बामक़सद होने को अन्देखा न करें।

औरत-मर्द के रिश्ते की तारीख़ में यक़ीनन बहुत ज़ुल्म और बड़ी बे-रहमियाँ हुई होंगी। क़ुरआन मजीद ने उस बे-रहमी की बदतरीन मिसालें भी बयान की हैं। लेकिन इसका मतलब यह तो नहीं कि पूरी हिस्ट्री में ज़ुल्म और सख़्ती का अंदाज़ यही रहा।

मेहर का असली मक़सद

हमारे अक़ीदे में "मेहर, एक माहिराना तदबीर" है। दुनिया में आने के बाद से ही औरत-मर्द के रिश्ते को ज़्यादा मज़बूत करने के लिए "मेहर" को शुरु किया गया।

हक़ीक़त यह है कि औरत और मर्द दोनों का मोहब्बत करने का अंदाज़ अलग-अलग है, औरत का इश्क़ कुछ और तौर तरीक़े से है और मर्द का कुछ और। 'मेहर' की ज़रूरत और शुरुआत इसी स्टेज में हुई।

एक दूसरे के बारे में दोनों के इमोशंस, जज़्बात एहसासात भी एक तरह के नहीं हैं। क़ुदरत ने हुस्न व ग़ुरूर व बेनियाज़ी, औरत के हिस्से में और नियाज़मंदी, तलब, इश्क़ मर्द के हिस्से में रखा। इसी तक़सीम की वजह से औरत के कमज़ोर पहलू की भरपाई मर्द की बदनी ताक़त से हो गई। तराज़ू के पल्ले बराबर हो गए। जब ही तो मर्द तलब के लिए औरत के दरवाज़े पर जाता है।

स्कॉलर्स कहते हैं, "मर्द में औरत से ज़्यादा सेक्चुअल डिज़ाएर्स हैं। इस्लाम के मुताबिक़ इसका उलटा है। लेकिन औरत मर्द के मुक़ाबले में सेक्चुअल डिज़ाएर्स पर ज़्यादा क़ाबू रखती है। वह ज़्यादा ख़ुद्दार पैदा हुई है। दोनों बातों का नतीजा एक है यानी बहरहाल मर्द अपने ख़मीर के मुक़ाबले में औरत के मुक़ाबले ज़्यादा कमज़ोर है। इसी क्वालिटी ने औरत को मौक़ा दिया है कि मर्द के पीछे भागने से बचे और आसानी से उसके क़ाबू में न आए, इसके उलट मर्द को उसका नेचर

मजबूर करता है कि औरत के सामने झुके और उसकी ख़ुशनूदी हासिल करने के हर तरीक़े को अपनाए, इन ज़रियों में से एक ज़रिया है "हदिया" जो उस पर निसार किया जाए।

मर्द ही नहीं बल्कि कोई भी नर किसी मादा का पीछा क्यों करते हैं और आपस में क्यों लड़ते हैं? इसके मुक़ाबले में मादा में कोई लालच या हिर्स और नर के साथ के लिए ख़ुद से कोई पहल नहीं दिखती। इसकी वजह यह है कि इन दोनों की नेचुरल डिमांड्स अलग-अलग हैं। नर में हमेशा तलब का जज़्बा रहता है और मादा में यह जज़्बा नहीं है। मादा, नर की लालच और दीवानगी को देखकर उसके पीछे नहीं दौड़ी बल्कि एक क़िस्म की बेनियाज़ी और ग़ुरूर जताती रहती है।

मेहर का हया और औरत की पाकीज़गी से गहरा रिश्ता है। औरत अपने नेचुरल इल्हाम से यह जान चुकी है कि उसकी इज़्ज़त व रुतबा इस पर टिका है कि वह गिर पड़ के ख़ुद को मर्द के कंट्रोल में न दे दे...

... यही वजह है कि औरत जिस्मानी नज़ाकत के बावजूद मर्द को दरख़्वास्त गुज़ार के तौर पर अपने दरवाज़े पर खींच बुलाती है। मर्दों को आपस में लड़ने पर खड़ा कर देती है, और ख़ुद रोमांस और इश्क़ के बहाने मर्द के पंजे से निकल जाती है। कितने मजनून हैं जो लैलाओं के पीछे भाग रहे हैं मगर वह उस वक़्त तक किसी से मोहब्बत का बंधन नहीं बाँधती और किसी का हाथ अपने दामन तक नहीं आने देती जब तक उस से हदिया व पेशकश, सच्चाई व ख़ुलूस की गारंटी न ले ले।

कहते हैं कि कुछ वहशी क़बीलों में यह दस्तूर था कि जो लड़की कई उम्मीदवारों और आशिक़ों में फंस जाती है वह "डोएल" का पैग़ाम भेजती थी वह रक़ीब आमने-सामने मुक़ाबला करते थे और जो मौत या हार से बच जाता था वही उस लड़की का शौहर बन जाता।

औरत, मर्द पर बहुत ज़्यादा असरअंदाज़ होती है। औरत की मर्द पर असर की ताक़त मर्द के असर से ज़्यादा है।

औरत की वह ताक़त जो पूरी हिस्ट्री में अपनी शख़्सियत को बचाकर रख सकी और मर्द के पीछे दौड़ने से रोकती रही और मर्द को अपने आस्ताने पर तलबगार की हैसियत से तलब करती रही, औरत की यही ताक़त मर्द को शादी के वक़्त मेहर के नाम से हदिया पेश करने पर मजबूर करती है।

मेहर वह आम क़ानून है जिसको नेचर ने ख़ुद अपने हाथों से लिखा है।

क़ुरआन में मेहर

हम ने कहा है कि समाज के पाँचवे दौर में "मेहर" की एक और शक्ल उभर कर सामने आई जो कि नेचर की ईजाद थी। क़ुरआन मजीद ने समाजी गंदगियों से इसे पाक-साफ़ करके फ़ितरत का सही रूप और निखार दिया। क़ुरआन करीम में है, "औरतों को उनका मेहर दे दो। फिर अगर वह ख़ुशी-ख़ुशी तुम्हें देना चाहें तो शौक़ से खा लो।" (सूरए निसा/4)

क़ुरआन मजीद ने इस छोटी सी आयत में तीन बातों की तरफ़ इशारे किए हैं:

1- मेहर को मेहर के बजाए "सदुक़ा" के नाम से पुकारा। मेहर को सदुक़ा इसलिए कहा है क्योंकि वह मर्द के रिश्ते को सच्चा मानता है।

2- "मेहर" सीधे औरत का हक़ है। माँ-बाप का कोई हिस्सा नहीं कि उन्होंने दूध पिलाया, पाला-पोसा, इसलिए यह उनका हक़ है।

2- मेहर सिर्फ़ गिफ़्ट और तोहफ़ा ही है।

हर नशा पैदा करने वाली चीज़ से बचो

■ डॉ. कल्बे सिब्तैन नूरी

रसूले ख़ुदा(अ) ने फ़रमाया है, "हर नशा पैदा करने वाली चीज़ से बचो क्योंकि हर नशा पैदा करने वाली चीज़ हराम होती है।"

फ़िक़्हे इस्लामी में इन्सान के लिए हर वह चीज़ हराम है जो उसके दिमाग़ में नशा पैदा कर दे चाहे वह कोकेन हो, चरस हो, शराब हो या बिना ज़रूरत नशा पैदा करने वाली दवाएं हों। आज इन्सान के दिमाग़ में इतनी फ़िक्रें हैं और उसने अपनी ज़रूरतों, ख़्वाहिशों को इतना बढ़ा लिया है कि दुनिया की एक बहुत बड़ी आबादी घबराहट, डिप्रेशन और टेंशन का शिकार है। इन ज़हनी बीमारियों से कुछ वक़्त तक बचने के लिए इन्सान ड्रग्स, शराब और नींद की गोलियों का बेधड़क इस्तेमाल कर रहा है जबकि वह यह नहीं जानता कि इन चीज़ों के इस्तेमाल से उसकी परेशानियाँ कम नहीं होंगी बल्कि और बढ़ जाएंगी। मेडिकल साइंस यह बात साबित कर चुकी है कि ड्रग्स, शराब, चरस, गाँजा, सिगरेट वग़ैरा इन्सान की सेहत के लिए बहुत नुक़सानदेह हैं। इन्सान इनका आदी होकर अपनी ज़िंदगी को अपने ही हाथों से नुक़सान पहुँचाता रहता है और जब उसे होश आता है तब तक बहुत देर हो चुकी होती है। हज़रत अली(अ) ने बिल्कुल सही फ़रमाया है कि इन्सान अपनी ज़रूरतों को जितना कम रखेगा, उतना ही ख़ुश रहेगा। बदक़िस्मती से आज इन्सान की ज़िंदगी का सिर्फ़ एक मक़सद रह गया है और वह यह है कि किसी न किसी तरह से वह जल्दी से जल्दी दौलत कमा ले। जब वह दौलत नहीं कमा पाता या उसको लगता है कि उसकी ज़िंदगी का मक़सद पूरा नहीं हो पा रहा है तो वह मायूसी का शिकार होकर नशा आवर चीज़ों का आदी हो जाता है।

दीन कहता है कि मायूसी का शिकार होने के बजाए अल्लाह पर भरोसा करके ज़िंदगी के मैदान में स्ट्रगल और कोशिश करोगे तो देर ही से सही लेकिन कामयाबी ज़रूर मिलेगी।

23 Ziqadah

SHAHADAT imam ALI RAZA a.s.

السلام علیک یا علی بن موسی الرضا

इमाम अली रज़ा अ० फ़रमाते हैं:

बेशक सबसे बुरा इन्सान वह है जो किसी की मदद करने से भागे, अकेला खाना खाए और अपने मातहेत को मारे।

वसिय्यत وصیت

■ हुज्जतुल इस्लाम मीसम ज़ैदी

इस्लामी टीचिंग्स में वसिय्यत को बहुत अहमियत दी गई है। ख़ुदा का हुक्म है कि इन्सान अपने माल-दौलत, जाएदाद और अपने कमसिन बच्चों के बारे में वसिय्यत करके जाए। हर इन्सान का फ़रीज़ा है कि अपनी आँख बंद होने से पहले अपने कमसिन बच्चों के लिए किसी को ज़िम्मेदार बना दे। वसिय्यत करते वक़्त कभी इन्सान अपने माल और जाएदाद के बारे में वसिय्यत करता है जैसे फ़ुलाँ मिक़दार रक़म मेरे मरने के बाद मस्जिद या इमामबाड़े में ख़र्च कर दी जाए और कभी किसी काम के लिए वसिय्यत करता है जैसे कहे कि मेरे मरने के बाद मेरी तरफ़ से हज करा दिया जाए।

वसिय्यत करने वाले शख़्स में यह क्वालिटीज़ पाई जाती हैं:-

1- वसिय्यत करने वाला हिसाब व किताब का पाबंद होता है।

2- वसिय्यत करने वाले की निगाहों में दूसरों के हक़ों की अहमियत होती है।

3- वसिय्यत के ज़रिए मरने के बाद के लिए वसिय्यत करने वाला नेक आमाल का सिलसिला जारी रखता है।

4- वसिय्यत करने वाला वसिय्यत के ज़रिए अपने बच्चों की माली मुश्किलों को हल करने के लिए रास्ता खोल देता है। रसूले इस्लाम[स०] ने फ़रमाया है, "जो भी वसिय्यत करके इस दुनिया से उठता है वह शहीद की तरह मरता है।"

वसिय्यत करना कभी वाजिब होता है। अगर किसी इन्सान के ज़िम्मे अल्लाह का कोई हक़ हो या लोगों के हक़ पाए जाते हों तो वाजिब है कि इन्सान वसिय्यत करके अपने ज़िम्मे जो चीज़ें हों उन्हें बता दे ताकि अगर औलाद या रिश्तेदार लाएक़ हों तो मरने वाले की ज़िम्मेदारियों को पूरा करने का रास्ता खुला रहे। कभी वसिय्यत करना मुस्तहब होता है जैसे किसी नेक काम के लिए वसिय्यत करना। इसी तरह वसिय्यत करना कभी मुबाह भी होता है जैसे बच्चों के लिए वसिय्यत करना कि मेरे बच्चे को फ़ुलाँ तालीम दी जाए। कभी वसिय्यत करना मकरूह भी होता है जैसे कोई वसिय्यत करे कि मेरे मरने के बाद मेरी क़ब्र पर मज़ार बनाया जाए। इसी तरह कभी वसिय्यत करना हराम भी होता है जैसे कोई वसिय्यत करे कि फ़ुलाँ गुमराह करने वाली किताब को छापकर बांट दिया जाए वग़ैर-वग़ैरा।

यूँ तो मौत के बाद इन्सान इस दुनिया से चला जाता है लेकिन उसका नाम-ए-अमल वसिय्यत के ज़रिए खुला रखा जा सकता है। मीरास के हक़ के अलावा भी वसिय्यत में अपने माँ-बाप का कुछ हिस्सा रखना अच्छा अमल है। वसिय्यत का न करना दूसरों के हक़ों को बरबाद करने का ज़रिया भी बन सकता है। अगर किसी ने कोई वसिय्यत कर दी हो तो फिर उसमें किसी को भी कोई तबदीली करने का हक़ नहीं होता है और उसमें तबदीली करना हराम है। वसिय्यत करते वक़्त गवाह बनाना बहुत अच्छी चीज़ है और इसके ज़रिए वसिय्यत में बदलाव के चांसेज़ भी कम हो जाते हैं। अगर किसी की वसिय्यत के मुताबिक़ अमल न किया जाए तब भी वसिय्यत करने वाले को उसकी वसिय्यत के मुताबिक़ ख़ुदा की जानिब से अज्र और सवाब मिल जाता है और तबदीली करने वाला गुनाह और अज़ाब का हक़दार बन जाता है। वैसे तो वसिय्यत पर अमल करना अच्छी चीज़ है लेकिन अहम और बहुत अहम का ख़याल रखना भी ज़रूरी होता है। इसलिए हो सकता है कि वसिय्यत के मुताबिक़ किसी काम का अंजाम देना वसिय्यत की तरतीब से दूसरे नम्बर पर हो लेकिन उसकी अहमियत सबसे ज़्यादा हो, इसलिए पहले इसी काम को किया जाए। इसी तरह फ़ितना व फ़साद को रोकने के लिए हो सकता है कि वसिय्यत के मुताबिक़ सीरियल का ख़याल न रखा जाए। वसिय्यत करते वक़्त वारिसों की सूरते हाल को पेशे नज़र रखना भी ज़रूरी है ताकि किसी भी तरह उनको नुक़सान न पहुँचे।

इन्सान अपनी ज़िंदगी के आख़िरी वक़्त में भी वसिय्यत कर सकता है।

इस्लामी टीचिंग्स के मुताबिक़ इन्सान अपनी सारी दौलत और जाएदाद के लिए वसिय्यत नहीं कर सकता बल्कि सिर्फ़ एक तिहाई माल के बारे में ही वसिय्यत कर सकता है। कभी-कभी इन्सान अपने बच्चों से परेशान होकर या जज़्बाती बनकर अपने तमाम माल को किसी इदारे या औक़ाफ़ के लिए वक़्फ़ कर देता है लेकिन रसूले अकरम[स०] ने इस सिलसिले में सख़्ती से मना किया है।

एक मुसलमान का इंतेक़ाल हो गया। रसूले इस्लाम[स०] ने उसकी नमाज़े जनाज़ा में शिरकत की और नमाज़ पढ़ने के बाद सवाल किया, "इसके कितने बच्चे हैं और इसने अपने बच्चों के लिए क्या छोड़ा है?" लोगों ने जवाब दिया, "या रसूलुल्लाह[स०]! इसके पास जो कुछ दौलत थी वह इसने ख़ुदा की राह में दे दी।"

रसूले इस्लाम[स०] ने फ़रमाया, "अगर तुम ने यह बात मुझे पहले बता दी होती तो मैं इसकी नमाज़े जनाज़ा न पढ़ता क्योंकि इसने अपने बच्चों को भूखा और बेसहारा बनाकर लोगों में छोड़ा है।"

इन्सान को पूरा हक़ है कि ज़िंदगी में जिसको जो देना चाहे दे दे लेकिन मरने के बाद के लिए जो कुछ लिखकर या ज़बानी वसिय्यत करेगा उसमें से सिर्फ़ एक तिहाई माल के लिए ही वसिय्यत कर सकता है। बाक़ी माल वारिसों को देना ज़रूरी है।

वसिय्यत का ज़िक्र करते हुए रसूले इस्लाम[स०] फ़रमाते हैं, "यह सही नहीं है कि कोई मुसलमान किसी एक रात भी अपने सरहाने वसिय्यत नामा रखने से पहले सो जाए।"

क़ुरआन मजीद में वसिय्यत करने पर ज़ोर दिया गया है,

"तुम्हारे ऊपर वाजिब है जब तुम्हारी मौत का वक़्त क़रीब आ जाए अगर अपने माल में से कुछ छोड़कर जा रहे हो तो अपने माँ-बाप और रिश्तेदारों के लिए मुनासिब तरीक़े से वसिय्यत करो या साहेबाने तक़वा का हक़ है।"[1]

वसिय्यत में तबदीली करने वालों के लिए भी क़ुरआने करीम में डराया गया है,

"जो लोग वसिय्यत सुनने के बाद उसमें तबदीली कर देते हैं उसका अज़ाब सिर्फ़ उन लोगों पर है जिन्होंने वसिय्यत में तबदीली की है ख़ुदावंदे आलम सबसे ज़्यादा सुनने वाला और सबसे ज़्यादा इल्म रखने वाला है।"[2]

रावी कहता है, "इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] से मैंने सवाल किया कि हज़रत लुक़मान की वसिय्यत में क्या ख़ास बात थी। आपने फ़रमाया कि बहुत सारी ख़ास बातें पाई जाती थीं लेकिन उनमें सबसे ज़्यादा अजीब बात यह थी कि जनाबे लुक़मान ने अपने बेटे से वसिय्यत की कि ख़ुदा से डरो क्योंकि अगर सारे जिन्नों और इन्सानों की इबादत के बराबर भी इबादत कर लोगे तब भी वह तुम पर अज़ाब करेगा और उसकी बारगाह में इस तरह उम्मीदवार रहो कि अगर तमाम जिन्नों और इन्सानों के गुनाहों के बराबर भी गुनाह किए गए हों तब भी वह तुम्हें बख़्श देगा।"

रसूले इस्लाम[स०] ने अपने सहाबी हज़रत अबूज़र से वसिय्यत की, "ऐ अबूज़र! अपने दीनी भाईयों पर ग़ुस्सा करने और उन से दूर होने से बचो क्योंकि ऐसी हालत में तुम्हारा कोई अमल क़ुबूल नहीं होगा। ऐ अबूज़र! तुम्हें दीनी भाईयों से दूर होने या उन पर ग़ुस्सा करने से मना करता हूँ और अगर फिर भी ऐसा हो जाए तो इस सिलसिले को तीन दिन से ज़्यादा लम्बा मत करना क्योंकि जो इस दुनिया से अपने दीनी भाई से ग़ुस्सा होने के बाद उठता है आग उसके लिए सबसे ज़्यादा सही चीज़ है।"

इस तरह कहा जा सकता है कि इन सारी आयतों और रिवायतों की रौशनी में वसिय्यत एक बेहतरीन काम है बल्कि कुछ मौक़ों पर वाजिब भी है। हमें अपनी ज़िंदगी का सिस्टम ऐसा बनाना चाहिए जिस से पता चले कि कल की हमें ख़बर नहीं। इसलिए अपनी ज़िंदगी के मामलों को लिख लेना ही बेहतर है ताकि दूसरों के लिए बाक़ी रह जाने वाली ज़िम्मेदारियों की अदाएगी का रास्ता खुला रहे। लेकिन जब हमें ख़ुद ही अपनी ज़िम्मेदारियों की अदाएगी की फ़िक्र नहीं होगी तो दूसरों को क्यों होगी...।

1-सूरए बक़रा/180, 2-सूरए बक़रा/181

सदक़ा बग़ैर माल का

जैसे ही हम "सदक़ा" लफ़्ज़ सुनते हैं फ़ौरन हमारे ज़हन में आता है कि माल (जो चाहे पैसे की शक्ल में हो या अनाज वग़ैरा की) निकाल कर किसी फ़क़ीर या ग़रीब को दे दिया जाए।

लेकिन सवाल यहाँ यह है कि क्या सदक़ा सिर्फ़ इसी को कहते हैं?

अगर हमारी नज़र मासूमीन[अ०] की हदीसों पर हो तो जवाब कुछ और मिलेगा। यानी सिर्फ़ माल को निकाल कर फ़क़ीरों या ग़रीबों को दे देने का नाम सदक़ा नहीं है बल्कि ऐसे दूसरे रास्ते भी हैं जो बग़ैर माल ख़र्च किए सदक़ा कहलाते हैं।

हाँ! यह ध्यान रहे कि माली मदद अपनी जगह ख़ास अहमियत रखती है और हर हालत और हर जगह इन्सान को इसका ख़याल रखना चाहिए लेकिन जो अहम बात यहाँ पर है वह यह कि सदक़ा बहुत तरह का हो सकता है।

जैसा कि रसूले ख़ुदा[स०] से नक़ल हुआ है कि आप[स०] ने फ़रमाया, "तमाम मुसलमानों को चाहिए कि हर रोज़ सदक़ा दें।" इस पर कुछ सहाबियों ने ताज्जुब से पूछा, "या रसूलुल्लाह[स०]! अगर कोई शख़्स इतना मालदार न हो तो वह क्या करे?"

रसूल[स०] ने अपनी बात को और किल्यर करते हुए कहा सिर्फ़ माल के इन्फ़ाक़ का नाम सदक़ा नहीं है बल्कि:

1- अगर रास्ते में कोई चीज़ पड़ी हो जिस से आम लोगों को परेशानी हो रही हो उसको रास्ते से हटाना भी सदक़ा है।

2- अगर कोई शख़्स रास्ता भूल गया हो तो उसको रास्ता बताना भी सदक़ा है।

3- अगर कोई शख़्स किसी बीमार की अयादत करे तो यह भी सदक़ा है।

4- अगर कोई शख़्स अम्र बिल मारूफ़ करे तो यह भी सदक़ा है।

गॉड पार्टिकल

THE GOD PARTICLE

■ सै. आले हाशिम रिज़वी

जिनेवा की यूरोपियन ऑर्गेनाइज़ेशन फ़ॉर न्यूक्लियर रिसर्च जिसे शार्ट में सर्न कहा जाता है, वहाँ लगभग 10 अरब डॉलर से ज़्यादा ख़र्च करके क़रीब 6000 साइंटिस्ट्स ने कई सालों की लम्बी रिसर्च के बाद उस पार्टिकल को खोज लिया है जिसे गॉड पार्टिकल के नाम से जाना जा रहा है। दरअसल इस पार्टिकल को दो मशहूर साइंसटिस्ट ब्रिटेन के पीटर वेयर हिग्स और इंडिया के सत्येंद्रनाथ बोस के नामों पर हिग्स बोसोन नाम दिया गया है। लेकिन इस पार्टिकल का ताल्लुक़ युनिवर्स के क्रिएशन से होने की वजह से यह गॉड पार्टिकल के नाम से ज़्यादा मशहूर हो गया है। सभी साइंटिस्ट्स के मुताबिक़ यह पार्टिकल सब-एटामिक वर्ल्ड को मास (भार) देने के लिए ज़िम्मेदार है। इसी की वजह से युनिवर्स के हज़ारों पार्टिकल और मैटर आपस में बंधे हुए हैं। इसके बिना युनिवर्स के सभी पार्टिकल लाइट की स्पीड से बिखर जाएंगे और फिर सब कुछ ख़त्म हो जाएगा। इसीलिए पूरे युनिवर्स में हिग्स फ़ील्ड को इन-विज़िबिल शक्ल में मौजूद माना गया है। हिग्स बोसोन की यह इन-विज़िबिल हिग्स फ़ील्ड बाक़ी सभी पार्टिकल को भार देती है।

आज पूरी दुनिया में हिग्स बोसोन यानी गॉड पार्टिकल की चर्चा है। इतनी पब्लिसिटी आमतौर पर किसी भी खोज को नहीं मिलती। इसका रीज़न इसे गॉड के नाम से जोड़ा जाना है। मीडिया इसे इस तरह से पेश कर रहा है जैसे साइंटिस्ट्स ने ख़ुदा तक अपनी पहुँच बना ली है। जबकि हक़ीक़त यह है कि इतनी महंगी और लम्बी रिसर्च के बाद भी 6000 साइंसटिस्ट ख़ुदा के बनाए हुए इस युनिवर्स के क्रिएशन से जुड़े उस पार्टिकल को अभी तक ठीक से समझ भी नहीं पाए हैं। इस रिसर्च से जुड़े सर्न के साइंसटिस्ट अल्बर्ट डी रोइक का कहना है कि साल 2015 तक ही इस खोज का कुछ ठोस नतीजा सामने आ पाएगा। यह भी हो सकता है कि खोजा गया यह ख़ास पार्टिकल स्टैंडर्ड मॉडल हिग्स बोसोन न हो। अभी कुछ भी श्योर नहीं है। यहाँ पर मैं मरयम के रीडर्स को यह भी बताना चाहूँगा कि पिछले 35-40 सालों से हिग्स बोसोन पार्टिकल के वुजूद पर ही बहस चल रही थी। कुछ साइंटिस्ट तो इसके वुजूद से ही इन्कार कर रहे थे। लेकिन सर्न में हुई रिसर्च के बाद इस पार्टिकल की मौजूदगी को मान लिया गया है। सर्न के साइंसदानों के मुताबिक़ अगर यह रिसर्च पूरी तरह कामयाब हो गई तो किसी भी चीज़ से उसका मास (भार) अगल करके उसे लाइट की स्पीड से कहीं भी भेजा जा सकेगा। इस से स्पेस में भेजे जाने वाले सेटेलाइट में एनर्जी का बहुत कम इस्तेमाल करना पड़ेगा। एनर्जी के कम इस्तेमाल की वजह से ख़र्च भी बहुत कम आएगा। इसके अलावा इंटरनेट की स्पीड कई गुना तेज़ बढ़ाई जा सकेगी। नैनो टेक्नोलॉजी में भी बड़ी मदद मिलेगी। एम.आर. आई. और पी.ई.टी. स्कैन में भी यह खोज काफ़ी मददगार साबित होगी। इस खोज से स्पेस की सबसे बड़ी पहेली डार्क मैटर को भी काफ़ी हद तक सुलझाने का दावा किया जा रहा है।

डार्क मैटर हमेशा से साइंसदानों के लिए एक अबूझ पहेली बना हुआ है। डार्क मैटर यानि स्पेस का वह हिस्सा जो लाइट के न होने की वजह से इन-विज़िबिल है। सबसे बड़ी बात यह है कि डार्क मैटर युनिवर्स का 90% से ज़्यादा वह हिस्सा है जिसे साइंसटिस्ट न देख पाए हैं और न समझ पाए हैं। यहाँ पर ख़ुदा की क़ुदरत हर साइंसटिस्ट को

हैरान किए हुए है कि वह युनिवर्स के 90% हिस्से से अंजान हैं। वह नहीं जानते कि डार्क मैटर क्या है? उसके अंदर कौन-कौन से एलीमेंट्स मौजूद हैं? अब गॉड पार्टिकल की खोज साइंसदानों की इस मामले में कितनी मदद कर पाएगी यह तो आने वाला वक़्त ही बताएगा।

क़ुरआन, हदीस और इमामों के इरशादात से पता चलता है कि युनिवर्स का क्रिएशन पानी से हुआ है। इसका ज़िक्र मैं अपने पिछले आर्टिकल 'पानी की कहानी' में कर चुका हूँ। पानी H_2O के मालक्यूल में हाईड्रोजन के दो एटम और आक्सीजन का एक एटम होता है। ऑक्सीजन का एटम हाईड्रोजन से 16 गुना ज़्यादा भारी होता है। इस तरह वज़न के एतेबार से देखा जाए तो युनिवर्स में 93% ऑक्सीजन और 7% हाईड्रोजन होनी चाहिए। लेकिन तारों से आने वाली रौशनी में हाईड्रोजन तो मिलती है पर ऑक्सीजन नहीं मिलती। हाईड्रोजन तारों में न्यूक्लियर फ़्युज़न के ज़रिए एनर्जी और रौशनी पैदा करती है। इसी वजह से हम तारों को आसानी से देख पाते हैं। लेकिन आक्सीजन में ऐसी कोई प्रोसेस नहीं होती है, जिससे युनिवर्स में उसकी मौजूदगी आसानी से पता नहीं लगाई जा सकती। इसलिए क़ुरआन और हदीस की रौशनी में हम यह मान सकते हैं कि डार्क मैटर हक़ीक़त में आक्सीजन ही है। यानी पानी के हाईड्रोजन वाले हिस्से ने रौशन तारों को बनाया और ऑक्सीजन वाले हिस्से ने डार्क मैटर को बनाया है। अभी तक यह सिर्फ़ इस्लामी थ्योरी है लेकिन जिस तरह से साइंसटिस्ट डार्क मैटर की पहेली को गॉड पार्टिकल की मदद से सुलझाने में लगे हैं उससे यही लगता है कि जल्द ही उन्हें भी वहाँ ऑक्सीजन की मौजूदगी का एहसास हो जाएगा। हिग्स बोसोन यानी गॉड पार्टिकल की रिसर्च यक़ीनन रंग लाएगी। हमें ख़ुदा की बेपनाह ताक़त और क़ुदरत के कुछ नायाब, बेजोड़ और छुपे हुए करिश्मे साइंटिस्ट्स की मेहनत के नतीजे में देखने, सुनने और समझने को मिलेंगे। युनिवर्स और स्पेस से जुड़े वह राज़ जिनके सिलसिले में क़ुरआन और हदीस में तो साफ़ इशारे मिलते हैं लेकिन साइंस के लिहाज़ से वह साबित नहीं हैं, वह जल्द ही प्रूव हो जाएंगे।

सर्न के साइंटिस्ट्स की यह रिसर्च जिस तरह से आगे बढ़ रही है उससे युनिवर्स के बहुत सारे राज़ों पर से पर्दा उठने की उम्मीद है। दरअसल ख़ुदा भी यही चाहता है कि उसके बंदे अपने इल्म में इज़ाफ़ा करें और उसके युनिवर्स के बारे में ग़ौरो-फ़िक्र करें। यह रिसर्च जितनी ज़्यादा आगे बढ़ेगी इन्सान ख़ुदा की ताक़त और क़ुदरत का उतना ही क़ाएल होता जाएगा। आख़िर में मैं 'मतीन अमरोहवी' की चार लाइनों से अपनी बात ख़त्म करता हूँ:

मेरी आँखों ने अभी तक उसे देखा भी नहीं
ख़ान-ए-दिल में न हो मेरे वह ऐसा भी नहीं
देखता रहता हूँ मैं चश्मे बसीरत से उसे
मैंने खोया भी नहीं है उसे पाया भी नहीं

आप भी मरयम के लिए आर्टिकिल भेज सकती हैं...

1. A4 साईज़ पर लिखा हो।
2. पेपर के एक साईड पर लिखा हो।
3. पहले कहीं छपा न हो।
4. आर्टिकिल की ओरिजिनल कॉपी भेजिए।
5. भेजे गए आर्टिकिल्स एडिटोरियल बोर्ड से पास होने के बाद ही पब्लिश किए जाएंगे।
6. आर्टिकिल रिजेक्ट होने पर उसकी वापसी नहीं होगी।
7. आर्टिकिल सिलेक्ट हो जाने के बाद अपने मुनासिब वक़्त पर पब्लिश किया जाएगा।
8. आर्टिकल में एडिटर को बदलाव का इख़्तियार होगा।

तक़ैय्या

तक़ैय्ये के मायने शरीअत में यह हैं कि अपने किसी काम या बात के ज़रिए दीन के हुक्म के बरख़िलाफ़ ऐसा कुछ करना कि अपनी या किसी और की जान या माल या इज़्ज़त-आबरू बच सके।

अक़्ल और तक़ैय्या

तक़ैय्या दरअस्ल एक अक़्ली चीज़ है, जिसकी बुनियाद ज़्यादा अहम और कम अहम के अक़्ली उसूल पर है, क्योंकि तमाम इंसान, चाहे दीनदार हों या बेदीन, उनका यह उसूल रहा है कि जब भी अपनी जान, माल और आबरू को ख़तरे में देखते हैं तो तक़ैय्या पर ही अमल करते हैं और दुश्मन के ख़तरे को टाल देते हैं। आज भी तमाम इंसानी समाज में ऐसा किया जाता है, जैसा कि अगर किसी मौक़े पर कोई जान और माल या आबरू से ज़्यादा अहम चीज़ ख़तरे में हो तो उसको पहले करते हैं और अपनी जान, माल और आबरू से हाथ धो लेते हैं।

क़ुरआन और तक़ैय्या

कुछ आयतों में साफ़ तौर पर तक़ैय्ये को एक शरई उसूल की हैसियत से पेश किया गया है:

1- ख़बरदार ईमान वाले, मोमिनीन को छोड़कर काफ़िरों को अपना वली और सरपरस्त न बनाएं और जो भी ऐसा करेगा उसका ख़ुदा से कुछ सरोकार नहीं होगा। अगर तुम्हें काफ़िरों से कोई डर हो तो कोई हरज भी नहीं है। (1)

2- जो शख़्स भी ईमान लाने के बाद कुफ़्र इख़्तियार कर ले...अलावा उसके जिसे कुफ़्र पर मजबूर कर दिया जाए और उसका दिल ईमान की तरफ़ से मुतमइन हो...और कुफ़्र के लिए खुला सीना रखता हो उसके ऊपर ख़ुदा का ग़ज़ब है, और उसके लिए बहुत बड़ा अज़ाब है। (2)

यह आयत तक़ैय्या के अलावा किसी और उसूल पर फ़िट नहीं होती। तमाम इस्लामी शिया व सुन्नी स्कॉलर्स नक़ल करते हैं कि यह आयत अम्मार यासिर के बारे में नाज़िल हुई है। जब उनपर, उनके मां-बाप (सुमैय्या और यासिर) और दूसरे असहाब पर दुश्मनों की तरफ़ से ज़ुल्म किया गया और यासिर और सुमैय्या शहीद हो गए तो अम्मार ने वह बात कह दी जो दुश्मन चाहते थे, जिसकी वजह से उन्हें ज़ुल्म से छुटकारा मिल गया। और अपनी जान इस तरह बचा ली, लेकिन ऐसा करके वह बड़े परेशान हो गए और रोते हुए रसूले अकरम[ﷺ] के पास पहुँचे। सारा वाक़ेआ बयान किया तो रसूले इस्लाम[ﷺ] ने उन्हें दिलासा देते हुए फ़रमाया कि अगर वह दोबारा फिर तुमसे अपनी बात कहलवाना चाहें तो फिर से कह देना, उस वक़्त यह आयत नाज़िल हुई।

3- फ़िरऔन वालों में से एक मोमिन शख़्स ने जो अपने ईमान को छुपाए हुए था, यह कहा कि क्या तुम लोग किसी शख़्स को सिर्फ़ इस बात पर क़त्ल कर रहे हो कि वह कहता है कि मेरा परवरदिगार अल्लाह है। (3)

मोमिने आले फ़िरऔन जो हज़रत मूसा पर ईमान लाए थे और हज़रत मूसा से छुपकर मिलते थे, उन्होंने हज़रत मूसा को बता दिया था कि फ़िरऔन के आदमी आपको क़त्ल करना चाहते हैं।

"उधर 'आख़' शहर से एक शख़्स दौड़ता हुआ आया और उसने कहा कि ऐ मूसा! शहर के बड़े-बड़े आदमी आपस में मशवेरा कर रहे हैं कि आपको क़त्ल कर दें । इसलिए आप शहर से बाहर निकल जाईए। मैं आपके लिए नसीहत करने वालों में से हूँ।" (4)

लेकिन इसके बावजूद अपने ईमान को फ़िरऔनियों से छुपा कर रखा था, और ईमान को छुपा कर रखने का मतलब यही था कि आप अपने ईमान और ऐतेक़ाद को ज़बान और अमल से उनके सामने ऐसे ज़ाहिर करते थे जो उनके अक़ीदे और ईमान के मुवाफ़िक़ होता था लेकिन हक़ के ख़िलाफ़ हुआ करता था, और यह काम आप अपनी हिफ़ाज़त और हज़रत मूसा[अ] की मदद और फ़िरऔनियों के ख़तरे से उनकी जान की हिफ़ाज़त की ख़ातिर करते थे, यानी वह तक़ैय्ये पर अमल करते थे। क़ुरआने करीम ने उनके इस अमल को अज़ीम जानते हुए तारीफ़ की है।

4- इन आयतों के अलावा भी दूसरी आयतें हैं जो तक़ैय्ये के जाएज़ होने या उसके वाजिब होने पर दलील पेश करती हैं।

"अपने आपको हलाकत में न डालो।" (5)

ख़ुदा किसी को उससे ज़्यादा तकलीफ़ नहीं देता जितना उसे दिया है। (6)

"दीन में कोई ज़हमत नहीं रखी है।" (7)

तक़ैय्याः मासूमीन[अ॰] की हदीसों में

यहां तक साबित हो गया कि तक़ैय्या एक अक़्ली उसूल है, और यह इंसान की ज़िंदगी की ज़रूरतों में से एक ज़रूरत है, और इसे तमाम आसमानी मज़हबों ने क़ुबूल किया है, और मुसलमानों ने भी इस पर अमल किया है, लेकिन इसके बावजूद रिवायतों में इस पर ख़ास ध्यान दिया गया है और इसके लिए बहुत ताकीद की गई है। यहां तक कि रिवायात में इस तरह आया है, "जो तक़ैय्या नहीं करता उसके पास ईमान नहीं है, या जो तक़ैय्ये का क़ायल नहीं है उसके पास दीन नहीं है।"

इमाम बाक़िर[अ॰] ने फ़रमाया है, "तक़ैय्या हमारा और हमारे बाप-दादा का दीन है।"

अहलेबैत[अ॰] की उन तमाम रिवायतों को देखने से जो तक़ैय्ये के बारे में नक़ल हुई हैं, पता चलता है कि अहलेबैत[अ॰] ने दो तरह के तक़ैय्ये को बयान किया है, और दो तरह के तक़ैय्ये की अपने शीयों को ताकीद की है।

एक ख़ौफ़ी तक़ैय्या, और दूसरा मुदाराती तक़ैय्या, वैसे ख़ौफ़ी तक़ैय्ये के बारे में ज़्यादा रिवायतें वारिद हुई हैं। ख़ौफ़ी तक़ैय्या कभी अपनी जान, इज़्ज़त व आबरू व माल के ख़तरे से जुड़ा होता है, और कभी दूसरे मोमिन या रिश्तेदारों की जान व माल व इज़्ज़त व आबरू से, और कभी इस्लाम और मज़हब से जुड़ा होता है, लेकिन मुदाराती तक़ैय्या उस जगह होता है जब जान, माल, इज़्ज़त, मज़हब के बारे में कोई डर न पाया जाता हो, लेकिन तक़ैय्ये के ज़रिए इंसान बेहतर तरीक़े से अपनी दीनी ज़िम्मेदारी को पूरा कर सकता हो। उसके ज़रिए दूसरों की हिदायत और इस्लामी युनिटी को बेहतर अंदाज़ में कर सकता हो। इसलिए रिवायात में जिस जगह तक़ैय्ये को ढाल और संग बताया गया है उस जगह ख़ौफ़ी तक़ैय्या मुराद है, और वह रिवायात जिनमें अच्छे समाज और पसंदीदा अख़्लाक़ से पेश आने की ताकीद की गई है वहाँ ज़्यादा तर मुदाराती तक़ैय्ये के बारे में बात की गई है।

हिशाम बिन हकम इमाम जाफ़र सादिक़[अ॰] से रिवायत नक़ल करते हैं कि इमाम ने फ़रमाया कि ऐसे काम मत करो जिनकी वजह से हमें बुरा कहा जाए, क्योंकि नालायक़ औलाद ऐसे काम करती है जिसकी वजह से उसके बाप को बुरा कहा जाता है। इसलिए तुम्हारा जिससे ताल्लुक़ है उसके लिए ज़ीनत का सबब बनो और उसके लिए बुराई की वजह मत बनो। उनकी जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ो, उनके बीमारों की अयादत करो, उनके ज़नाज़े में जाओ, देखो किसी भी नेक काम में वह लोग तुम से बाज़ी न ले जाएं। फिर आपने फ़रमाया कि ख़ुदा की क़सम उसकी इबादत, ख़बा से महबूब तरीन किसी और चीज़ के ज़रिए नहीं हुई। हिशाम ने पूछा कि ख़बा क्या है?इमाम ने फ़रमाया कि ख़बा से मुराद तक़ैय्या है।

शियों को तक़ैय्ये की ज़रूरत

इस्लामी दुनिया में शिया क़ौम को हमेशा ग़ैर शिया ज़ालिम हुकूमतों ने अपने बेइंतिहा ज़ुल्म का निशाना बनाया है। इस क़ौम को जहां तक हो सका दबा कर रखा गया, उसे तरह-तरह की तकलीफ़ें दी गईं, उस पर ज़ुल्म व सितम के पहाड़ ढाए, और यह हालत मासूमीन[अ॰] के दौर में जब बनी उमैय्या और अब्बासियों के हाथ में ताक़त और हुकूमत थी, बहुत ज़्यादा रही। उस ज़माने में दिल दहलाने वाले सितम ढाए गए, उस ज़माने में शियों को न किसी क़िस्म की समाजी और सियासी कोई आज़ादी नहीं थी, और कुछ जगहों पर तो अलवी ख़ानदान से सिर्फ़ जुड़ाव रखना भी सबसे बड़ा सियासी गुनाह माना जाता था। ज़ाहिर है कि ऐसे मौक़ों पर शीईयत का बाक़ी रहना, तक़ैय्ये के अलावा और किसी चीज़ से मुमकिन नहीं हो सकता था। जब इन हालात को सामने रखा जाएगा तब मासूमीन की दूरअंदेशी का अंदाज़ा होगा। मासूमीन[अ॰] ने इस तरीक़े को अपनाकर दीन की सच्चाई को लोगों तक पहुंचाया और जो दीन में तबदीलियाँ कुछ लोगों की तरफ़ से जानबूझकर या

उन लोगों में से न हो जाओ...!

1- जो ग़ुरबत आने पर मायूस और सुस्त हो जाते हैं।

2- गुनाह और दुनियावी नेमतों में डूब जाते हैं, नेमत पर नेमतें चाहते हैं मगर उनका शुक्र अदा नहीं करते।

3- दूसरों के ज़ाहिरी ऐबों को तो देखते हैं मगर अपने ऐब जो उन से भी ज़्यादा होते हैं उन से आंखें मूंद लेते हैं...।

4- जिनके शौक़ कभी पूरे नहीं होते और जिनको डर से कभी निजात नहीं मिलती। इसलिए सवाल बढ़-चढ़ कर करते हैं लेकिन अमल को कम कर देते हैं।

5- बातें बड़ी ऊँची-ऊँची करते हैं मगर अमल में सबसे पीछे होते हैं।

6- जो अमल किया ही नहीं उसके फ़ाएदे की उम्मीद रखते हैं।

7- जो जुर्म किया है उसकी फ़िक्र भी नहीं करते।

8- फ़ना हो जाने वाली दुनिया की तरफ़ तेज़ी से भागते हैं और बाक़ी रहने वाली आख़िरत से अपनी जेहालत की वजह से मुँह मोड़ लेते हैं।

9- मौत से डरते हैं मगर नेक अमल की फ़ुरसत के हाथ से निकल जाने से नहीं डरते।

10- दूसरों के गुनाहों को बड़ा समझते हैं मगर अपने गुनाह जो उनसे भी ज़्यादा हैं उनको छोटा समझते हैं।

11- अपनी इबादतों को बहुत ज़्यादा और दूसरों की इबादतों को कम समझते हैं।

12- दूसरे के कम गुनाहों की तो फ़िक्र करते हैं मगर अपने नेक अमल से उम्मीद लगाए रहते हैं जो दूसरों के नेक आमाल से कम होते हैं।

13- दूसरों पर ताने मारते हैं मगर अपनी तारीफ़ करते हैं।

14- तंदुरुस्ती और अच्छे हालात में तो अमानतों को अदा करते हैं। मगर मुश्किल हालात में ख़यानत करने लगते हैं।

15- अच्छे हालात में गुमान करते हैं कि तौबा कर ली है और मुश्किल हालात में गुमान करते हैं कि यह उनके गुनाहों की सज़ा है।

16- रोज़ा रखने में देर मगर सोने में जल्दी करते हैं।

17- रातों को इबादत नहीं करते और दिन में रोज़ा नहीं रखते।

18- बग़ैर जागे सुबह का इंतेज़ार और बग़ैर रोज़े रखे शाम का इंतेज़ार करते हैं।

19- अपने मातहतों से ख़ुदा की पनाह चाहते हैं जबकि अपने ऊपर वालों से ख़ुदा की पनाह नहीं चाहते। ●

(नेहजुल बलाग़ा)

अंजाने में हो रही थीं उनसे बेहतरीन अंदाज़ में मुक़ाबला किया, और शिया मज़हब को महफ़ूज़ रखा, अगरचे इसमें आप लोगों को बहुत ज़्यादा क़ुरबानी देना पड़ी और हद से ज़्यादा मुसीबतों का सामना करना पड़ा, लेकिन आप हज़रात ने इस तरह इस्लाम की रूह को बचा लिया।

जहाँ तक़ैय्या करना सही नहीं है

जैसा कि हमने बयान किया कि तक़ैय्या (ख़ास तौर से डर वाला तक़ैय्या) की हैसियत दूसरी है, और इस तक़ैय्ये का असल मक़सद जान, माल, इज़्ज़त व आबरू और दीन व शरीअत की हिफ़ाज़त करना है, इसलिए अगर तक़ैय्ये से कहीं यह मक़सद हासिल न होता बल्कि इसका उलटा नतीजा ज़ाहिर होता हो तो ऐसी जगहों पर तक़ैय्या करना हराम है। यहां हम इमाम ख़ुमैनी के कलाम को जो तक़ैय्या के हराम होने के बारे में है नक़ल करते हैं:

1- वह हराम और वाजिब जिनकी इस्लाम की नज़र में ख़ास अहमियत है उनमें तक़ैय्या करना सही नहीं है, जैसे काबा और मक़ामाते मुक़द्दसा को वीरान करने में तक़ैय्या करना, क़ुरआन और इस्लाम को रद करने में, या ऐसी तफ़सीर करे जो हक़ीक़ते दीन को बदल दे।

2- वह शख़्स जो तक़ैय्ये के बारे में मुसलमानों में एक ख़ास मक़ाम रखता है, कि अगर यह तक़ैय्या हराम काम या तर्के वाजिब में करे तो मज़हब और दीन की तौहीन होती है, ऐसे शख़्स पर तक़ैय्या हराम है, शायद इसी वजह से इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] ने फ़रमाया था, "मैं शराब पीने में हरगिज़ तक़ैय्या नहीं करूंगा।"

3- जब भी इस्लाम की कोई असल या दीन की ज़रूरतें तक़ैय्या करने से ख़तरे में पड़ जाए तो तक़ैय्या जाएज़ नहीं है, जैसे ज़ालिम हुकूमतें मीरास, तलाक़, नमाज़ या हज के एहकाम बदल दें, तो ऐसे मौक़ों पर तक़ैय्या जाएज़ नहीं है।

1-आले इमरान/28, 2-नहल/106, 3-मोमिन/28, क़सस/20, तलाक़/7 ●

आज ही ممبر بنئے
زرسالانہ
Rs.150

دوماہی مؤمّل لکھنؤ

उमदा तबाअत	عمدہ طباعت
आसान ज़बान	آسان زبان
क़ुर्आनी मालूमात	قرآنی معلومات
अख़्लाक़ी बातें	اخلاقی باتیں
आर्ट गैलरी	آرٹ گیلری
इस्लामिक पज़ल	اسلامک پزل
कामिक्स	کامکس

द्विमासिक लखनऊ
मुअम्मल
MUAMMAL
AL-MU'AMMAL CULTURAL FOUNDATION
546/203 Near Era's Lucknow Medical College
Sarfarazganj, Hardoi Road, Lucknow-3 U.P. (India)
Ph.: 0522-2405646, 9839459672
email: muammal@al-muammal.org

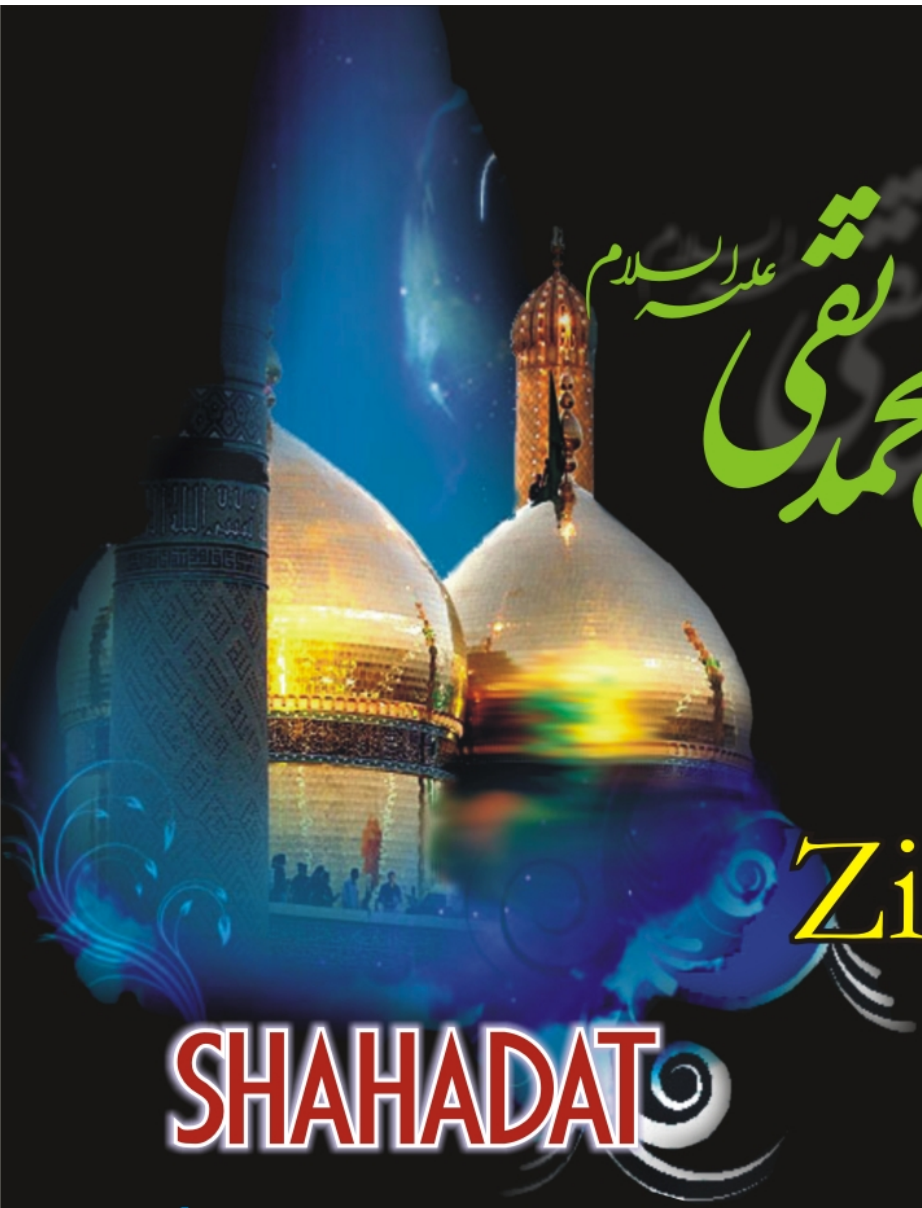

امام محمد تقی علیہ السلام

29 Ziqadah

SHAHADAT

imam MOHAMMAD TAQI a.s.

इमाम मोहम्मद तक़ी अ0 फ़रमाते हैंः

मोमिन को 3 चीज़ों की ज़रूरत हैः

1–ख़ुदा की तरफ़ से तौफ़ीक़

2–ज़िन्दा ज़मीर

3–नेक लोगों की नसीहतें।

सूरए हम्द

आयतुल्लाह मकारिम शीराज़ी

इस सूरे में कुरआन मजीद के दूसरे सूरों के मुक़ाबले में बहुत सी ख़ासियतें हैं। जिसकी वजह नीचे लिखी बातें और ख़ूबियाँ हैं:

1- सूरे की ज़बान: यह सूरह दूसरे सूरों से इस लिहाज़ से ख़ास है कि दूसरे सूरों में ख़ुदा की ज़बान में बातें होती हैं और यह बंदों की ज़बान में नाज़िल हुआ है। दूसरे लफ़्ज़ों में इसमें ख़ुदावंदे आलम ने बंदों को ख़ुदा से बात और मुनाजात का तरीक़ा सिखाया है।

सूरे की शुरुआत ख़ुदावंदे आलम की तारीफ़ से की गई है। ख़ुदा की मारेफ़त और क़यामत और ईमान पर बात करते-करते आगे बंदों की हाजतों और ज़रूरतों पर सूरे को ख़त्म किया गया है।

एक समझदार इन्सान जब इस सूरे को पढ़ता है तो उसे यूँ महसूस होता है जैसे वह फ़रिश्तों के परों पर सवार होकर आसमानों की तरफ़ उड़ा जा रहा है और आलमे रूहानियत में ख़ुदा से ज़्यादा से ज़्यादा क़रीब होता जा रहा है।

मज़े की बात यह है कि लोगों के बनाए हुए मज़हब जिनकी असली शक्ल तक बिगड़ चुकी है और जो इंसान और ख़ुदा के बीच एक वास्ते के क़ाएल हैं, उनके मुक़ाबले में इस्लाम इस सूरे में इन्सानों को किसी भी वास्ते के बग़ैर ख़ुदा से अपना राब्ता बनाकर रखने की तालीम देता है। ख़ुदा व इन्सान और ख़ालिक़ व मख़लूक़ के बीच इस नज़दीकी और डायरेक्ट ताल्लुक़ के सिलसिले में यह सूरह आईने का काम देता है। यहाँ इन्सान सिर्फ़ ख़ुदा को देखता है। उसी से बात करता है और सिर्फ़ उसी का पैग़ाम अपने कानों से सुनता है। यहाँ तक कि कोई रसूल या फ़रिश्ता भी बीच में वास्ता नहीं बनता। कितनी अजीब बात है कि ख़ालिक़ और मख़लूक़ के बीच एक पुल की हैसियत रखने वाले इसी सूरे से कुरआन करीम की शुरूआत होती है।

2- कुरआन की बुनियाद: रसूले इस्लाम[स०] के मुताबिक़ सूरए हम्द उम्मुल किताब (फ़ाउंडेशन ऑफ़ कुरआन) है। एक बार जाबिर बिन अब्दुल्लाह अंसारी रसूल[स०] के पास आए तो आप ने फ़रमाया, "क्या तुम्हें सबसे फ़ज़ीलत वाले सूरे की तालीम दूँ जो ख़ुदा ने अपनी किताब में नाज़िल फ़रमाया है? जाबिर ने कहा कि जी हाँ! ज़रूर। रसूल[स०] ने सूरए हम्द उन्हें सुनाया और यह भी कहा कि सूरए हम्द मौत के अलावा हर बीमारी के लिए शिफ़ा है।[1]

रसूल[स०] का यह भी इरशाद है, "क़सम है उस ज़ात की जिसकी क़ुदरत में मेरी जान है ख़ुदावंदे आलम ने तौरेत, इंजील, ज़बूर यहाँ तक कि कुरआन में भी ऐसा कोई सूरह नाज़िल नहीं किया और यह उम्मुल किताब (फ़ाउंडेशन ऑफ़ कुरआन) है।[2] हक़ीक़त में यह सूरह पूरे कुरआन की इंडेक्स है। इसका एक हिस्सा तौहीद और ख़ुदा की सिफ़तों के बारे में है दूसरा हिस्सा क़यामत के बारे में और तीसरा हिस्सा हिदायत व गुमराही को बयान करता है जो मोमिनीन और बेदीनों में फ़र्क़ को बताता है।

इस सूरे में ख़ुदा की क़ुदरत और ख़ुदाई का बयान है साथ ही उसकी अंगिनत नेमतों की तरफ़ भी इशारा है जिनके दो हिस्से हैं: एक आम और दूसरा ख़ास (रहमानियत और रहीमियत)। इसमें इबादत व बंदगी की तरफ़ भी इशारा है। हक़ीक़त यह है कि इस सूरह में तौहीदे ज़ात (उसकी ज़ात के एक होने), तौहीदे सिफ़ात (उसकी सिफ़तों और ज़ात के दो अलग-अलग चीज़ें न होने), तौहीदे अफ़आल (उसकी ज़ात और अफ़आल के एक होने) और तौहीदे इबादत (उसकी ज़ात ही इबादत के लायक़ होने) सब को बयान किया गया है। दूसरे लफ़्ज़ों में यह सूरह ईमान की तीनों स्टेज को बयान करता है:

1- दिल से एतेक़ाद रखना 2- ज़बान से क़ुबूल करना 3- जिस्म से अमल करना।

उम्मुल किताब का मतलब: हम जानते हैं कि उम यानी बुनियाद और जड़। शायद इसी वजह से मशहूर मुफ़स्सिर इब्ने अब्बास कहते हैं, "हर चीज़ की कोई न कोई बुनियाद होती है और कुरआन की बुनियाद सूरए फ़ातेहा है।"

इन्हीं वजहों से इस सूरे की फ़ज़ीलत के बारे में रसूल[स०] की हदीस है, "जो मुसलमान सूरए हम्द पढ़े उसका सवाब उस शख़्स के बराबर है जिसने दो तिहाई कुरआन की तिलावत की हो और उसे इतना सवाब मिलेगा जैसे उसने हर मोमिन और मोमिना को हदिया पेश किया हो। एक और हदीस में पूरे कुरआन की तिलावत के बराबर सवाब का भी ज़िक्र है।

सूरए फ़ातेहा के सवाब को दो तिहाई कुरआन

की तिलावत के बराबर बताने की वजह शायद यह हो कि क़ुरआन के एक हिस्से का ताल्लुक़ ख़ुदा से है, दूसरे का क़यामत से और तीसरे का अहकाम से। उनमें से पहला और दूसरा हिस्सा सूरए हम्द में मौजूद है। दूसरी हदीस में पूरे क़ुरआन के बराबर बताया गया है जिसकी वजह यह है कि क़ुरआन का खुलासा ईमान और अमल है और यह दोनों चीज़ें सूरए हम्द में जमा हैं।

3- पैग़म्बरे अकरम[स॰] के लिए मोजिज़ाः यह बात ध्यान देने की है कि क़ुरआनी आयतों में सूरए हम्द को रसूल[स॰] के लिए एक अज़ीम इनाम के तौर पर बताया गया है और इसे पूरे क़ुरआन के मुक़ाबले में पेश किया गया है जैसा कि क़ुरआन में है, **''हम ने आपको सात आयतों वाला सूरए हम्द अता किया जो दो बार नाज़िल किया गया और क़ुरआने अज़ीम भी दिया गया।''**[3]

क़ुरआन मजीद अपनी सारी अज़मत के बावजूद यहाँ सूरए हम्द के बराबर ठहराया गया है। इस सूरे का दो बार नाज़िल होना भी इसकी बहुत ज़्यादा अहमियत की बिना पर है।

4- तिलावत की ताकीदः सूरए हम्द की फ़ज़ीलतों के बाद यह बात साफ़ हो जाती है कि शिया व सुन्नी दोनों की हदीसों में इसकी तिलावत के बारे में इतनी ताकीद क्यों की गई है। इसकी तिलावत इन्सान को ईमानी रूह बख़्शती है और उसे ख़ुदा के नज़दीक करती है। इस से दिल को सुकून मिलता है और रूहानियत पैदा होती है। इस से इन्सानी इरादा मज़बूत होता है। इस सूरे की तिलावत से ख़ालिक़ व मख़लूक़ के बीच का रिश्ता मज़बूत होता है। साथ ही इन्सान गुनाहों से भी दूर हो जाता है। इसी वजह से इमाम सादिक़[अ॰] ने फ़रमाया है, ''शैतान ने चार बार फ़रियाद की। पहला वह मौक़ा था जब उसे ख़ुदा की बारगाह से निकाला गया। दूसरा वह वक़्त था जब उसे जन्नत से ज़मीन की तरफ़ उतारा गया। तीसरा वह लम्हा था जब रसूल[स॰] को मबऊस किया गया और आख़िरी वह मुक़ाम था जब

سُوْرَةُ الْفَاتِحَةِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ سَبْعُ اٰيٰتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ﴿۱﴾ الرَّحْمٰنِ
الرَّحِيْمِ ۙ﴿۲﴾ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ؕ﴿۳﴾ اِيَّاكَ نَعْبُدُ
وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ؕ﴿۴﴾ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ
الْمُسْتَقِيْمَ ۙ﴿۵﴾ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ
غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ﴿۷﴾

-ख़ुदा के नाम से जो रहमान और रहीम है।(1)

-सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए जो आलमीन का पालने वाला है (2)

-वह अज़ीम और हमेशा बाक़ी रहने वाली रहमतों वाला है (3)

-क़यामत के दिन का मालिक है (4)

-परवरदिगार! हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझ ही से मदद चाहते हैं।(5)

-हमें सीधे रास्ते की हिदायत फ़रमाता रह! (6)

-जो उन लोगों का रास्ता है जिन पर तूने नेमतें नाज़िल की हैं, उनका रास्ता नहीं जिन पर ग़ज़ब नाज़िल हुआ है या जो बहके हुए हैं (7)

सूरए हम्द को नाज़िल किया गया।[4]

सूरए हम्द के मौज़ूआत

इस सूरे की सात आयात में से हर एक, एक ख़ास मक़सद की तरफ़ इशारा करती हैः

बिस्मिल्लाहः यह हर काम की शुरुआत का नाम है और हर काम को शुरु करते वक़्त हमें ख़ुदा की ज़ात से मदद माँगने की तालीम देती है।

अल-हम्दो लिल्लाहे रब्बिल आलमीनः यानी सारी नेमतें और हर मख़लूक़ की परवरिश व तरबियत सिर्फ़ अल्लाह के साथ है। इस दुनिया की हर नेमत का सोर्स ख़ुदा की ज़ात के अलावा और कुछ नहीं है।

अर-रहमा-निर-रहीमः यह इस बात की तरफ़ इशारा है कि ख़ुदा की ख़िलक़त, तरबियत और हाकिमियत की बुनियाद रहमत और करम पर है और दुनिया का सिस्टम इसी क़ानून पर चल रहा है।

मालिकि यौमिद्दीनः यह आयत क़यामत, आमाल की जज़ा व सज़ा और उस अज़ीम अदालत में ख़ुदावंदे आलम की हाकिमियत की तरफ़ ध्यान दिलाती है।

इय-या-क नअ्-बुदु व इय-या-क नस्तईनः यह तौहीदे इबादी की तरफ़ इशारा है यानी सिर्फ़ उसी को इबादत के क़ाबिल माना है और इन्सानों के लिए उस अकेली ज़ात का तज़किरा है जो सबका आसरा और सहारा है।

इहदि-नस-सिरातल मुस्तक़ीमः यह आयत बंदों की हिदायत और उनके हिदायत के शौक़ को बयान करती है। यह आयत इस तरफ़ भी ध्यान दिलाती है कि हर क़िस्म की हिदायत बस ख़ुदा ही की तरफ़ से है।

सूरे की आख़िरी आयत इस बात की खुली निशानी है कि सिराते मुस्तक़ीम से मुराद उन लोगों का रास्ता है जिन्हें ख़ुदाई नेमतें दी गई हैं और यह रास्ता गुमराहों के रास्ते से अलग है।

एक लिहाज़ से यह सूरह दो हिस्सों में बंट जाता है। एक हिस्सा ख़ुदा की हम्द और तारीफ़ और दूसरा बंदे की ज़रूरतों और हाजतों के बारे में है इस सिलसिले में रसूले इस्लाम[स॰]

से एक हदीस भी है। आप ने फ़रमाया, ख़ुदावंदे आलम का इरशाद है कि मैंने सूरए हम्द को अपने और अपने बंदों के बीच बांट दिया है। इसलिए मेरा बंदा हक़ रखता है कि वह जो चाहे मुझ से माँगे। जब बंदा कहता है ''बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम'' तो ख़ुदा फ़रमाता है कि मेरे बंदे ने मेरे नाम से शुरुआत की है इसलिए ज़रूरी है कि मैं उसके कामों को आख़िर तक पहुँचा दूँ और उसे हर हालत में बरकत अता कर दूँ। जब वह कहता है ''अल-हम्दो लिल्लाहे रब्बिल आलमीन'' तो ख़ुदा फ़रमाता है मेरे बंदे ने मेरी हम्द और तारीफ़ की है। उसने समझा है कि जो नेमतें उसके पास हैं वह मेरी दी हुई हैं। इसलिए मैं मुसीबतों को उस से दूर किए देता हूँ। गवाह रहो कि मैं दुनिया की नेमतों के अलावा उसे आख़िरत में भी नेमतें दूँगा और उस दुनिया की मुसीबतों से भी उसे निजात दूँगा जैसे इस दुनिया की मुसीबतों से उसे निजात दी है। जब वह कहता है ''अर-रहमानिर-रहीम'' तो ख़ुदा फ़रमाता है कि मेरा बंदा गवाही दे रहा है कि मैं रहमान व रहीम हूँ। गवाह रहो कि मैं उसके हिस्से में अपनी रहमत और करम ज़्यादा किए देता हूँ। जब वह कहता है ''मालिकि यौमिद्दीन'' तो ख़ुदा फ़रमाता है कि गवाह रहो। जिस तरह उसने क़यामत के लिए मेरी हाकमियत व मालिकियत को क़ुबूल किया है, हिसाब व किताब के दिन में उसके हिसाब व किताब को आसान कर दूँगा। उसकी नेकियों को क़ुबूल कर लूँगा और उसकी बुराईयों को नज़र अंदाज़ कर दूँगा। जब वह कहता है ''इय्या-क नअ्बुदु'' तो ख़ुदा फ़रमाता है कि मेरा बंदा सच कह रहा है कि वह सिर्फ़ मेरी इबादत करता है। मैं तुम्हें गवाह बनाता हूँ कि इस ख़ालिस इबादत पर मैं उसे ऐसा सवाब दूँगा कि वह लोग जो उसके मुख़ालिफ़ थे उस पर रश्क करेंगे। जब वह कहता है ''इय्या-क नस्तईन'' तो ख़ुदा फ़रमाता है कि मेरे बंदे ने मुझ से मदद चाही है और सिर्फ़ मुझ से पनाह माँगी है। गवाह रहो कि इसके कामों में, मैं उसकी मदद करूँगा। सख़्तियों और तंगियों में उसकी फ़रियाद को पहुँचुंगा और परेशानी के दिन उसकी मदद करूँगा। जब वह कहता है ''इह्दिनस-सिरातल मुस्तक़ीम... वलज़्ज़ाल्लीन'' तो ख़ुदावंदे आलम फ़रमाता है कि मेरे बंदे की यह ख़्वाहिश पूरी हो गई है। अब जो कुछ वह चाहता है मुझ से माँगे मैं उसकी दुआ क़ुबूल करूँगा। जिस चीज़ की उम्मीद लगाए बैठा है वह उसे दे दूँगा और जिस चीज़ से डरा हुआ है उस से बचा लूँगा।[5]

1-मजमउल बयान, सूरए हम्द के शुरु की बहस, 2-मजमउल बयान, सूरए हम्द की शुरु की बहस, 3-सूरए हिज्र/87, 4-नूरूस्सक़लैन, 1/4, 5-अल-मीज़ान, 1/73 ●

'मरयम' की गिफ़्ट कूपन स्कीम को नवम्बर 2012 से बढ़ाकर जनवरी 2013 कर दिया गया है।

इसलिए अब ड्रॉ फ़रवरी 2013 में होगा जिसके लिए कूपन भेजने की तारीख़ का एलान जल्दी ही किया जाएगा।

'मरयम' के सभी रीडर्स से हमारी गुज़ारिश है कि कूपन मंगाए जाने के एलान से पहले कूपन न भेजें।

अगर हम अपने किसी रिश्तेदार या दोस्त के नाराज़ होने पर उससे माफ़ी मांगें तो इससे यह साबित नहीं होता कि हम ग़लत और वह सही है। बल्कि हमारी माफ़ी साबित करती है कि हम में रिश्ते और दोस्ती निभाने की क़ाबिलियत उनसे ज़्यादा है।

(aleyhashim@yahoo.co.in)

ख़ुदकुशी

■ अनम रिज़वी

ज़िंदगी ख़ुदा का एक अनमोल तोहफ़ा है जिसकी हिफ़ाज़त करना हमारा फ़र्ज़ है। दुनिया में बहुत से लोग हैं, कुछ ज़िंदगी से बेहद ख़ुश हैं और कुछ बेहद नाराज़। हर दम बस यही सोचते रहते हैं कि आख़िर हम इस दुनिया में आए ही क्यों?

यह थिंकिंग इन्सान के दिल में तभी आती है जब उसकी ज़िंदगी में ख़ुशियाँ कम और दुःख ज़्यादा हों मगर हम ध्यान दें तो ज़िंदगी इतनी बुरी भी नहीं है। छोटी-छोटी बातों में हमारी बड़ी-बड़ी ख़ुशियाँ छिपी रहती हैं पर हम इसकी तरफ़ ध्यान ही नहीं दे पाते क्योंकि अकसर दुख इतने हो जाते हैं कि ज़िंदगी की ख़ुशियाँ नज़र ही नहीं आतीं और ऐसे ही मुक़ाम पर आकर इन्सान सोचता है कि मौत को गले लगा लिया जाए जिससे हमारे सारे दुख ख़त्म हो जाएं लेकिन यह सोच ग़लत है क्योंकि अल्लाह ऐसी रूह को पसंद नहीं करता जिसने स्युसाइड की हो। एक बात और बता दूँ स्युसाइड करना हराम है और जो हराम काम करता है वह आख़िरत में अज़ाब का हक़दार है।

ज़िंदगी में कभी ऐसे मोड़ भी आ जाते हैं जहाँ लोग स्युसाइड को चुन लेते हैं जैसे बेइन्तेहा ग़रीबी, एग्ज़ाम्स में फ़ेल होना या प्यार में धोखा वग़ैरा।

ग़रीबी

जब इन्सान के पास खाने को नहीं होता और क़र्ज़ में डूब जाता है तो वह दूसरों के सामने हाथ फैलाता है, गिड़गिड़ाता है। जब सारे लोग उसकी मदद से इन्कार कर देते हैं तब इन्सान स्युसाइड को चुनता है मगर यह भूल जाता है कि एक और भी है जो उसकी मदद कर सकता है और वह है अल्लाह- रहमान व रहीम। इन्सान अपना सारा वक़्त दूसरों के सामने हाथ फैलाने में बर्बाद कर देता है लेकिन अगर उतना ही वक़्त मुसल्ला बिछाकर दो रकअत नमाज़ पढ़कर अल्लाह से माँगे तो अल्लाह उसे बेहिसाब अता करेगा और वह भी बिना शर्मिन्दगी के। अल्लाह से आस लगाकर रास्ता तलाश करे तो अल्लाह उसका साथ देगा क्योंकि ऐसा इन्सान तकलीफ़ों से घबराया नहीं बल्कि उस ने मुश्किलों का सामना किया और अल्लाह पर भरोसा किया। ऐसे इन्सान की अल्लाह ग़ैब से मदद करता है। दुनिया में बहुत से लोग ऐसे भी हैं जिनकी ज़िंदगी में एक ऐसा वक़्त भी था जब वह चाहते थे कि स्युसाइड कर लें पर अल्लाह पर भरोसा करके ज़िंदगी में आगे बढ़े और आज वह उस मुक़ाम पर हैं जहाँ वह बेहद ख़ुश हैं।

एग्ज़ाम्स में फ़ेल होना

फ़ेल होने पर स्युसाइड आज आम बात है। इन्सान फ़ेल होने पर अपने माँ-बाप का प्यार, ज़िंदगी की ख़ुशियाँ सब कुछ भुलाकर स्युसाइड का रास्ता चुनता है पर क्या यह सही है? अगर फ़ेल होने का इतना दुख होता है तो एग्ज़ाम्स से पहले इतना पढ़ ले कि Minimum Passing Marks आ जाएं। कुछ लोग पढ़ते तो हैं पर शायद उनका Luck साथ नहीं देता और फ़ेल हो जाते हैं लेकिन यहाँ सोचने वाली बात यह है कि क्या हम सिर्फ़ और सिर्फ़ पढ़ाई के लिए ज़िंदा हैं और क्या पढ़ाई हमारे माँ-बाप, भाई-बहन से बढ़कर है? इसका मतलब यह नहीं है कि हम पढ़ाई न करें बल्कि दिल लगाकर अच्छे से पढ़ाई करें, मेहनत करें, अल्लाह से दुआ माँगे इन्शाअल्लाह पास हो जाएंगे। हम अच्छी ज़िंदगी पाने के लिए पढ़ाई करते हैं न कि पढ़ाई के लिए ज़िंदा रहते हैं। फ़ेल होने पर दुख बहुत होता है कि साल बर्बाद हो गया, अब रिश्तेदार क्या कहेंगे या दोस्त क्या कहेंगे पर क्या मर जाने से रिश्तेदार ख़ुश होंगे? नहीं बिल्कुल नहीं! वह यही सोचेंगे कि आप पिछला सब कुछ भुला कर एक बार फिर पढ़ाई स्टार्ट करें, मेहनत

करें, और अपने माँ-बाप का नाम रौशन करें, जो इन्सान ख़ुद की मदद करता है अल्लाह भी उसकी मदद करता है। मेरी एक सहेली है जो हाईस्कूल में एक सब्जेक्ट में फ़ेल हो गई थी। उसे बहुत दुख हुआ पर उसने हिम्मत नहीं हारी। पढ़ाई स्टार्ट की और बहुत मेहनत की ख़ासकर उस सब्जेक्ट में जिसमें वह कमज़ोर थी और वह डिस्टिंकशन के साथ फ़र्स्ट डिवीज़न पास हुई और आज वह B.Tech कर रही है। अगर उस वक़्त उसने स्युसाइड कर ली होती तो क्या फ़ायदा होता? अब ज़िंदगी आपकी और फ़ैसला भी आपके हाथ में है।

प्यार में धोखा

हमारी ज़िंदगी में प्यार की एक अहम जगह होती है और जब प्यार ही धोखा दे दे तब इन्सान को सबसे ज़्यादा दुख होता है। वह सोचता है स्युसाइड कर ले पर क्या जिसने हमारे प्यार की अहमियत नहीं समझी ऐसे इन्सान के लिए जान देना सही है? वह इन्सान जिसने हमें धोखा दिया उस इन्सान के लिए स्युसाइड बिल्कुल ग़लत है क्योंकि हमारी ज़िंदगी भी बेहद क़ीमती है। वह इन्सान जिसने दूसरे के प्यार के लिए अपने माँ-बाप की बरसों की मोहब्बत भुला दी और स्युसाइड कर ली उसके जाने का दुख उसके माँ-बाप को बहुत होगा न कि उस इन्सान को जिसने उसे धोखा दिया और हुआ भी तो क्या फ़ायदा क्योंकि मरने वाला इस दुनिया से बहुत दूर जा चुका है और वह इन्सान कुछ वक़्त बाद अपनी नई ज़िंदगी शुरु कर देगा। आख़िर हम अपनी क़ीमती ज़िंदगी दूसरे के लिए क्यों बर्बाद करें। धोखा मिलने पर दुख ज़रूर होता है पर इसका मतलब यह नहीं है कि हम अपनी जान दे दें! इसके अलावा भी ज़िंदगी है जो बेहद हसीन है, ज़िंदगी में आगे बढ़ें और अल्लाह पर भरोसा करें।

हमारे इस्लाम ने स्युसाइड जैसे हराम काम पर सख़्त पाबंदी लगाई है। स्युसाइड करना हराम है बल्कि इसके बारे में सोचना भी ग़लत है। इन्सान जब किसी को तोहफ़ा देता है तो सोचता है कि तोहफ़ा लेने वाला तोहफ़े का ध्यान रखेगा और अगर यह तोहफ़ा फेंक दिया जाए तो देने वाले को कैसा लगेगा?

वह अल्लाह जिसने हमें बेशक़ीमत ज़िंदगी दी और इन्सान उसी ज़िंदगी को ख़त्म करने की कोशिश करे तो क्या अल्लाह इसे पसंद करेगा?

अल्लाह ने हमें ज़िंदगी दी और मौत भी अल्लाह के हाथ में है। हमारा फ़र्ज़ है कि इस ज़िंदगी का ध्यान रखें और अगर कोई ग़म आ भी जाए तो अल्लाह से दुआ करें क्योंकि वही ग़मों को दूर करने वाला है। स्युसाइड किसी भी परेशानी का हल नहीं है और इस्लाम स्युसाइड जैसे गुनाह को बदतरीन गुनाह मानता है। ●

दादी की पिटारी

रेफ़्रिजरेटर को साफ़ रखिए

अगर आप शहर से बाहर जा रही हैं और लम्बे टाइम रेफ़्रिजरेटर को बंद रखना चाहती हैं तो सबसे पहले उसे साफ़ करके सुखा लीजिए। सुखाने के बाद उसके अंदर काफ़ी सारा टेलकम पाउडर छिड़क दें। लम्बे टाइम तक बंद रखने के बाद भी उसके अंदर न फफूंद लगेगी और न कीड़े-मकोड़े होंगे।

चूहे भगाइए

अगर आप चाहती हैं कि आपका घर चूहों से साफ़ हो जाए तो घोड़े की दुम के बाल काट कर क़ैंची से बारीक करके आटे में मिलाकर गोलियां बना लें और उनको घर में बिखेर दें। चूहे यह गोलियां खाकर भाग जाएंगे क्योंकि घोड़े के बाल चूहे के पेट और आंतों में चुभन पैदा कर देते हैं जिनकी वजह से उनको चैन नहीं आता और इस तरह घर चूहों से साफ़ हो जाता है।

डैंड्रफ़ भगाईए

एक कप बिना बालाई के दूध में एक अंडा डाल कर अच्छी तरह फेंट लें और पांच मिनट तक सर पर लगाने के बाद सर धो लें। ऐसा हफ़्ते में एक बार करें। इससे न सिर्फ़ डैंड्रफ़ दूर हो जाएगी बल्कि बाल भी चमकदार हो जाएंगे। डैंड्रफ़ ख़त्म करने का दूसरा तरीक़ा यह है कि नीम की 30-35 पत्तियां बारीक पीस कर डेढ़ कप दही में अच्छी तरह मिक्स कर लें। अब यह पेस्ट बालों की जड़ों में लगाएं। इंशाअल्लाह अच्छा रिज़ल्ट मिलेगा।

पेट के कीड़ों के लिए

बच्चों के पेट के कीड़ों के लिए एक आज़माया हुआ नुस्ख़ा यह है: ख़ालिस शहद 10 ग्राम, गुलाब जल, सौंफ़ का रस, पोदीने का रस (यह सब 20-20 ग्राम) चारों को अच्छी तरह मिलाकर मिक्सचर बना लें और बच्चे को दिन में तीन-चार बार चटाएं। पेट के कीड़ों और दर्द दोनों के लिए बेहद अच्छा है। नहार मुंह रोज़ाना कम से कम एक ग्लास गाजर का जूस भी पेट के कीड़ों को ख़त्म करने के लिए बेहद फ़ाएदेमंद है।

बांस की चीज़ें साफ़ करने की तरकीब

बांस से बनी हुई चीज़ों को नमक मिले हुए पानी से धोएं तो वह बिल्कुल चमक जाती हैं।

पेड़ों और पौधों के अच्छी तरह फलने-फूलने के लिए

अगर पेड़ों और पौधों को ऐसा पानी दिया जाए जिसमें चावल धोए गए हों तो यह पौधों और पेड़ों के बढ़ने के लिए बेहतरीन नुस्ख़ा है।

नज़ला दूर कीजिए

कभी-कभी नज़ले से हम बहुत परेशान हो जाते हैं। इसके लिए एक बेहतरीन नुस्ख़ा यह है कि दो बड़े चम्मच गेहूं की भूसी या गेंहूं का दलिया लेकर चार ग्लास पानी में ख़ूब पकाईए। जब एक ग्लास रह जाए तो थोड़ी सी पत्ती डाल दें। फिर छान कर एक चुटकी नमक डाल कर रात को सोते वक़्त गर्म-गर्म पी लें। इंशाअल्लाह नज़ला ठीक हो जाएगा। ●

फ़ितरत का रास्ता

■ अल्लामा तबातबाई

नेचुरली हम हर नई चीज़ को पुरानी चीज़ के मुक़ाबले पसंद करते हैं और हर चीज़ के नए-पन को उसके पुराने-पन पर तरजीह देते हैं लेकिन बहरहाल यह कोई आम क़ानून नहीं है और इस को हर जगह लागू नहीं किया जा सकता। मिसाल के तौर पर "दो और दो चार" जो लाखों और हज़ारों साल से ऐसे ही चला आ रहा है और इसे पुराना समझ कर दूर नहीं फेंका जा सकता!

यह नहीं कहा जा सकता कि इन्सानों की समाजी ज़िंदगी अब पुरानी हो चुकी है, इस सिलसिले में एक नया मंसूबा तैयार करके नई समाजी ज़िंदगी का आग़ाज़ किया जाना चाहिए। यह नहीं कहा जा सकता कि मुल्की क़ानून जो काफ़ी हद तक इन्सान की आज़ादी पर पाबंदियाँ लगाते हैं, अब पुराने हो चुके हैं और लोग उन से तंग आ चुके हैं उन्हें बदला जाना चाहिए। इस वक़्त जबकि इन्सान स्पेस तक पहुँच चुका है और सितारों के हालात जानने के लिए सेटेलाइट भेज रहा है इसलिए एक नई राह अपनानी चाहिए और क़ानून, क़ानून बनाने वालों और क़ानून लागू करने वालों के चंगुल से आज़ाद होना चाहिए।

ज़ाहिर है कि यह बातें बेबुनियाद और अहमक़ाना हैं। ऊपर की सारी बातों पर ग़ौर करने के बाद एक सवाल यह पैदा होता है कि "क्या इस्लाम मौजूदा हालात में इन्सानियत और दुनिया के सिस्टम को चला सकता है?" यह सवाल भी अपनी जगह पर अजीब व ग़रीब है। "इस्लाम" यानी वह क़ानून और उसूल जो इन्सानों की ख़ास फ़ितरत के मुताबिक़ हैं और इन्सान की हक़ीक़ी ज़रूरतों को पूरा करते हैं।

साफ़ सी बात है कि इन्सान के इन्सान होने की हद तक उसकी इन्सानी फ़ितरत नहीं बदलती और इन्सान जहाँ भी और जिस हालत में भी ज़िंदगी बसर करता हो वह अपनी इन्सानी फ़ितरत पर ही चलेगा। फ़ितरत ने उसके सामने एक रास्ता

मरयम
Oct 2012
Monthly Coupon
ड्रॉ में शामिल होने के लिए
10 कूपन जमा करके हमें भेजिए।

فِطۡرَتَ اللّٰہِ الَّتِی

فَطَرَ النَّاسَ عَلَیۡہَا لَا تَبۡدِیۡلَ لِسُنَّۃ

बनाया है, चाहे वह उस पर चले या न चले।

हक़ीक़त में ऊपर वाले सवाल के मायने यह हैं कि अगर इन्सान नेचर के बनाए हुए रास्ते पर चले तो क्या वह अपनी नेचरल ख़ुशहाली को पा सकता है और अपनी नेचरल आरज़ुओं तक पहुँच सकता है? या मिसाल के तौर पर अगर कोई पेड़ अपनी नेचरल राह पर चले तो क्या वह अपनी फ़ितरी मंज़िल तक पहुँच सकता है?

इस्लाम, यानी नेचरल रास्ता, हमेशा इन्सान का असली रास्ता है जो उसकी ज़िंदगी के अलग-अलग हालात के पेशे नज़र नहीं बदलता है। ख़ुदा फ़रमाता है, ''आप अपने रुख़ को दीन की तरफ़ रखें और बातिल से किनारा-कश रहें कि यह दीन वह इलाही फ़ितरत है जिस पर उसने इन्सानों को पैदा किया है और ख़ुदा की ख़िलक़त में कोई तबदीली नहीं हो सकती है। यक़ीनन यही सीधा और मुस्तहकम दीन है।''

यानी इस दुनिया में हर चीज़ की अपनी ज़िंदगी और बाक़ी रहने के लिए एक ख़ास सिस्टम और ख़ास रास्ता तै है और वह अपनी ज़िंदगी की राह में अपनी मंज़िल तक पहुँचने के लिए एक तै रास्ते पर चल रही है और उसकी कामयाबी इसी में है कि अपनी ज़िंदगी की इस राह में किसी रुकावट के बग़ैर अपनी मंज़िल तक पहुँच जाएं।

दूसरे अलफ़ाज़ में अपनी ज़िंदगी के रास्ते को अपने वजूद में पाए जाने वाले रिर्सोसेज़ का इस्तेमाल करते हुए किसी रुकावट के बग़ैर तै करके अपनी मंज़िल तक पहुँच जाए।

गेहूँ का दाना अपने सफ़र में एक ख़ास रास्ता तै करता है। इसके अंदर पाया जाने वाला सिस्टम गेहूँ के पौधे के बढ़ने के लिए ज़रूरी चीज़ों को एक तै मिक़दार और निस्बत में एब्ज़ार्ब करके गेहूँ के पौधे को फलदार बना देता है।

गेहूँ का पौधा फलदार बनने के लिए जिन फ़ैक्टर्स और सिस्टम का मोहताज है वह कभी बदलने वाला नहीं है। मिसाल के तौर पर कभी ऐसा नहीं होता है कि गेहूँ का पौधा थोड़ा सा बढ़ने के बाद ही अचानक एक सेब के पेड़ में बदल जाए और उसकी टहनियाँ, कोंपलें और पत्ते निकल आएं या एक परिंदे में बदल कर उड़ने लगे। यह उसूल हर मख़लूक़ में पाया जाता है और इन्सान पर भी यही आम उसूल लागू होता है।

इन्सान भी अपनी ज़िंदगी में, एक फ़ितरी रास्ता और अपनी एक मंज़िल रखता है जो उसका कमाल, कामयाबी और ख़ुशबख़्ती है। उसकी बनावट कुछ ऐसे फ़ैक्टर्स से की गई है जो उसके नेचरल रास्ते को अलग करते हैं और उसे सही मंज़िल की तरफ़ ले जाते हैं।

ख़ुदा फ़रमाता है, ''ख़ुदा वह है जिसने हर चीज़ को उसकी मुनासिब ख़िल्क़त दी है और फिर हिदायत भी की है। (यानी नफ़े की तरफ़)।''

इन्सान के बारे में फ़रमाता है, ''नफ़्स की क़सम और जिसने उसे दुरुस्त किया है! फिर बदी और तक़्वे की हिदायत दी है। बेशक वह कामयाब हो गया जिसने नफ़्स को पाकीज़ा बना लिया। और वह नामुराद हो गया जिसने उसे आलूदा कर दिया है।''

ऊपर अब तक जो कुछ कहा गया है इस से साफ़ हो जाता है कि इन्सान की ज़िंदगी का हक़ीक़ी रास्ता वह रास्ता है जिसकी तरफ़ ख़ुद नेचर ही उसको लेकर जाता है और यह इन्सान और नेचर की ख़िलक़त के मुताबिक़ हक़ीक़ी मसलेहतों की बुनियाद पर बना हुआ है, चाहे यह उसकी

Gift Coupon

11

Name...

Father's Name...

निजात
का ज़रिया

हज़रत अबूज़र ने काबे के दरवाज़े को पकड़ कर कहा कि जो मुझे जानता है वह तो जानता है और जो नहीं जानता वह जान ले कि मैं अबूज़र हूँ और मैंने पैग़म्बर[स०] से सुना है कि उन्होंने फ़रमाया था, ''तुम्हारे बीच मेरे अहलेबैत की मिसाल नूह की कश्ती जैसी है। जो उस पर सवार हो गया वह निजात पा गया और जो उस से भागा वह हलाक हो गया।''

जिस दिन तूफ़ाने नूह ने ज़मीन को अपनी पकड़ में लिया था उस दिन नूह[अ०] की कश्ती के अलावा निजात का कोई दूसरा ज़रिया मौजूद नहीं था। यहाँ तक कि वह ऊँचा पहाड़ भी डूब गया था जिसकी चोटी पर नूह[अ०] का बेटा बैठा हुआ था।

क्या रसूले इस्लाम[स०] के हुक्म के बाद अहलेबैत[अ०] का हाथ थामने के अलावा निजात का कोई और दूसरा रास्ता है?

जज़्बाती ख़्वाहिशों के मुताबिक़ हो या न हो क्योंकि जज़्बात को नेचर के मुताबिक़ चलना चाहिए और उसी को फ़ालो करना चाहिए न कि नेचर इन्सान की ख़्वाहिशों और जज़्बात को फ़ालो करे।

इन्सानी समाज को भी इसी उसूल पर चलना चाहिए, न कि धोखा देने वाले जज़्बात की बुनियादों पर। इस्लाम के उसूल व क़ानूनों और दूसरे क़ानूनों में यही फ़र्क़ है। आम समाजी क़ानून समाज के लोगों की अक्सरियत की ख़्वाहिशों के मुताबिक़ होते हैं लेकिन इस्लाम के क़ानून नेचर के मुताबिक़ बनाए गए हैं और इसीलिए क़ुरआन तशरीई हुक्म को ख़ुदा का हक़ मानता है, ''हुक्म करने का हक़ सिर्फ़ ख़ुदा को है।''

''यक़ीन वालों के लिए अल्लाह के फ़ैसले से बेहतर किसका फ़ैसला हो सकता है?''

इसी तरह जो कुछ एक आम समाज में होता है वह लोगों की मेजॉरिटी की मर्ज़ी या एक ताक़तवर शख़्स की ख़्वाहिश के मुताबिक़ होता है, चाहे यह हुकूमत समाज की असली ज़रूरतों को पूरा करती हो या न करती हो। लेकिन हक़ीक़ी इस्लामी समाज में हक़ व हक़ीक़त की हुकूमत होती है और लोगों को उसकी इताअत व पैरवी करनी होती है।

यहाँ पर एक और शक का जवाब भी किलयर हो जाता है और वह यह कि ''इस्लाम इन्सानी समाज के मिज़ाज के मुताबिक़ नहीं है। जो इन्सानी समाज आज कल पूरी आज़ादी और हर क़िस्म की कामयाबी से भरा पड़ा है वह हरगिज़ तैयार नहीं हैं कि इस्लाम की इतनी पाबंदियों के तहत रहे।''

अगर हम इन्सानियत को मौजूदा हालात में, जबकि अख़्लाक़ी गुमराहियों ने इन्सानी ज़िंदगी के हर पहलू को तबाह कर रखा है और हर क़िस्म की आज़ादी और ज़ुल्म ने अपना साया डाला है, फ़र्ज़ करें और फिर इस्लाम का उसके साथ मुक़ाबला करें तो हम इस्लाम और तारीकी में डूबी इन्सानियत के बीच किसी भी तरह का मेल नहीं पाएंगे और हमें उम्मीद भी नहीं रखनी चाहिए कि मौजूदा हालत को जारी रखते हुए थोड़े बहुत इस्लामी अहकाम की ज़ाहिरी सूरत में इन्सानी समाज कामयाबी और अम्नो अमान पा जाएगा। यह उम्मीद बिल्कुल ऐसी है जैसे हम डेमोक्रेसी का सिर्फ़ दम भरने वाली एक डिक्टेटर हुकूमत से डेमोक्रेसी की उम्मीद रखें या यह कि बीमार डाक्टर के नुस्ख़े पर ही सेहतयाब होने की उम्मीद में बैठे रहें।

लेकिन अगर हम सिर्फ़ ख़ुदा के बनाए हुए इन्सानी नेचर को मद्दे नज़र रखते हुए इस्लाम -जो नेचुरल दीन है- से मुक़ाबला करें तो हम इसमें पूरी तरह सिमिलॉरिटी पाएंगे। यह कैसे हो सकता है कि नेचर ने जिस रास्ते को ख़ुद तै किया है और उसकी तरफ़ हिदायत करती है और उसके अलावा किसी और रास्ते को क़ुबूल नहीं करती है, इसके साथ मैच न करे?

लेकिन लोगों की खुले बंधों आज़ादी की वजह से पैदा हुई गुमराहियों और बेदीनी से जो आज कल इन्सानी नेचर दोचार है इसकी वजह से किसी हद तक नेचर और उसके बताए हुए रास्ते में फ़र्क़ आ गया है। मगर इन ख़तरनाक हालात में समझदारी यह है कि इन हालात से मुक़ाबला किया जाए ताकि इन्सानियत के संभलने के चांसेज़ पैदा हो जाएं, न कि हम नाउम्मीद होकर बैठ जाएं।

ख़ुलासा यह कि एक समाज की शुरुआती स्टेज में नाराज़गी और मुख़ालेफ़त एक रास्ते के ग़लत या बेबुनियाद होने की दलील नहीं हो सकती है। इसलिए हम कह सकते हैं कि इस्लाम हर वक़्त और हर हालत में ज़िंदा है और समाज को आगे बढ़ाने और उसके साथ चलने की क़ाबलियत व सलाहियत रखता है।

(यह आर्टिकिल अल्लामा तबातबाई के आर्टिकिल का ख़ुलासा है।)

इस्लामिक
हमसफ़र मैरिज ब्यूरो

हमारे यहां सभी मज़हबों और क़ौमों के अच्छे रिश्ते फ़राहम कराता है। सरकारी मुलाज़िम, बिज़नेस-मैन, डाक्टर, इंजीनियर, दस्तकार, एजुकेटेड व दीनदार और बाअदब लड़के/लड़कियाँ, तलाक़शुदा व बेवा औरतों के रिश्तों के लिए राब्ता क़ायम करें।

Timings 10-2 AM
5-9 PM
Sunday Closed

09415180517, 09935315386, 07499827603, mohsin78651@yahoo.com
humsafarislamicmarriage@gmail.com, www.humsafarmarriage.com

क्या हिजाब बंदिश है?

■ फ़ीरोज़ जबीं आज़मी

आइए! आज हम हिजाब यानी पर्दे के बारे में तफ़सील से बातचीत करें।

पर्दा जिसे अरबी डिक्शनरी में हिजाब कहा जाता है और जिसका मतलब पहनावा है। डिक्शनरी के एतेबार से हर पहनावा हिजाब नहीं होता, बल्कि वही पहनावा हिजाब होगा जो चेहरे को ढाँप दे।

पर्दे के मुताल्लिक़ किताबों की स्टडी करने से पता चलता है कि इस्लाम से पहले भी कुछ क़ौमों में पर्दे का रिवाज था। ईरानियों, यहूदियों और हिन्दुओं में भी पर्दे का रिवाज रहा है। इनका क़ानून इस्लामी पर्दे से ज़्यादा सख़्त रहा था।

कहीं-कहीं किताबों में यह भी लिखा है कि इस्लाम से पहले भी अरबों के यहाँ पर्दा मौजूद था। और अच्छे और इज़्ज़तदार घरानों में चेहरा छिपाना ज़रूरी समझा जाता था मगर कुछ किताबें यह भी लिखती हैं कि जाहिलियत के दौर में अरबों के यहाँ पर्दा मौजूद नहीं था। और इसमें यह रस्म इस्लाम की वजह से पैदा हुई।

अरब की हिस्ट्री में पर्दे के मुताल्लिक़ मक़्ना का ज़िक्र आया है। मक़्ना औरतों के लिबास में आता था। इससे औरतों के चेहरे का पर्दा होता था। कुछ जगहों पर यह भी लिखा है कि पर्दे का एहसास इन औरतों को इतना था कि इत्तेफ़ाक़ से अपने आप भी चेहरे से मक़्ना गिर जाता तो वह हाथ से पर्दा कर लेती थीं।

क़ुरआने मजीद में सूरए नूर और सूरए अह्ज़ाब में हिजाब के बारे में यह आयतें आई हैं:

"मोमिनात से कह दीजिए कि वह भी अपनी निगाहों को नीचा रखें।"

इससे ज़ाहिर होता है कि औरत के लिए हिजाब में चेहरा छिपाना ज़रूरी नहीं।

"औरत को चाहिए कि वह अपनी ज़ीनत को ज़ाहिर न होने दें और अपने पाँव पटक कर न चलें कि जिस ज़ीनत को छुपाए हुए हैं वह ज़ाहिर हो जाए।"

पर्दा औरत को रूहानी वक़ार, इफ़्फ़त व फ़ज़ीलत और बुज़ुर्गी अता करता है।

बहरहाल हिजाब औरत का बेहतरीन ज़ेवर है। जो औरतें हिजाब के दाएरे में अपने काम करती हैं वह दुनिया में अपनी इज़्ज़त बनाए रखने के साथ-साथ अपनी आक़िबत भी बना लेती हैं।

हिजाब औरतों को इज़्ज़त, शराफ़त का तमग़ा दिलाता है। वह औरतें क़ाबिले फ़ख़्र हैं जिन्होंने अपने पास हिजाब जैसा नायाब हीरा महफ़ूज़ कर रखा है।

यह कहना ग़लत है कि इस्लाम का औरतों को हिजाब में रखने का मतलब क़ैदो बंद में रखना है। यह कहना सरासर इस्लाम की तौहीन है।

इस्लाम में औरतों को हर तरह की आज़ादी है वह हिजाब में रहते हुए जिस काम को करना चाहें कर सकती हैं।

आफ़िस, बैंक, स्कूल, कालेज, युनिवर्सिटी में काम करने वाली ख़वातीन को इजाज़त है। इतना ही नहीं वह एयर-होस्टेस बल्कि पाइलेट भी हो सकती हैं मगर युनिफ़ार्म या वर्दी के साथ हिजाब होना ज़रूरी है।

आज कल आम तौर से देखा गया है कुछ मुस्लिम घरानों की कम उम्र ख़ूबसूरत लड़कियाँ काल-सेंटर, बिग बाज़ारों और बड़ी दुकानों पर काम करती हैं। वह दुकानों पर सजे सामानों जिसमें ख़ूबियाँ नाम बराबर होती नहीं हैं। लेकिन सेल्स-गर्ल की अदाएं इतनी जाज़िब होती हैं कि नापसंद सामान जिसे कस्टमर ख़रीदने से गुरेज़ करता है सेल्स-गर्ल की लच्छेदार बातें इनका मूड बदल देती हैं और वह सामान लेने के लिए राज़ी हो जाता है।

यह उन लड़कियों की ख़ूबी तो है लेकिन सिर्फ़ दुकान के मालिक की नज़र में। मालिके हक़ीक़ी की नज़र में यह काम सरासर ग़लत है। लिहाज़ा इस तरह की नौकरी से लड़कियों को बचना चाहिए।

सच तो यह है कि औरत हेजाब में रहकर सभी काम कर सकी है, औरतों का मुख़्तलिफ़

इदारों में मर्दों के साथ काम करना औरत की तेज़ी और बेबाकी क़तई नहीं है।

बल्कि समाज को चाहिए कि ऐसी औरतें जो इज़्ज़त आबरू के साथ हिजाब के दायरे में काम करती हैं। उनकी हौसला अफ़ज़ाई करें और समाज को ऐसी औरतों की क़द्र करनी चाहिए।

मगर कुछ औरतें ऐसी हैं जो औरतों की खिल्ली उड़ाती हैं। तारीफ़ तो यह है कि ख़ुद हिजाब के लफ़्ज़ी मायने नहीं जानतीं। अकसर देखा गया है कि मज़हबी फ़ंक्शंस में औरतें अबा चोग़ा पहने भीड़ में घुसी जा रही होती हैं। यहाँ वह पर्दा नशीं होते हुए भी हिजाब को अहमियत नहीं देतीं। इन से पूछिए क्या मर्दों को धक्का देकर भीड़ में घुसना हिजाब है।

इतना ही नहीं कुछ औरतें सज-धज कर मजलिस और फ़ंक्शंस में जाती हैं। मान्तो उसके ऊपर ओढ़ने वाला स्कार्फ़ जिस पर कलाबत्तू का काम ख़ूबसूरत इम्ब्राइड्री या मोतियों की झालर बनी होती है। यह बुर्क़ा इस तरह का होता है कि जिस्म का ऊपरी हिस्सा नक़ाब के बावजूद भी नज़र आता है।

हिजाब का मतलब है ऐसे कपड़े पहनो कि जिस्म की नुमाइश न हो, मांतो में क्या हिजाब बाक़ी रहता है?

हमारी इस पर्दा नशीं ख़ातून से गुज़ारिश है कि वह ऐसे बुर्क़े की जगह चादर यानी रिदा का इस्तेमाल करें जिससे कम से कम बाल और गर्दन से लेकर पेट तक का हिस्सा तो छिपा रहता है।

लड़कियाँ हिजाब में रहकर तालीम हासिल कर सकती हैं। कोई ज़रूरी नहीं कि वह बुर्क़ा पहनें। अच्छी तरह दुपट्टा ओढ़कर कालेज, स्कूल जाना माहोल को देखते हुए बुरा नहीं है। अकसर लड़कियाँ फ्रेंड सर्किल में रिदा ओढ़ कर झिझक महसूस करती हैं दुपट्टा ओढ़ने पर उन्हें यह झिझक क़तई महसूस नहीं होती तो क्या बुरा है कि वह रिदा की जगह दुपट्टा ओढ़ें।

बेहतर है कि हम हालात देखकर हिजाब न करें। जींस, टॉप, टी-शर्ट यह सब शराफ़त का पहनावा नहीं है। हाँ ज़रूर यह ड्रेस लड़कियों को स्मार्ट बना देता है। अगर इस स्मार्टनेस में जिस्म के उरयाँ होने की झलक आ रही है तो ऐसा लिबास हिजाब के दायरे से कोसों दूर है।

कोई भी पहनावा पहनने से पहले यह ख़याल रखना चाहिए कि यह हिजाब में आता है या नहीं। आमतौर से देखा जाता है कि कुछ लोग छोटी उम्र में लड़कियों को बुरक़ा पहना देते हैं। और लड़कियाँ वालदैन की ख़ुशी के लिए पहन लेती हैं। उन लोगों से पूछिए क्या ऐसा नक़ाब जिसका स्कार्फ़ गले से लेकर पेट तक के हिस्से को सही तरीक़े से ढाँक न सके क्या ऐसा नक़ाब हिजाब के अंदर है।

शरीअत में पर्दे के बारे लिखा है कि सर के बाल गले से लेकर शिकम तक का हिस्सा ढका होना चाहिए कि किसी तरह की उरयानियत का अक्स नज़र न आए।

बहरहाल हिजाब कोई क़ैद या बंदिश नहीं ताहम हिजाब में रहकर सारा काम करना थोड़ा मुश्किल ज़रूर है।

अल्लाह हमें सानिए ज़हरा की सच्ची कनीज़ बनने की और दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा पैदा करके हिजाब की तौफ़ीक़ दे! ●

टीचर और टाइम

टीचर और टाइम दोनों सिखाते हैं लेकिन दोनों के सिखाने में फ़र्क़ है। टीचर सिखाने के बाद इम्तेहान लेता है लेकिन टाइम पहले इम्तेहान लेता है फिर सिखाता है।

टीचर और स्टूडेंट

किसी भी स्टूडेंट को क्लास में टीचर की कुर्सी तक पहुँचने में बहुत कम फ़ासला तैय करना पड़ता है लेकिन उस कुर्सी पर बैठने के क़ाबिल बनने में काफ़ी लम्बा सफ़र तैय करना पड़ता है।

(सै. आले हाशिम रिज़वी)

सच

■ आयतुल्लाह मकारिम शीराज़ी

सच और झूठ का असर

1- झूठ से निफ़ाक़ पैदा होता है क्योंकि सच ज़बान और दिल के एक होने का नाम है और झूठ इन दोनों में फ़र्क़ का। यहीं से इंसान के ज़ाहिर और बातिन में फ़र्क़ भी शुरु हो जाता है और धीरे-धीरे झूठ बोलने वाला पूरी तरह मुनाफ़िक़ हो जाता है। क़ुरआन मजीद ने इस की तरफ़ यूँ इशारा किया है, "उनकी कंजूसी ने उनके दिलों में निफ़ाक़ भर दिया है उस दिन तक के लिए जब ये ख़ुदा से मुलाक़ात करेंगे क्योंकि उन्होंने ख़ुदा से किए हुए वादे की मुख़ालेफ़त की है और झूठ बोला है।" (1)

2- बहुत से गुनाह झूठ की वजह से होते हैं। नक़ली चीज़ें बनाने वाले, ख़यानत करने वाले, कम बेचने वाले, वादा ख़िलाफ़ी करने वाले वग़ैरा-वग़ैरा वह लोग हैं जो झूठ के बिना कुछ भी नहीं कर सकते यानी अगर झूठ न बोलें तो एक क़दम भी आगे नहीं बढ़ सकते।

3- हसद करने वाला अपने हसद को पूरा करने, घमण्ड करने वाला अपने घमण्ड को दिखाने, चापलूस अपने मक़सद तक पहुँचने और दुनिया परस्त अपने मक़सद के लिए आम तौर पर झूठ ही का सहारा लेते हैं। हसद करने वाला अपने झूठ के ज़रिए किसी शख़्स को दूसरों की नज़रों में छोटा और घमण्डी अपने झूठ के ज़रिए ख़ुद को बड़ा बनाकर पेश करता है। झूठ के ज़रिए हज़ार तरह की चापलूसियाँ की जाती हैं। झूठ ही वह चाल है जिसके ज़रिए एक लालची अपनी हवस को पूरा करता है।

4- सच बोलने वाला शख़्स बहुत से गुनाहों को न करने पर मजबूर होता है क्योंकि उसकी नज़र में अगर उसके ज़रिए किए गए किसी बुरे काम के बारे में सफ़ाई माँग ली जाए तो उसके लिए सच बोलना ज़रूरी होता है और अगर वह सच बोलेगा तो ये उसकी ज़िल्लत और रुसवाई की वजह बनेगी। इसलिए वह किसी भी बुरे काम से अलग ही रहना पसंद करता है। यही वजह है कि इस क्वालिटी की बुनियाद पर वह बहुत से गुनाहों और बुराईयों से बच जाता है।

5- बहुत से झूठ ख़ुद ही से दूसरे बहुत से गुनाहों और बुराईयों के पैदा होने की वजह बन जाते हैं क्योंकि अक्सर देखा गया है कि झूठ बोलने वाला अपने झूठ को सच साबित करने के लिए सैकड़ों झूठ बोल जाता है या अपने झूठ को छुपाने के लिए दूसरे बहुत से ग़लत काम कर बैठता है।

ऊपर बयान की गई बातों से साफ़ हो जाता है कि इंसान अगर हक़ीक़त में सच्चाई पर अमल करे तो उसके पास इसके अलावा कोई रास्ता नहीं है कि वह बहुत से गुनाहों और बुराईयों को छोड़ दे क्योंकि इनमें से हर एक किसी न किसी तरह झूठ ही की बुनियाद पर पैदा होती है। झूठ गुनाहों की माँ और उन तक पहुँचने का सबसे आसान रास्ता है। इसलिए सच बोलने वाले शख़्स को ना चाहते हुए भी झूठ से दूर रहना पड़ता है।

झूठ और ईमान

कई हदीसों से साबित होता है कि झूठ और ईमान के बीच कोई रिश्ता नहीं है, ये सभी हदीसें क़ुरआन मजीद की तफ़सीर हैं। क़ुरआन में है, "यक़ीनन ग़लत इल्ज़ाम लगाने वाले सिर्फ़ वही लोग होते हैं जो अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं रखते हैं और वही झूठे भी होते हैं।" (2)

इस सिलसिले में कुछ रिवायतें यह हैं:

1- रसूले ख़ुदा से सवाल किया गया कि क्या मोमिन डरपोक हो सकता है?आपने फ़रमाया कि हाँ। फिर सवाल किया गया कि क्या मोमिन कंजूस हो सकता है?फ़रमाया हाँ। फिर सवाल किया गया कि क्या मोमिन झूठ बोल सकता है? आपने फ़रमाया कि नहीं।

2- हज़रत अली[अ] ने फ़रमाया है कि कोई इंसान ईमान का मज़ा उस वक़्त तक नहीं चख सकता जब तक संजीदगी और हंसी मज़ाक़ में भी झूठ को न छोड़ दे।

3- हज़रत अली[अ] फ़रमाते हैं कि झूठ से बचो क्योंकि ये ईमान का मुख़ालिफ़ है।

इन रिवायतों से अच्छी तरह से समझ में आ जाता है कि ईमान वाले लोग झूठ से बचते हैं और साथ ही ईमान और झूठ एक जगह जमा नहीं हो सकते। झूठ बोलने की वजह से जो दिल मुर्दा हो जाता है उसके अलावा इसकी एक वजह यह भी है कि झूठ बोलने वाले लोग अपने ज़ाती फ़ायदों की वजह से नबियों की दावत को आसानी के साथ क़ुबूल नहीं करते क्योंकि इस तरह के लोग अपनी ज़िन्दगी के छोटे से छोटे मामले में भी झूठ बोल जाते हैं। इसलिए क़ुबूल नहीं कर पाते कि ख़ुदा के नबी इतने अहम मामलों में सच बोल रहे हैं और अपने दावे में सच्चे हैं। हो सकता है कि ऐसे लोग ईमान वाले लोगों के बीच भी पाए जाते हों लेकिन अगर उनके दिल की गहराईयों में उतर कर देखा जाए तो यही नज़र आएगा कि उनके दिल शक से भरे हुए हैं। वैसे ये हक़ीक़त उन लोगों के बारे में है जिनको झूठ चारों तरफ़ से जकड़ लेता है।

इन लोगों से बिल्कुल उलट वह लोग हैं जो अपनी कथनी और करनी में सच्चे होते हैं। आम

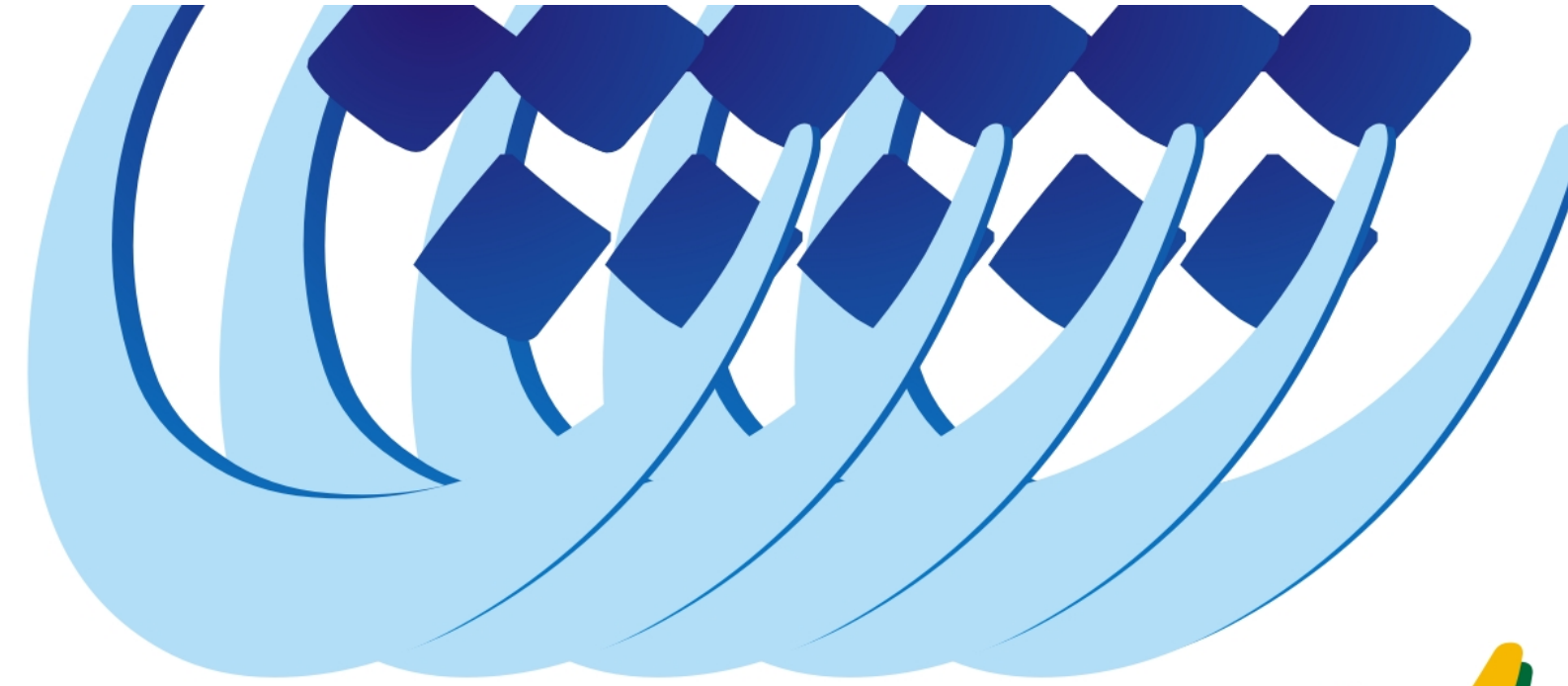

तौर पर जल्दी मान जाते हैं क्योंकि ख़ुद सच्चे होते हैं इसलिए अपने मिज़ाज़ के मुताबिक़ जो कुछ सुनते हैं उस पर यक़ीन भी कर लेते हैं। झूठ बोलने वाले लोग हर चीज़ और हर शख़्स के बारे में निगेटिव और ग़लत सोच रखते हैं। उनकी नज़र में हर चीज़ ग़लत और नक़ली या कम से कम शक वाली होती है। ज़ाहिर है कि ऐसे लोग आख़िर किस तरह मज़बूत ईमान वाले हो सकते हैं या कैसे बिना शक के ख़ुदा के नबियों की दावत को क़ुबूल कर सकते हैं। यही वजह है कि आम तौर पर वही लोग रसूले इस्लाम[स०] पर झूठ का इल्ज़ाम लगाते हैं जो मुनाफ़िक़, गुमराह और झूठे होते हैं।

दूसरों को अपने ही जैसा समझना एक साइकॉलोजिकल फ़ैक्टर है जिसके ज़रिए बहुत से मसलों का हल तलाश किया जा सकता है। अक्सर देखा जाता है कि क़ातिल और चोर वग़ैरा अपनी कुछ ख़ास हरकतों की वजह से दूसरे लोगों को न चाहते हुए भी अपनी तरफ़ अट्रेक्ट कर लेते हैं और ऐसा इसलिए होता है क्योंकि ये लोग सिर्फ़ अपनी हालत को जानते हैं इसलिए दूसरों को भी अपने ही जैसा समझ लेते हैं। जिसका नतीजा ये होता है कि ख़ुद को छुपाए रखने के लिए ऐसी हरकतें कर बैठते हैं जिनकी वजह से दूसरों की नज़र में आ जाते हैं।

झूठ इंसान को लापरवाह बना देता है

झूठ बोलने वाला शख़्स हमेशा ये सोचता है कि अगर अपने ऊपर लगी ज़िम्मेदारियों को पूरा नहीं करेगा तो किसी न किसी तरह ग़लत बोलकर कोई बहाना पेश कर देगा। ऐसे शख़्स के लिए वादा ख़िलाफ़ी करना, वक़्त की पाबन्दी का ख़याल न रखना और अपनी ज़िम्मेदारियों को पूरा न करना वग़ैरा बहुत आसान होता है क्योंकि वह अपने ज़रिए गढ़े हुए बहाने या बहाने बाज़ी के ज़रिए मसले को हल कर लेता है लेकिन इसके उलट सच बोलने वाला मजबूर होता है कि अपनी तमाम ज़िम्मेदारियों को अच्छी तरह से पूरा करे ताकि उसको झूठ का सहारा न लेना पड़े। जिसका नतीजा ये होता है कि सच बोलने वाला लापरवाह और ला उबाली नहीं हो सकता जबकि झूठ बोलने वाले की तो ये सिफ़त ही बन जाती है।

झूठे को ख़ुद अपने ऊपर ही भरोसा नहीं होता

झूठे लोग न सिर्फ़ ये कि दूसरे लोगों पर भरोसा नहीं करते बल्कि उनको भी अपने ही जैसा समझते हैं बल्कि ख़ुद अपने आप पर भी भरोसा नहीं करते। ऐसे लोग सभी चीज़ों यहाँ तक कि रोज़ाना के मामलों और मसअलों, अपनी ताक़त और इरादे के बारे में नासमझी के शिकार होते हैं। हज़रत अली[अ०] फ़रमाते हैं,

"झूठे शख़्स की दोस्ती से बचो क्योंकि वह सराब (एक धोखे) की तरह होता है जो तुम्हारे लिए दूर को क़रीब और क़रीब को दूर

बनाकर पेश करता है।''

अगरचे हक़ीक़त की तस्वीर बिगाड़ कर पेश करना, उन झूठे लोगों का काम है कि जिनकी ज़िन्दगी की बुनियाद झूठ पर रखी होती है लेकिन झूठ बोलने की अपनी आदत की वजह से ऐसे लोग अपने लिए भी मुश्किलें खड़ी कर लेते हैं क्योंकि उन्हें अपने आसपास की सच्चाइयाँ ख़ुद अपने लिए भी डाउट-फुल नज़र आने लगती हैं और वह हर चीज़ के बारे में शक करने लगते हैं। ज़ाहिर है कि यह एक इंसान के लिए सबसे ज़्यादा अफ़सोस करने वाली हालत है जिसका ज़िम्मेदार वह ख़ुद होता है।

झूठ की बुनियाद

आमतौर पर झूठ किसी एक रूहानी कमज़ोरी की बुनियाद पर होता है यानी कभी ऐसा होता है कि इंसान ग़रीब और लाचारी से घबराकर या दूसरे लोगों के उसको अकेले छोड़ देने पर या अपने ओहदे और मंसब को बचाने के लिए झूठ बोल देता है।

कभी माल और दौलत, इज़्ज़त और दूसरी ख़ाहिशों से उसकी सख़्त मुहब्बत उसको झूठ बोलने पर मजबूर कर देती है। इन जगहों पर भी झूठ का सहारा लेकर वह अपनी ख़ाहिशों को पूरा करना चाहता है।

ऐसा भी होता है कि इंसान की किसी शख़्स या किसी ग्रुप से सख़्त मुहब्बत या नफ़रत भी उसे मजबूर कर देती है कि इंसान सच को छोड़कर अपने सामने वाले की हिमायत या मुख़ालिफ़त में कोई बात कहे। अगर सामने वाला उसका महबूब होता है तो यह झूठा शख़्स उसको फ़ायदा पहुँचाना चाहता है और अगर दुश्मन होता है तो ज़ाहिर है कि उसको नुक़सान पहुँचाना चाहता है।

इंसान कभी इसलिए भी झूठ बोलता है कि दूसरों के सामने ख़ुद को बड़ा बनाकर पेश कर सके और उनके सामने इल्मी, समाजी, सियासी, कारोबारी वग़ैरा किसी भी एंगल से अपना दबदबा बाक़ी रख सके।

वैसे हक़ीक़त यह है कि यह सारी बुराइयाँ जो झूठ की बुनियाद बनती हैं, इंसान की रूहानी कमज़ोरी, शख़्सियत की कमज़ोरी और ईमान की कमज़ोरी की वजह से पैदा होती हैं। जिन लोगों को अपने आप पर भरोसा नहीं होता है या रूहानी एतेबार से कमज़ोर होते हैं ऐसे लोग अपने मक़सद को हासिल करने और होने वाले किसी भी नुक़सान से बचने के लिए हर तरह के झूठ, ग़लत बोलने और बहाने बनाने को अपना पहला और आख़िरी हथियार मानते हैं जबकि इसके उलट वह लोग जिनको अपनी शख़्सियत पर यक़ीन और भरोसा होता है वह ख़ुद अपनी ज़ात के सहारे आगे बढ़ते हैं और किसी ग़लत काम या तरीक़े से फ़ायदा नहीं उठाते।

परवरिश

इस्लामी परवरिश में मशहूर स्कालर, डाक्टर जलाली लिखते हैं, ''एहसासात और जज़्बात के लिहाज़ से बच्चों की वही लोग सही परवरिश कर सकते हैं जिनकी ख़ुद उनके बचपन और बाक़ी सारी उम्र में सही परवरिश हुई हो। जो माँ-बाप आपस में नाराज़ रहते हों और छोटी-छोटी बातों पर लड़ते-झगड़ते हों या उन्हें अच्छी परवरिश करने में कोई दिलचस्पी न हो और जो बच्चों को नफ़रत की निगाह से देखते हों, जिनमें हौसले और सब्र की कमी हो, जिन्हें ख़ुद अपने आप पर भरोसा न हो...वह बच्चों के जज़्बात और एहसासात को समझ ही नहीं सकते और न ही उन्हें सही रास्ता दिखा सकते हैं।''

डाक्टर जलाली आगे लिखते है, ''बच्चे की परवरिश जिसके भी ज़िम्मे हो उसे चाहिए कि कभी-कभी अपनी आदतों पर भी एक नज़र डाले और अपनी ज़िम्मेदारियों के बारे में सोचे। उसके बाद अपनी कमियों को दूर करने की कोशिश करे।''

हज़रत अली[अ] फ़रमाते हैं, ''जो शख़्स दूसरों का पेश्वा बनना चाहता है उसे पहले ख़ुद को सुधारना चाहिए, फिर दूसरों को सुधारने के लिए आगे बढ़ना चाहिए। दूसरों को ज़बान से अदब सिखाने से पहले अपने किरदार से अदब सिखाना चाहिए। जो अपने आपको तालीम देता है और ख़ुद को अदब सिखाता है वह उस शख़्स से ज़्यादा इज़्ज़त का हक़दार है जो सिर्फ़ दूसरों को अदब सिखाता है।''

एक औरत अपने एक ख़त में लिखती है, ''...मेरे माँ-बाप के कैरेक्टर ने मुझ पर बहुत असर डाला है। उन्होंने हमेशा मेरे साथ और मेरे बहन भाइयों के साथ मेहरबानी की है। मैंने कभी भी उनके कैरेक्टर और बातचीत में बुराई नहीं देखी। ख़ुद हमारी बहुत सी आदतें वैसी ही हो गई हैं। मैं उनके अच्छे अख़लाक़ को कभी नहीं भुला सकती। अब जबकि मैं ख़ुद माँ बन गई हूँ तो कोशिश करती हूँ कि कुछ बुरा न करूँ, ख़ास तौर पर अपने बच्चों के सामने। मेरे माँ-बाप का कैरेक्टर मेरी ज़िन्दगी में मेरे लिए आइडियल बन गया है। मैं कोशिश करती हूँ कि अपने बच्चों की भी वैसे ही से परवरिश करूँ।''

एक दूसरी औरत अपने ख़त में लिखती है, ''.....जब मैं अपनी पिछली ज़िन्दगी के बारे में सोचती हूँ तो मुझे याद आता है कि मेरी माँ छोटी-छोटी बातों में ऐसे ही चीख़ती-चिल्लाती थी। अब जबकि मैं ख़ुद माँ बन गई हूँ तो देखती हूँ कि थोड़ी सी कमी के साथ वही हालत मेरी भी है। उसकी सारी बदअख़लाक़ियाँ मुझ में पैदा हो गई हैं और अजीब बात यह है कि मैं जितना भी ख़ुद को सुधारना चाहती हूँ, उतना ही नहीं सुधार पाती। मेरे लिए यह बात साबित हो गई है कि माँ-बाप का कैरेक्टर और अख़लाक़ औलाद की परवरिश पर ज़रूर असर डालता है और यह जो कहा जाता है कि माएँ अपनी परवरिश के ज़रिए पूरी दुनिया को बदल सकती हैं बिल्कुल ठीक बात है।''

शौहर की शिकायत

शहीद मुतह्हरी

हज़रत अली[अ०] अपनी ख़िलाफ़त के ज़माने में लोगों की शिकायतें ख़ुद सुनते थे । आपने यह काम किसी और को नहीं दिया था। तेज़ गर्मी के ज़माने में जब आम लोग आधा दिन अपने घर में आराम किया करते थे हज़रत अली[अ०] दारुल अमारह की बाहरी दीवार के साए में बैठ जाते थे कि अगर इत्तेफ़ाक़ से कोई फ़रियादी आ जाए तो अपनी फ़रियाद डायरेक्ट उन तक पहुँचा सके और कभी गलियों और सड़कों पर निकल जाते थे, तलाश करते थे और लोगों के हालात क़रीब से देखा करते थे।

एक दिन गर्मी में थके हुए पलटे तो एक औरत को दरवाज़े पर पाया। जैसे ही औरत की निगाह अली[अ०] पर पड़ी वह सामने आई और कहा कि मुझे एक शिकायत है। मेरे शौहर ने मुझ पर ज़ुल्म किया, घर से बाहर निकाल दिया और इसके अलावा मुझे मारने की धमकी भी दी है। अब अगर मैं घर वापस जाऊँ तो वह मुझे मार देगा। इस वक़्त मैं मदद माँगने आपके पास आई हूँ।

"इस वक़्त बहुत गर्मी है, थोड़ा ठहरो, ज़रा गर्मी कम हो जाए तो मैं ख़ुद तुम्हारे साथ चलकर तुम्हारी मुश्किल आसान कर दूँगा।"

"अगर मैं देर तक घर से बाहर रही तो उसका गुस्सा और ज़्यादा हो जाएगा और वह मुझे और परेशान करेगा।"

अली[अ०] ने एक लम्हे के लिए सर झुकाया, फिर सर उठाके कहा, "नहीं ख़ुदा की क़सम! मज़लूम की मदद में देर नहीं करनी चाहिए। मज़लूम का हक़ ज़ालिम से ज़रूर लेना चाहिए और ज़ालिम का रौब मज़लूम के दिल से निकाल देना चाहिए ताकि ज़ालिम के सामने सर उठा के अपना हक़ माँग सके।"

"बताओ! तुम्हारा घर कहाँ है?"

"उस जगह।"

"चलो।" अली[अ०] उस औरत के साथ उसके घर पहुँचे। दरवाज़े के पीछे खड़े होकर बाआवाज़े बुलंद कहा, "घर वालो! सलामुन अलैकुम।"

एक जवान बाहर आया जो उस औरत का शौहर था। उसने अली[अ०] को नहीं पहचाना। देखा कि एक साठ साल का बूढ़ा, उसकी औरत के साथ आया है। वह यह समझा कि औरत अपनी हिमायत और सिफ़ारिश के लिए इस बूढ़े मर्द को लाई है, लेकिन कुछ नहीं बोला। हज़रत अली[अ०] ने कहा, "यह औरत तुम्हारी बीवी है और इसे तुम से शिकायत है कि तुम ने इस पर ज़ुल्म किया है और इसे घर से निकाला है, इसके अलावा इसे मारने की धमकी भी दी है। मैं तुम से कहने आया हूँ कि ख़ुदा से डरो और अपनी बीवी के साथ नेकी और मेहरबानी के साथ पेश आओ।"

"तुम से क्या मतलब? मैंने इसे मारने की धमकी दी है या अपनी बीवी के साथ अच्छा सुलूक किया है या बदसुलूकी की है, लेकिन अब यह तुम्हें बुलाकर लाई है और तुम इसकी तरफ़दारी कर रहे हो तो अब मैं इसे ज़िंदा ही आग में डाल दूँगा।"

हज़रत अली[अ०] को उस जवान की गुस्ताख़ी पर गुस्सा आ गया। हाथ तलवार तक आया और तलवार ग़िलाफ़ से बाहर खींची और कहा, "मैं तुम्हें नसीहत और अम्र बिल मारूफ़ और नही अनिल मुन्कर कर रहा हूँ और तुम मेरा जवाब इस तरीक़े से दे रहे हो। साफ़-साफ़ कह रहे हो कि मैं इस औरत को ज़िंदा जला दूँगा। तुम ने क्या समझ रखा है क्या दुनिया में इतना ही अंधेर है।"

जब अली[अ०] की आवाज़ बलुंद हुई तो उधर से गुज़रने वाले लोग इकटठा हो गए। जो भी आया उसने अली[अ०] की ताज़ीम की और "अस्सलामु अलैक या अमीरुल मोमिनीन[अ०]" कहा।

यह मग़रूर नौजवान अब समझा कि किस हस्ती का सामना है। अपने होशो हवास सही करके गुज़ारिश करने लगा, "ऐ अमीरुलमोमिनीन[अ०] मुझे माफ़ कर दें, मैं अपनी ग़लती मानता हूँ। इस वक़्त से वादा करता हूँ कि मैं इसका फ़रमाँबरदार रहूँगा। यह जो भी कहेगी मैं क़ुबूल करूँगा।"

हज़रत अली[अ०] ने उस औरत से कहा, "अब अपने घर में जाओ और तुम भी ख़याल रखना कि ऐसा कोई काम न करना जिस से तुम्हारा शौहर ऐसा सुलूक करने पर मजबूर हो जाए।"

गालियाँ

■ फ़साहत हुसैन

"हमारे घर में कोई गाली नहीं देता है। पता नहीं, इसने ये सब कहाँ से सीख लिया है।"

"हमेशा उलटे-सीधे अलफ़ाज़ ज़बान पर लाता है। कुछ भी करो लेकिन इसके कान पर जूँ तक नहीं रेंगती।"

"स्कूल से फ़ोन आया था कि इसने क्लास-मेट को गाली दी है। मेरी तो कुछ समझ में ही नहीं आ रहा है कि क्या करूँ।"

बच्चे जब गन्दे और बुरे अलफ़ाज़ इस्तेमाल करते हैं तो माँ-बाप इसी तरह की बातें कहते हैं। एक तरफ़ तो माँ-बाप बच्चों की इस आदत की वजह नहीं जानते हैं और दूसरी तरफ़ उन्हें ये भी मालूम नहीं होता कि उसे किस तरह इस काम से रोका जाए।

ऐसे मौक़ों पर माँ-बाप अपने बच्चों को डांटते या मारते हैं लेकिन उन्हें ये बात ज़ेहन में रखना चाहिए कि किसी भी मुश्किल का हल ढूँढने से पहले हमें ये सोचना चाहिए कि ऐसा क्यों हो रहा है।

क्या आपको पता है कि आपके काम, आपकी बातें, किसी चीज़ या किसी काम के बारे में आपका नज़रिया बच्चे की निगाहों में बहुत ख़ास होता है। आपके घर में कोई छोटा बच्चा है, आप उस से कहते हैं कि वह किसी दूसरे को कोई बुरा लफ़्ज़ कहे या किसी बुरे नाम से पुकारे, या आप उसका हाथ पकड़कर किसी दूसरे को मारते हैं और इस से ख़ुश होते हैं, ये आपकी निगाह में एक मज़ाक़ होता है। बच्चा देखता है कि मेरे माँ-बाप इस काम से ख़ुश होते हैं तो वह भी इसी तरह काम करता है लेकिन बदले में उसे आपके गुस्से का सामना करना पड़ता है और उस बेचारे को पता भी नहीं होता कि आप उस पर गुस्सा क्यों कर रहे हैं।

यही बात बोलचाल में भी है। आप घर में बड़े हैं, हो सकता है कि गुस्से में कोई ख़राब लफ़्ज़ आपकी ज़बान पर आ जाए लेकिन जब यही काम बच्चा करता है तो सब लोग उसे डांटते हैं। आपको हमेशा ये बात ज़ेहन में रखना चाहिए कि बच्चे बिल्कुल शीशे की तरह होते हैं जो कुछ उनके सामने आता है वह वैसा ही करने लगते हैं।

चलिए मान लिया कि आप ऐसी नहीं हैं। आप कभी गुस्से में भी कोई ख़राब लफ़्ज़ अपनी ज़ुबान पर नहीं लाती हैं। एक दिन आपका लड़का गाली दे देता है। सबसे पहले आप ये देखिए कि बच्चा इस लफ़्ज़ का मतलब जानता है या नहीं। ज़्यादातर बच्चे ऐसे अलफ़ाज़ का मतलब नहीं समझते हैं। हो सकता है कि उसने ये लफ़्ज़ टीवी या मौहल्ले के किसी लड़के से सुना हो लेकिन इसका मतलब नहीं जानता। यहाँ तक कि हो सकता है कि वह ये जानता हो कि ये लफ़्ज़ गुस्से के वक़्त इस्तेमाल किया जाता है लेकिन इसके मायने न जानता हो। अगर आप ये मानते हुए कि वह इस लफ़्ज़ का मतलब जानता है उस पर गुस्सा हो जाएं या उसे मार दें तो हो सकता है कि वह ये लफ़्ज़ वह आपके सामने कभी न दोहराए लेकिन इस लफ़्ज़ को इस्तेमाल न करने की वजह उसकी समझ में नहीं आएगी। ऐसी सूरत में हो सकता है कि वह आपकी पीठ पीछे वही अलफ़ाज़ दोहराए। इसलिए सबसे अच्छा रास्ता ये है कि हम अपने बच्चों को ये बताएं कि वह अपना गुस्सा या नाराज़गी दिखाने के लिए गन्दे अलफ़ाज़ इस्तेमाल करने के बजाए दूसरे तरीक़े से अपनी बात कहें।

हम जिन अलफ़ाज़ को अपना गुस्सा ज़ाहिर करने या दूसरों का मज़ाक़ उड़ाने या उनकी तौहीन करने के लिए इस्तेमाल करते हैं उन से सामने वाला गुस्सा होता है। गुस्से के वक़्त बहुत से लोग लानत मलामत भी करते हैं और लानत मलामत में आम तौर पर दूसरों का नुक़सान चाहा जाता है। बड़े गुस्से के वक़्त इतनी ज़्यादा लानत मलामत करते हैं कि बच्चों के बीच उनके इस्तेमाल को एक नई और अनोखी चीज़ नहीं कहा जा सकता।

कुछ और ख़राब अलफ़ाज़ हैं जिनके ज़रिए सामने वाले की शख़सियत बिगाड़ी जाती है। जैसे आम तौर से कहा जाता है कि "तुम्हारे पास अक़्ल नहीं है" या "अन्धे हो" वग़ैरा-वग़ैरा। बड़े

लोग जिनका कहना है कि वह गाली नहीं देते हैं, वह भी आम तौर पर इस तरह के अलफ़ाज़ इस्तेमाल करते हैं। ज़्यादा तर अलफ़ाज़ जो माँ-बाप गुस्से में अपने बच्चों के लिए इस्तोमाल करते हैं वह इसी तरह के होते हैं और अगर बच्चे ये अलफ़ाज़ इस्तेमाल करते हैं तो माँ-बाप नाराज़ होते हैं।

कभी-कभी हो सकता है कि हमें दूसरी तरह के अलफ़ाज़ का सामना करना पड़े। जैसे वह बच्चा जिस पर लोग ज़्यादा ध्यान नहीं देते हैं, वह चाहता है कि कुछ नए काम करके बड़ों को अपनी तरफ़ मुतवज्जह करे चाहे वह ग़लत ही क्यों न हों। वैसे बच्चे इस तरह के ज़्यादातर काम ये बताने और दिखाने के लिए करते हैं कि वह अब बच्चे नहीं रह गए हैं, बड़े हो गए हैं क्योंकि उन्होंने बचपन से यही सुन रखा होता है कि गाली देना बड़ों का काम है और सिर्फ़ वही गाली दे सकते हैं।

दोस्तों के ग्रुप में शामिल होना और उन्हें खुश करना भी गाली देने की एक वजह बन सकता है।

ये बात तो सभी मानते हैं कि बच्चों का गाली देना कोई अच्छी बात नहीं है और माँ-बाप को अपने बच्चों की ये आदत बदलने के लिए कोशिश करना चाहिए। इसके लिए सब से पहला काम तो ये करना होगा कि वह खुद अपनी रोज़ाना की ज़िन्दगी से गाली को ख़त्म कर दें। बच्चे घर, महल्ले और स्कूल से बहुत कुछ सीखते हैं। घर पर या टीवी सीरियलों, फ़िल्मों और दूसरे कामेडी प्रोग्रामों में इस्तेमाल होने वाले गन्दे अलफ़ाज़ बच्चों और नौजवानों पर बुरा असर डालते हैं। बहुत से कॉमेडियन सिर्फ़ लोगों को हंसाने के लिए बहुत आसानी से गालियों का इस्तेमाल करते हैं।

कुछ घरों में तो प्यार में या हंसाने के लिए भी बच्चों को गाली दे कर पुकारा जाता है। इन सारी बातों को नज़र में रखते हुए ये कहा जा सकता है कि इस बारे में वह माँ-बाप ज़्यादा कामयाब हैं जिन्हें ये मालूम है कि किस तरह बच्चों की परवरिश करना चाहिए। ●

माँ

बच्चे और परवरिश

■ आयतुल्लाह ख़ामेनई

घर और घराने के अंदर औरतों की ज़िम्मेदारियों में से एक ज़िम्मेदारी औलाद की परवरिश भी है। वह औरतें जो घर से बाहर अपने काम-काज या जॉब की वजह से माँ बनने में हिचकिचाती हैं, वह हक़ीक़त में अपने इन्सानी नेचर और ज़नाना मिज़ाज के ख़िलाफ़ क़दम उठाती हैं। ख़ुदावन्दे आलम उनके इस काम से बिल्कुल राज़ी नहीं होता है। वह औरतें जो अपने बच्चों, उनकी परवरिश, उनको दूध पिलाने और उनको अपनी मुहब्बत भरी आग़ोश में परवरिश करने जैसे कामों को उन कामों पर निसार कर देती हैं जो इन औरतों की ज़िम्मेदारी नहीं है, वह ग़लती करती हैं। औलाद की तरबियत और परवरिश का बेहतरीन तरीक़ा ये है कि बच्चा अपनी माँ की मुहब्बत और चाहत के साए में और उसकी ममता की आग़ोश में परवरिश पाए। जो औरतें अपनी औलाद को ख़ुदा के अता किए हुए इस तोहफ़े से महरूम कर देती हैं, वह बहुत बड़ी ग़लती कर रही हैं और इस तरह वह न सिर्फ़ ये कि अपनी औलाद को नुक़सान पहुँचा रही हैं बल्कि अपने और अपने समाज के लिए भी ख़तरनाक हैं। इस्लाम इस चीज़ की हरगिज़ इजाज़त नहीं देता है। औरतों की सबसे ख़ास ज़िम्मेदारियों में से एक ये भी है कि वह अपनी औलाद की पूरी लगन और तरबियत के उसूलों पर ध्यान देते हुए मुहब्बत और प्यार के साथ इस तरह अच्छी परवरिश करें कि ये बच्चा चाहे बेटा हो या बेटी, जब बड़ा हो तो रूहानी एतेबार से एक अच्छा इन्सान और ज़ेहनी उलझनों से पाक-साफ़ हो, ऐसी परवरिश पाए कि जिसमें आगे चल कर न ज़लील हो न बेइज़्ज़त, न ख़ुद बदनाम हो न दूसरों को बदनाम करे, न ख़ुद मुसीबतों को अपने गले का बार बनाये और न दूसरों के लिए मुसीबतें और मुश्किलें पैदा करे कि जिनमें आज सारी पश्चिमी दुनिया और यूरोपियन नौजवान नस्ल गले-गले तक डूबी हुई है। ●

नर्म जंग The SOFT WAR

■ शब्बीर अहमद मुल्ला

"नर्म जंग (Soft War) कल्चरल यलग़ार है बल्कि एक कल्चरल क़त्ले आम है।" (इमाम ख़ामेनई)

आम लोगों का फ़ैसला है कि जंग बंदूक़ों के बल पर लड़ी जाती है यानी जब दुश्मन लश्कर एक दूसरे के सामने आ जाएं और एक दूसरे पर तीरों, तलवारों या बंदूक़ों और मीज़ाइलों की बारिश करें, जब इन्सानी पैकर ख़ाक व ख़ून में डूब जाएं, इन्सानी बदनों के टुकड़े उछाले जाएं, दर्द और तकलीफ़ की रूह थरथर काँप जाए, वही जंग है। यक़ीनन यह जंग है लेकिन जंग की सिर्फ़ एक क़िस्म है। जंग की एक और क़िस्म भी है इन-विज़िबिल लेकिन विज़िबिल जंग से कहीं ज़्यादा ख़तरनाक।

आयतुल्लाह ख़ामेनई के मुताबिक़, "सख़्त जंग (आम जंग) के उलट सॉफ़्ट वॉर ज़ेहनी जंग है इसीलिए उसकी पहचान मुश्किल है। इसके मुक़ाबले में कन्वेंशनल जंग की ख़ुसूसियत यह है कि वह दिखाई देती है और उसके ख़िलाफ़ रि-एक्शन सामने आता है। सॉफ़्ट वॉर में खिलाड़ियों की पहचान, दुश्मन की बिसात और फैलाव का अंदाज़ा लगाना मुश्किल चीज़ है और बहुत कम लोग रि-एक्शन और मुख़ालिफ़त का इज़हार करते हैं। फ़ौजी यलग़ार में आप अपने मुख़ालिफ़ को पहचानते हैं, दुश्मन को देखते हैं लेकिन कल्चरल और सॉफ़्ट वॉर में आप अपने दुश्मन को रू-ब-रू नहीं देख सकते।"

नज़र न आने वाली जंग

कन्वेंशनल यानी आम जंग की ख़ुसूसियत यह है कि उसमें इन्सानी जिस्म को निशाना बनाया जाता है, घरों को ढाया जाता है, देहातों और शहरों को खंडरों में बदल दिया जाता है लेकिन सॉफ़्ट वॉर या कल्चरल जंग में इन्सानी रूह को निशाना बनाया जाता है, फ़ैमिली वैल्यूज़ को मलियामेट किया जाता है, सोशल इन्सानी रिश्तों का ख़ून किया जाता है और कल्चरल पहचान को मिटाया जाता है।

आम जंग में निशाना बनने वाले दर्द के मारे चीख़ते हैं लेकिन सॉफ़्ट वॉर में दर्द के बजाए मज़ा आता है।

आम जंग में इन्सानी ख़ून से होली खेली जाती है लेकिन कल्चरल जंग में ग़ैरत के सर को कुचला जाता है, बे-ग़ैरती का चोला पहना जाता है और इन्सानियत का लिबास तार-तार किया जाता है।

एक मिसाल के ज़रिए सझने की कोशिश करते हैं कि सॉफ़्ट वॉर किस तरह समाजी और इन्सानी वैल्यूज़ को खोखला कर देती है।

एक वह ज़माना था जब बेटी अपने बाप, चचा, मामूँ, बड़े भाई या दूसरे बुज़ुर्गों के सामने शर्म व हया का पैकर बन जाया करती थी। क्या मजाल कि आँखें उठाकर बात भी कर लेती। उसकी ख़ामोशी से उसकी अज़मत और बुलंदी का पता चलता था। बोलती तो हैबत छा जाती और ज़बान खोलती तो हर बोलने वाली ज़बान बंद हो जाती। लेकिन मार्डन कल्चर ने उसे कहाँ से कहाँ पहुँचा दिया। कल्चरल लुटेरों ने उसकी शराफ़त पर डाका डाला और उसकी सब से क़ीमती दौलत यानी शर्म व हया को ताराज कर दिया। अब शर्म व हया कहाँ? संगीनी और हैबत तो दूर की बात है। अब गुफ़्तगू का अंदाज़ भी बदल गया है। ग़ैर

मुनासिब हरकतों और भोंडी जुमले बाज़ी पर किसी की ग़ैरत को ठेस नहीं लगती। अब तो शर्म व हया के मज़ार पर डाँस करते फ़िल्मी बाज़ीगर हमारे अपने हैं और जो अपने थे वह बेगाने बन चुके हैं।

क़िस्सा-ए-दर्द यह है कि ड्रामों और फ़िल्मों के अदाकार फ़िल्मी दुनिया के पर्दे पर सूरमाओं का रोल अदा करते हैं और हम कभी तालियाँ बजाकर तो कभी आँसू बहाकर उनका साथ देते हैं हालांकि हक़ीक़ी दुनिया से उनका कोई रिश्ता नहीं लेकिन अब वह हमारी हक़ीक़ी ज़िंदगी में रोल-मॉडल बन चुके हैं। हम ने फ़िल्मी दुनिया को ही हक़ीक़ी दुनिया समझ लिया है। जिन्होंने हक़ीक़ी ज़िंदगी की राहों पर जवाँमर्दी और ईसार व फ़िदाकारी की मिसालें पेश कीं वह अब बैकग्राउंड में जा चुके हैं और उनकी जगह नक़ली दुनिया के सूरमा हमारे चहीते बन चुके हैं। हर घर में मौजूद टी.वी. सेट की एक छोटी सी करिश्माई दुनिया है वरना वीरानियों का क़िस्सा तो बहुत लम्बा है।

सॉफ़्ट वॉर की ख़ासियत

सॉफ़्ट वॉर का कमाल यही है वह इंसान को उसकी हक़ीक़ी ज़िंदगी से बेगाना बना देती है। असली किरदारों पर पर्दा डाल देती है और ज़िंदगी की हक़ीक़तों को नज़रों से ओझल कर देती है। उसके बदले में वर्चुअल और नक़ली ज़िंदगी को हक़ीक़त का रूप दे देती है। बनावटी सूरमाओं को संवारती है और मीडिया के ताक़तवर कंधों पर बिठाकर उन्हें रोल मॉडल बनाकर पेश करती है। बहुत कम लोग समझते हैं कि बाज़ार में गुलाब के नाम पर काग़ज़ के फूल बिक रहे हैं।

सुप्रीम लीडर इमाम ख़ामेनई की नज़र में सॉफ़्ट वॉर की ख़ुसूसियतें यह हैं।

1- इन-विज़िबिल

फ़ौजी यलग़ार में आप सामने वाले को पहचानते हैं और दुश्मन से आगाह हैं लेकिन कल्चरल यलग़ार, कल्चरल हमला और सॉफ़्ट वॉर में आप दुश्मन को आँखों से नहीं देख सकते।

2- धीरे-धीरे

सॉफ़्ट वॉर Step by Step लड़ी जाती हैं और रेंगते हुए और धीरे-धीरे आगे बढ़ती है। दूसरे अलफ़ाज़ में तहज़ीबी तबदीली, पहचान व ख़ुसूसियात और क़ौमी वैल्यूज़ की उठा-पटक में वक़्त लगता है।

3- चौ-तरफ़ा

आम जंग में क़ौम के किसी ख़ास तबक़े को निशाना बनाया जाता है ख़ास तौर पर फ़ौजी दस्तों को। सॉफ़्ट वॉर समाज के हर तबक़े पर असर डालती है। आम जंग में ज़मीनों और हुकूमतों पर यलग़ार होती है लेकिन सॉफ़्ट वॉर में अवाम और मुल्क के ख़ास-ख़ास लोग निशाना बनते हैं।

4- कल्चरल एंग्ल

अगरचे सॉफ़्ट वॉर में एक सिस्टम के तमाम सियासी, तहज़ीबी और समाजी, सभी पहलू निशाना बनते हैं लेकिन कल्चरल एंगल को ख़ास अहमियत हासिल है। कल्चरल पहचान की तबदीली से हुकूमती सिस्टम नाकारा हो जाता है और उसकी बरबादी शुरु हो जाती है। हक़ीक़त में सॉफ़्ट वॉर कल्चरल और साइकॉलोजिकल बुनियादों पर शुरु की जाती है।

5- गहराई

आम जंग कुछ ख़ास हिस्सों में समाज को कुछ वक़्त के लिए असर अंदाज़ करती है। जबकि सॉफ़्ट वॉर का असर ख़ास तौर पर कल्चर पर गहरा बल्कि बहुत गहरा होता है।

6- पेचीदगी

सॉफ़्ट वॉर पेचीदा, तह-दर-तह और मल्टी डाइमेंश्नल है। इस जंग में दुश्मन की पहचान, एहसास, जज़्बात, रूहानियत, मज़हब, ज़बान यहाँ तक कि जिस्मानी एंगल को भी निशाना बनाया जाता है।

सॉफ़्ट वॉर समाज के थिंक टैंक का नतीजा होती है जिसका अंदाज़ा लगाना बहुत मुश्किल होता है जबकि आम जंग विज़िबिल, महसूस और वाक़ई होती है और कुछ पैमानों के ज़रिए इस जंग की अंदाज़ा गीरी भी की जा सकती है।

7- फ़ितने

सॉफ़्ट वॉर दुश्मन को दोस्त बनाकर पेश करती है, हक़ीक़त पर बातिल का लेबल लगा देती है और बातिल को हक़ का लिबास पहना देती है। इसमें समाज के ऐसे प्वाइंट्स को निशाना बनाया जाता है जिनको समझना आम लोगों के बस से बाहर होता है।

इन्सानियत की ताराजी

शिकारी की कोशिश होती है कि शिकार हर

सूरत में उसके हाथ आ जाए। इसके लिए वह शिकार के अपने अंदाज़ में भी तबदीली लाता है। वह शिकार का हर तरह से बग़ौर जाएज़ा लेता है। उसकी ताक़त और कमज़ोरी पर नज़र रखता है। शिकारी की कोशिश यह होती है कि वह कम से कम ताक़त लगाकर ज़्यादा से ज़्यादा नतीजा हासिल करे यानी मिनिमम कोशिश और मैक्सिमम रिज़ल्ट।

आम जंग में शैतानी ताक़तों की तारीख़ हमारे सामने है। उन्होंने अब तक लाखों करोड़ों इन्सानों का ख़ून बहाया, सैंकड़ों शहरों और हज़ारों देहातों को खंडरों में बदल दिया। यह काम अब भी शिद्दत के साथ जारी है। इराक़, अफ़ग़ानिस्तान, पाकिस्तान, फ़िलस्तीन वग़ैरा इस कन्वेंशनल जंग की ज़िंदा मिसालें हैं। इन मुल्कों में इन्सानी ख़ून पानी की तरह बहाया जा रहा है। लेकिन सूट-बूट में मलबूस इन्सानियत के दुश्मनों की प्यास यहाँ भी नहीं बुझती और वह ह्युमन वैल्यूज़ को मिटाते चलते हैं।

वह इन्सानियत के माथे पर ज़लालत का कलंक और उसके दामन पर ज़िल्लत का धब्बा लगाना चाहते हैं क्योंकि वह शैतान के चेले हैं और ख़ुदा ने शैतान को इन्सानियत का दुश्मन बताया है। शैतानों का यह टोला भी इन्सानियत की मिट्टी पलीद करना चाहता है। उनकी नज़र में इस से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता कि एक इन्सान किस दीन या नज़रिए या स्कूल व मज़हब का मानने वाला है। यह इन्सान को उसी ज़िल्लत के दलदल में फेंकना चाहते हैं जिसके अंदर ख़ुदा ने शैतान को उसकी नाफ़रमानी की वजह से डाल दिया था। इन्सानियत के यह दुश्मन जहाँ एक तरफ़ इन्सानों के ख़ून से होली खेलने में एंज्वाए करते हैं तो दूसरी तरफ़ इन्सानियत का सर कुचलने के लिए भी मंसूबे बनाते रहते हैं। इस मक़सद के लिए उन्होंने सॉफ़्ट वॉर छेड़ दी है। जिसमें ह्युमन वैल्यूज़ को निशाना बनाया जाता है। मक़सद समाज से क़ौमी सेल्फ़-कांफ़िडेंस का ख़ात्मा है, लोगों की हिम्मत, हौसले और जज़्बे को पस्त करना है। इस हमले में कोशिश यह होती है कि एक सोचने-समझने वाली क़ौम को निकट्ठू क़ौम में बदल दिया जाए।

यह भी कोई इन्सान है?

सॉफ़्ट वॉर का निशाना वह वैल्यूज़ हैं जिनकी वजह से इन्सान, इन्सान है और जब यह वैल्यूज़ इन्सान से छिन जाएं तो वह हैवानियत का पैकर बन जाता है। जब एक समाज से इन्सानी वैल्यूज़ को छीन लिया जाए तो वह हैवानी समाज का नमूना बन जाता है। लेब्रलिज़्म इसी मक़सद के लिए पश्चिमी दुनिया का रोडमैप है। वह इन्सान को हर तरह के बंधन से आज़ाद कराना चाहते हैं ताकि इन्सान भी हैवानों की सफ़ में एक हैवान बन कर जिए। फिर एक ऐसा समाज बनता है जिसमें इन्सान शक्ल से तो इन्सान नज़र आते हैं लेकिन हक़ीक़त में कोई भेड़ है तो कोई गाए या फिर कोई और दरिंदा।

मिसाल के तौर पर जिस समाज में लोग एक-दूसरे से ला-ताल्लुक़ बन जाएं और समाजी बुराईयों पर आँखें बंद कर लें तो यह समाज "भेड़ समाज" कहलाएगा क्योंकि भेड़ वह जानवर है जो बिल्कुल सीधा-साधा है, भेड़ को किसी से क्या लेना-देना। न तो किसी को नुक़सान पहुंचाती है और न ही फ़ायदा। हाँ! लोग उस से फ़ायदा ज़रूर उठाते हैं लेकिन उस बेचारी का इसमें कोई हाथ नहीं होता। ज़ाहिर में दुनिया एक ग्लोबल विलेज की सूरत में एक भेड़ समाज में बदल चुकी है वरना आज दुनिया के कुछ मुल्कों के हाथों जिस बेदर्दी से इन्सानियत का ख़ून बहाया जा रहा है उस पर अरबों इन्सानों की ख़ामोशी को क्या नाम दिया जाएगा?

फिर समाज अगर और ज़िल्लत की तरफ़ बढ़े तो यह समाज भेड़िया समाज बन जाता है जहाँ चीर-फाड़ शुरु हो जाती है। इन्सानों की क़द्रो क़ीमत मिट जाती है। हर कोई अपने उल्लू की तलाश में निकलता है और उसी को सीधा करने के चक्करों में लगा रहता है। बस अपना उल्लू सीधा

हो, दूसरे जाएं भाड़ में।

सॉफ़्ट वॉर का मक़सद यही है कि इन्सानी समाजों से ह्युमन वैल्यूज़ को ख़त्म कर दिया जाए और उन्हें हैवानी समाजों या यूँ कहें कि हैवानी रेवड़ों में बदल दिया जाए।

इमाम ख़ामेनई की नज़र में सॉफ़्ट वॉर का मक़सद यह है।

1- नौजवान नस्ल को गुमराही और अख़लाक़ी बुराईयों में फंसाना।

2- बा ईमान नौजवान नस्ल से ईमान और एतेक़ाद की दौलत छीनना।

3- ग़ुलामी से छुटकारे और आज़ादी के लिए उठ खड़े होने से लोगों को नाउम्मीद करना।

4- लोगों की कल्चरल और एतेक़ादी वैल्यूज़ के बजाए यूरोपियन कल्चर को रिवाज देना।

5- इंक़ेलाबी मैदान में लोगों के जज़्बात को ठंडा करना।

6- दुश्मन के मुक़ाबले में कमज़ोरी का रिवाज।

7- मज़हब और रूहानियत का ख़ात्मा वग़ैरा

हम क्या करें?

पश्चिमी दुनिया के लिब्रल सिस्टम और उसकी कामयाबी में इस्लाम ही सबसे बड़ी रुकावट है। इस वक़्त दुश्मन सॉफ़्ट वॉर के बल पर इस्लामी वैल्यूज़ और मुस्लिम कल्चर को मिटाने पर लगा हुआ है। यह एक ऐसी जंग है जिसमें वैल्यूज़ और फ़िक्रें एक-दूसरे के आमने-सामने हैं। इस जंग में दुश्मन को समझने, उसके हथियारों की पहचान, उसकी स्ट्रेटिजी को जाँचने और उसकी हरकतों को मद्दे नज़र रखने की ज़रूरत है। हम यहाँ इस ह्युमिनिटी किलर यलग़ार का मुक़ाबला करने के लिए कुछ बातों को पेश कर रहे हैं जिनकी तरफ़ इमाम ख़ामेनई ने इशारा किया है।

1- दुश्मन की ताक़त की सही तस्वीर पेश करना

कभी-कभार दुश्मन की ताक़त को सही तौर पर न समझने की वजह से जंग में हार बर्दाश्त करना पड़ती है।

दुश्मन को उसकी वाक़ई ताक़त से कम नहीं समझना चाहिए क्योंकि शर्मिन्दगी उठानी पड़ेगी। इसी तरह दुश्मन को उसकी ताक़त से बढ़कर भी पेश नहीं करना चाहिए। आज-कल पश्चिमी मीडिया यही काम कर रहा है। उन्होंने अमेरिका और दूसरी ताक़तों को इस हद तक बढ़ा-चढ़ा कर पेश किया है कि हक़ीक़त से बेख़बर इन्सान समझेगा कि इन ताक़तों के एक इशारे से हर चीज़ धुआँ होकर ख़त्म हो जाएगी।

2- मुनासिब जंगी हथियारों का इस्तेमाल

कल्चरल जंग और तहज़ीबी यलग़ार का जवाब बंदूक़ से नहीं दिया जा सकता। यहाँ क़लम ही बंदूक़ है।

"मैं बार-बार ताकीद कर चुका हूँ कि हुनर, फ़न, स्किल और आर्ट को अहमियत दी जाए।

कोई भी आर्ट या हुनर एक सही फ़िक्र को फैलाने में सबसे असरदार ज़रिया है। एक मुसलमान की ज़िम्मेदारी है कि वह अपने पैग़ाम को पहुँचाने के लिए तबलीग़ के सबसे मार्डन सोर्सेज़ का इस्तेमाल करे।

3- जंगी पैमाने पर काम

जिहाद की कई क़िस्में हैं। जिहाद की एक मुश्किल तरीन क़िस्म यह है कि **कल्चरल यलग़ार और इन्हेराफ़ी व ग़लत कल्चर के ख़िलाफ़ वह इन्सान उठ खड़ा हो जो हक़ की मारेफ़त रखता है, हक़ का डिफेंस करे और अपनी बातचीत, लिट्रेचर और ज़बान से भाईचारे और अहिंसा के साथ दूसरों को सही रास्ता दिखाए। यह जिहाद सब से मुश्किल जिहाद है।**

4- दुश्मन के सामने हिम्मत न हारना

यह बात बहुत अहम है कि इन्सान दुश्मन के मुक़ाबले में हिम्मत न हारे। आज की शैतानी हुकूमतें जिनके हाथ में दुनिया की फ़ाइनेंशल और सियासी ताक़त भी है और दसियों मुल्कों की कल्चरल लगाम भी उनके हाथों में है उनकी कोशिश यह है कि जहाँ पर कोई मुक़ाबला नज़र आए उसको हौसला शिकनी के ज़रिए तोड़ा जाए।

बहरहाल इस सॉफ़्ट वॉर के ज़रिए मैदाने जंग का दायरा हमारे घरों, स्कूलों-कालेजों, गलियों और मैदानों तक फैल चुका है। इस जंग में समाज का हर इन्सान निशाने पर है। इसलिए समाज के हर इन्सान की ज़िम्मेदारी है कि इस हमले के ख़िलाफ़ मैदान में आ जाए वरना इस जंग में हारने वाला इतना बेहिस हो जाता है कि इस्लाम व ईमान और ह्युमन वैल्यूज़ तो दूर की बात है वह यह भी भूल जाता है कि उसे किसी इन्सान ने ही जन्म दिया है।

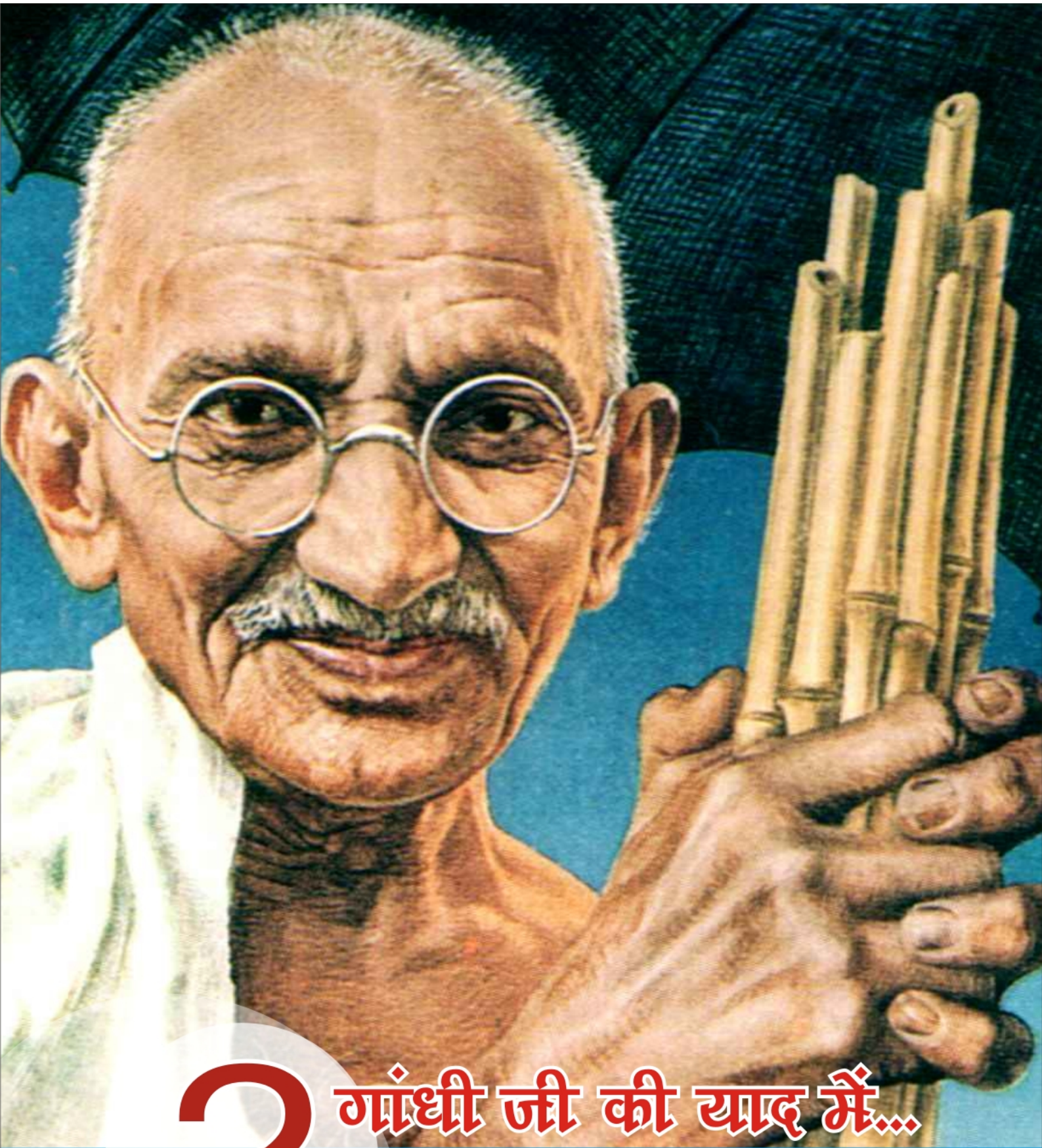

2 गांधी जी की याद में...
OCTOBER

SHAHADAT

Imam
MOHAMMAD BAQIR a.s.

7 Zilhijjah

इमाम बाक़िर अ० फ़रमाते हैं:

मैं तुम्हें 5 चीज़ों की वसिय्यत करता हूं:
1–अगर तुम पर जुल्म किया जाए तो तुम जुल्म न करो।
2–अगर तुम्हारे साथ ख़यानत की जाए तो तुम ख़यानत न करो।
3–अगर तुम्हें झुठलाया जाए तो गुस्सा न करो।
4–अगर तुम्हारी तारीफ़ की जाए तो ख़ुश न हो।
5–अगर तुम्हारी बुराई की जाए तो परेशान न हो।

RNI No: UPHIN/2012/43577

عيد الأضحى المبارك

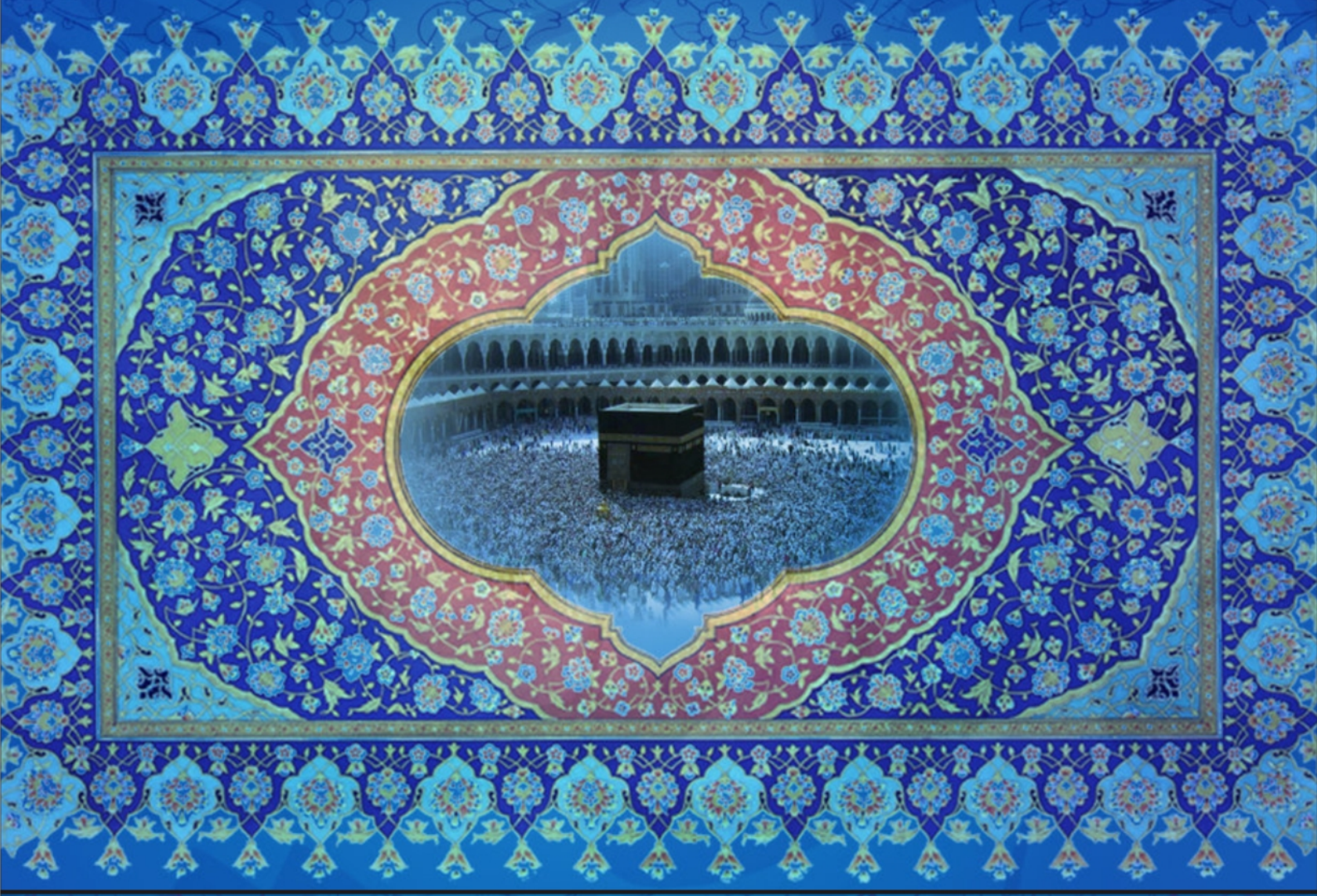

GULSHAN

MEHANDI & HERBALS

IRFAN ALI PRADHAN
403 & 404, A Block
REGALIA HEIGHTS
Ahmadabad Palace Road
KOHE-FIZA
BHOPAL (M.P.) 462001, INDIA.
+919893030792, +917554220261

MOHTARMA "GULSHAN"
G-1, Krishna Apartment
Plot No. 2, Firdaus Nagar
Bairasia Road,
BHOPAL
+91-755-2739111